मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा की जीवनी

हिंदी अनुवाद

आचार्य आई.एन. चंद्रशेखर रेड्डी

पूर्व आचार्य, हिंदी विभाग

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति - आं.प्र

तेलुगु मूल

आचार्य के.जे. कृष्णमूर्ति

तरिगोंड वेंगमांबा वाङ्मय प्राजेक्ट, ति.ति.दे. तिरुपति

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्

तिरुपति

2024

MATRUSRI TARIGONDA VENGAMAMBA KI JEEVANI

Hindi Translation
Prof. I.N. Chandrasekar Reddy

Telugu Original
Prof. K.J. Krishna Murthy

Editor
Dr. Akella Vibhishana Sarma
Special Officer
Publications Division

T.T.D. Religious Publications Series No.1480
© All Rights Reserved

First Edition :
Copies : 500

Published by
Sri J. Syamala Rao, I.A.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati - 517 507.

DTP
Publications Division,
T.T.D, Tirupati.

Printed at
Tirumala Tirupati Devasthanams Press,
Tirupati - 517 507.

प्रस्तावना

**''वेंकटाद्रि समं स्थानं ब्रह्मांडे नास्ति किंचन।
वेंकटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।''**

इसका अर्थ है - वेंकटाद्रि के समान क्षेत्र इस ब्रह्मांड में नहीं है। वेंकटेश्वर जी की बराबरी कर सकनेवाले भगवान भी आज तक कहीं नहीं हुए हैं, और आगे भी नहीं होंगे।

भगवान बालाजी के भक्तों में ऐसे भक्त हैं, जिन्होंने अपने जीवन में असाधारण भक्ति और समर्पण का परिचय दिया है। ऐसे अनन्य भक्तों में तरिगोंड वेंगमांबा का नाम पहली पंक्ति में लिया जाता है। 18वीं शताब्दी की महान भक्त, कवयित्री और संत वेंगमांबा ने अपना पूरा जीवन, भगवान बालाजी की भक्ति में समर्पित कर दिया। वे नियमित रूप से तिरुमल में भगवान की सेवा में रत रहीं। उनकी भक्ति इतनी सच्ची और प्रबल थी कि उन्हें 'संत कवयित्री' के रूप में सम्मानित किया जाता है।

आचार्य के.जे. कृष्णमूर्ति ने मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा की रचनाओं को मूल आधार बनाकर तरिगोंड वेंगमांबा वाङ्मय प्राजेक्ट, ति.ति.दे. तिरुपति के तहत जिस कृति की रचना की उसका हिन्दी अनुवाद **'मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा की जीवनी'** आचार्य आई.एन. चंद्रशेखर रेड्डी द्वारा किया गया। इस रचना में मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा के जीवन को प्रस्तुत किया गया है।

उनकी रचनाएँ भगवान वेंकटेश्वर की भक्ति से ओत-प्रोत हैं एवं आज भी तिरुपति के भक्तों के बीच लोकप्रिय हैं। उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ 'श्री वेङ्कटाचलमाहात्म्यम्', 'पारिजातापहरणम्', 'योगतत्त्वसारम्' आदि हैं। वेंगमांबा की भक्ति का सबसे सुंदर और सशक्त रूप उनके साहित्य में दिखाई देता है। उन्होंने न केवल भगवान की सेवा की,

बल्कि समाज सेवा को भी प्रमुखता दी। उनके द्वारा की गई अन्नसंतर्पण आज भी स्मरणीय है, जहाँ हर दिन हजारों भक्तों को निःशुल्क भोजन कराया जाता है। यह सेवा उनकी करुणा और समाज के प्रति प्रेम का प्रतीक है। वेंगमांबा ने भक्ति के साथ-साथ योग और ध्यान को भी अपने जीवन का हिस्सा बनाया। उन्होंने ध्यानमग्न होकर भगवान वेंकटेश्वर की आराधना की। उनका मानना था कि योग और ध्यान के माध्यम से व्यक्ति अपनी आत्मा को शुद्ध कर सकता है और भगवान के साथ एकाकार हो सकता है।

इस पुस्तक को पढ़ने के बाद हमें उनके जीवन से यह शिक्षा मिलती है कि निष्ठा, समर्पण और सच्चाई से किया गया कार्य कभी व्यर्थ नहीं जाता और भगवान की भक्ति में डूबा व्यक्ति समाज में एक महान परिवर्तन का वाहक बन सकता है।

इस पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद करने के लिए आचार्य आई.एन. चंद्रशेखर रेड्डी को हृदय पूर्वक धन्यवाद।

इस रचना को पर्यवेक्षण और अनुवाद के लिए चुनने के लिए विशेष अधिकारी डॉ. आकेळ्ल विभीषण शर्मा, प्रकाशन विभाग, तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति को अभिनंदन।

सदा श्रीहरि की श्रीचरण सेवा में,

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्,
तिरुपति

भूमिका

श्री वेंकटेश्वर की आंतरंगिक भक्तिन शिरोमणी मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा है। इस महा कवयित्री के द्वारा सृजित पवित्र पूरे वाङ्मय को प्रकाशित करने की इच्छा से तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने सन् 2006 के अगस्त महीने में इस कवयित्री के नाम पर एक वाङ्मय प्राजेक्ट का शुभारंभ किया है।

उस दिन से इस प्राजेक्ट की ओर से आयोजित होनेवाली साहित्यिक संगोष्ठियाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, लगभग पच्चीस से भी अधिक ग्रंथों का प्रकाशन, बारह ऑडियो कैसेट्स का निर्माण आदि विविध कार्यों के कारण इस सहज कवयित्री के द्वारा सृजित साहित्य का वैशिष्ट्य विश्व भर में प्रकाश और प्रचार में आया है।

तदनुसार तदुपरांत वेंगमांबा की जीवनी को लेकर तेलुगु में एक पद्य काव्य, दो एक गद्य रचनाएँ, दो उपन्यास, एक नाटक, श्री वेंकटेश्वर भक्ति चॉनेल के द्वारा धारावाहिक, एक फिल्म, हरिकथाएँ, बुर्रा कथाएँ आदि प्रकाश में आयी हैं। भविष्य में कुछ और प्रकाशित होने की संभावना है।

किंतु अब तक इस महायोगिनी की जीवनी को लेकर लिखी गयी रचनाओं में अधिकांश काल्पनिक हैं। इसीलिए प्रस्तुत रूप में यथार्थ के धरातल पर इस प्रयास की आवश्यकता हुई है।

यह वेंगमांबा की रचनाओं को (अंतःसाक्ष्य) ही मूल आधार के रूप में लेकर लिखी गयी रचना है। पिछली सदी में लिखी गयी वेंगमांबा की जीवनियों में - श्री रंग प्रकाश दास, श्रीमान विक्राल

रामचंद्राचार्य, डॉ. पी. टी. जगन्नाथ राव आदि की रचनाओं को भी इस संदर्भ में अध्ययन किया गया है। उन पूर्व रचनाओं में आगे पीछे आनेवाले छोटे-छोटे प्रसंगों का तथा घटनाओं को इसमें क्रम से स्वीकारा गया है।

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए सहृदय से अनुमोदन करके अनुमति देनेवाले श्रीनिवास स्वामी के प्रतिनिधियों, सहृदय नामधारी तिरुमल तिरुपति देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री आई.वै.आर. कृष्णा राव महोदय को बहुत धन्यवाद देता हूँ।

जिज्ञासु पाठकगण इस पुण्य गाथा का पठन करने से अच्छी स्फूर्ति को प्राप्त करेंगे, उस प्रेरणा से श्री वेंकटाचल महात्म्यम काव्य, विष्णुपारिजात आदि यक्षगान, रमापरिणय, वशिष्ट रामायण आदि द्विपद काव्य, श्री वेंकटेश्वर कृष्ण मंजरी स्तोत्र काव्य आदि कृतियों को आसक्ति से तथा अभिनिवेश के साथ पढ़कर अति प्रसन्न होकर श्रीनिवास स्वामी की कृपा के भाजक बनेंगे, ऐसी मेरी आकांक्षा है।

के.जे. कृष्णमूर्ति

मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा की गुरु परंपरा[1]

श्लोक।। सदाशिव समारंभाम् शंकराचार्य मध्यमाम्।
अस्मदाचार्य पर्यांताम् वंदे गुरुपरंपराम्।।

श्री श्री श्री सोमेश्वर स्वामी (श्री श्री श्री योग भोग सोमेश्वर स्वामी जी)

श्री श्री श्री विद्यारण्य गुरु जी
श्री श्री श्री ब्रह्मेंद्र जी
श्री श्री श्री स्वयं प्रकाश जी
श्री श्री श्री सच्चिदानंद गुरु जी
श्री श्री श्री मल्लिकार्जुन गुरु जी
श्री श्री श्री अवधूत देशिकोत्तम जी
श्री श्री श्री परमहंसाख्य गुरु जी
श्री श्री श्री बडबानल गुरु जी
श्री श्री श्री सुज्ञान योगानंद गुरु जी
श्री श्री श्री जितेंद्रीय गुरु जी
श्री श्री श्री दिगंबर गुरु जी
श्री श्री श्री परकाय प्रवेश गुरु जी
श्री श्री श्री नित्यानंद गुरुराज चंद्र जी
श्री श्री श्री निरंजन गुरु जी
श्री श्री श्री बोधानंद घन गुरु जी
श्री श्री श्री सुब्रह्मण्य गुरु जी

---

[1]यह गुरु परंपरा कवयित्री के द्वारा रचित ''राज योगामृत सार'' नामक काव्य की भूमिका से संग्रहीत है।

ओम नमो नारसिंहाय नमः

यंत्रराजाय विद्महे महायंत्राय

धीमहि तन्नो मंत्रः प्रचोदयात्

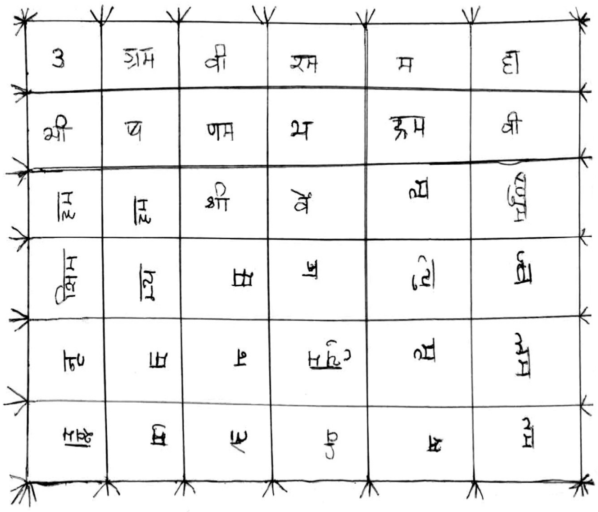

धीमहि तन्नो यंत्रः प्रचोदयात्

यंत्रराजाय विद्महे महायंत्राय

नोट : उपर्युक्त नृसिंह यंत्र, मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा के पूजा-मंदिर में प्राप्त तांबे के टीन पर अंकित यंत्र की ज्यों-का-त्यों प्रति है, भक्तों को यह समझना चाहिए।

यह यंत्र पीतल से मिश्रित मोटे तांबे के टीन पर अंकित है।

विषय सूची

विषय		पृष्ठ संख्या
प्रस्तावना	.....	v
भूमिका	.....	vii
गुरुपरंपरा	.....	ix
श्री लक्ष्मीनरसिंह यंत्र	.....	x
तरिगोंड	.....	01
सालग्राम (स्वयंभु शिला)	.....	02
मंदिर का निर्माण	.....	04
सत्य शपथ लेना	.....	05
कुछ और विशेषताएँ	.....	06
मूल पुरुष अहोबल मंत्री	.....	08
वेंगमांबा का जन्म	.....	09
बचपन	.....	10
विवाह	.....	11
गुरुजी का उपदेश	.....	14
सरस्वती से साक्षात्कार हुआ	.....	17
ग्रंथ रचना का शुभारंभ करना	.....	19
तरिगोंड नृसिंह शतक	.....	20
नाई भाग निकला	.....	22
पुष्पगिरि शंकराचार्य का पीठ	.....	23
स्वामी जी से वार्तालाप	.....	24
पीठ परशुराम प्रीति का हो गया	.....	28
नृसिंह विलास कथा	.....	28
राच राय के मेले	.....	29

शिवनाटक	.....	29
राज योगामृत सार	.....	30
बाल कृष्ण नाटक	.....	30
तरिगोंड के मंदिर में तप करना	.....	33
तिरुमल की यात्रा	.....	34
अलिमेलु मंगा की अनुमति	.....	37
महंत का आदर	.....	39
विष्णु पारिजात की रचना	.....	41
ताल्लपाक वंशजों का आह्वान	.....	42
रमा परिणय (स्वामी जी के विवाह का गीत)	.....	43
पांडव तीर्थ	.....	43
अक्कराम वेंकट्राम दीक्षितुलु	.....	45
तुंबुर घाटी में तप करना	.....	47
चेंचु नाटक	.....	50
कोढी रोगी चंद्रशेखर (पुष्करिणीज)	.....	52
पुनः तिरुमल पर लौटना	.....	53
श्री वेंकटेश्वर कृष्ण मंजरी	.....	54
श्री वेंगमांबा के वृंदावन और मठ	.....	55
अष्ट लेखक	.....	57
अम्मोरम्मा का कुआँ	.....	58
रुक्मिणी नाटक	.....	60
गोपिका नाटक (गोल्ल कलापमु)	.....	60
श्री भागवत (द्विपद काव्य)	.....	61

रथ रुक गया	.....	62
मुत्याल हारती (मोतियों की हारती)	.....	64
श्री वेंकटाचल महात्म्यमु (पद्य काव्य)	.....	66
इसके दो मुख्य कारण	.....	67
दुपट्टा हाथ लगा	.....	67
अष्टांग योग सार	.....	70
वेंगमांबा के दान पत्र	.....	72
जलक्रीडा विलास	.....	74
मुक्ति कांत विलास	.....	75
वासिष्ठ रामायणमु	.....	76
तत्व कीर्तन	.....	77
महा समाधि	.....	79
मूर्तिभव व्यक्तित्व	.....	80
अन्नमय्या और तरिगोंड वेंगमांबा	.....	82
मीराबाई और तरिगोंड वेंगमांबा	.....	86
वेंगमांबा और मलयाल स्वामी	.....	87

परिशिष्ट :

1. मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा की रचनाएँ	.....	91
2. नवरत्न कीर्तन	.....	92
3. पद्य सप्तक	.....	109

* * *

मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा की जीवनी

तरिगोंड

श्री वेंकटेश्वर स्वामी की उपस्थिति से विराजमान तिरुमल पुण्य क्षेत्र के परिसर में बहुत प्राचीन काल से अनेक पुण्य क्षेत्र एवं दिव्य प्रदेश मौजूद हैं। उन पवित्र प्रदेशों में कई महानुभाव, महात्माओं, अवधूत, तपस्संपन्न मुनि, योगी आदि अवतरित हुए हैं। उस प्रकार के दिव्य प्रदेशों में एक 'तरिगोंड' है।

यह चित्तूर जिला, आंध्र प्रदेश के प्राचीन गाँवों में एक है। नाम में ही भगवान है, कहावत के अनुसार 'तरिगोंड' नाम में ही एक विशेषता है। ''तरिकुंड'' अर्थात् दही मथनेवाली मटकी। लक्ष्मी नरसिंह स्वामी यहाँ बहुत प्राचीन काल में दही मथनेवाली मटकी में सालग्राम स्वयंभू के रूप में आविर्भूत हुए थे। इसलिए इस प्रदेश में बसे गाँव का नाम 'तरिकुंड' पड़ा है। यह तरिकुंड शब्द गाँव के लोगों के प्रयोग में तरिगोंड के रूप में विकसित हुआ है। तरिगोंड गाँव तिरुपति क्षेत्र से वायव्य दिशा में 108 कि.मी. दूरी पर वायलपाड के समीप बसा हुआ है।

आज जहाँ तरिगोंड गाँव है, वहाँ लगभग सात सौ वर्षों के पूर्व एक घना जंगल था। उस घने जंगल के बीच में एक फैली हुई चट्टान थी। उस चट्टान को आस पड़ोस के गाँववासी 'प्रतिमिट्ट' नाम से पुकारा करते थे। प्रतिमिट्ट प्रदेश में 'पालनूति मडुगु' (एक पोखर) नामक एक बड़ा तालाब भी था।

उस समय बल्लारी प्रदेश के रायदुर्ग पर अच्युत गोत्रोद्भव रामानायुडु नामक पालीगर शासन करता था। बल्लारी प्रदेश में भयानक सूखा पड़ने पर वह पालीगर अपने सहचरों के साथ सपरिवार, आप्त जन और पशु-गायों को साथ लेकर प्रवास के लिए चल पड़े। उस रूप में निकलनेवाले वे हरे-भरे प्रदेशों की तलाश करते गए। उस प्रकार यात्रा करते वे 'प्रतिमिट्ट' घने जंगल के प्रदेश में पहुँच गए।

हरे-भरे घास के खेत, छायादार बड़े-बड़े वृक्ष, छोटे-बड़े अनेक तालाब आदि के साथ नेत्र पर्व करनेवाला वह प्रदेश उनके बसने के लिए बहुत अनुकूल प्रदेश लगा। इसलिए उन प्रवासी लोगों ने वहाँ पेड़ों के नीचे कुटीर बनाकर बसना शुरु किया।

एक दिन भोर-सबेरे रामानायुडु की धर्मपत्नी नरसमांबा ने एक चौड़े मटके पर हल्दी कुंकुम लगाकर अलंकृत करके, उसकी पूजा करके, उसमें दही भरकर, एक तमाल पेड़ के नीचे मथनी से उसे मथना शुरु किया। तुरंत मटके में मथनी के नीचे कोई पत्थर जैसी चीज अटक कर आवाज़ करने लगी। नरसमांबा ने मटकी में हाथ डालकर उसे बाहर निकालने की कोशिश की। किंतु हाथ में कुछ नहीं आया। इस रूप में दो-तीन बार हुआ। तब उस धुंध में उसे बहुत भय और आश्चर्य भी हुआ। तुरंत उसने अपने पति को बुलाकर इसके बारे में बताया।

सालग्राम (स्वयंभू शिला)

रामानायुडु ने बहुत संयम के साथ मटकी में हाथ डालकर तलाश की। गोल पत्थर के आकार में एक काला और मोटा बहुत

मुलायम एक सालग्राम उनके हाथ लगा। वह गोल पत्थर अन्य गोल पत्थरों से अलग अत्यंत मुलायम और चमक के साथ चमकने लगा था। रामानायुडु ने उस गोल पत्थर को साफ करके एक ऊंची जगह पर पवित्र रूप से रखा।

इस विचित्र वाले गोल पत्थर की खबर अगले ही क्षण में पूरे गाँव में फैल गयी। बाल-बच्चे, बूढ़े सभी वहाँ इकट्ठा होकर बहुत कुतूहल और आश्चर्य के साथ उस शिलामूर्ति के दर्शन करने लगे। उस समय वहाँ इकट्ठे हुए सारे लोगों को सुनाई पड़ने की तरह ऊँची आवाज़ में एक अशरीर वाणी सुनाई पड़ी।

''यह मेरा क्षेत्र है। इसका अधिपति मैं हूँ। आप सबकी रक्षा के लिए इस रूप में यहाँ प्रकट हुआ हूँ। आप सब यहीं पर बस जाइए। पूरी श्रद्धा-भक्ति के साथ मेरी आराधना करते रहिए। आपके सभी कष्ट शीघ्र ही दूर हो जाएँगे।''

इन दिव्य वाक्यों को सुनकर सभी भक्ति और प्रपत्ति के साथ उस विचित्र शिलामूर्ति के बार-बार दर्शन करते हुए अनेक प्रकार से प्रार्थना करने लगे।

वहाँ इकट्ठा हुए लोगों में से एक ने कहा - 'संप्रदाय को माननेवाला, निष्ठा-गरिष्ठ एक व्यक्ति ने - इस दिव्य शिला पर मौजूद छोटे-छोटे बिंदुओं और सहज रेखाओं को सूक्ष्म दृष्टि से अनुशीलन किया। बाद में उन सबके कर्तव्य के बारे में इस रूप में कहा -

''हे आर्य! यह गोल पत्थर सामान्य नहीं है। यह लक्ष्मी नरसिंह स्वामी का सालग्राम है। व्यावहारिक भाषा में इसे 'पुट्ट शिला' (जनन

शिला) कहते हैं। इस सालग्राम नरसिंह स्वामी की जितनी भक्ति-श्रद्धा के साथ आराधना करेंगे उतने ही शुभ परिणाम हमें प्राप्त होंगे!''

तदुपरांत उस सालग्राम नरसिंह मूर्ति की उस दिन भर पूजाएँ, आराधनाएँ, भजन-कीर्तन आदि अत्यंत उत्साह के साथ करते रहे। अर्चनाएँ, निवेदन आदि के पूरे होने के बाद स्वामी के प्रकट होनेवाले उस मटके के दही को बाकी प्रसादों के साथ अपूर्व तीर्थ-प्रसाद समझकर वहाँ इकट्ठे हुए बाल-बच्चे और बड़ों में बाँट दिया गया। उस दिन से तरिगोंड लक्ष्मी नरसिंह स्वामी को मथे हुए गाढ़ी मलाईवाले दही को विशेष रूप से निवेदन करने की परंपरा उस पुण्य क्षेत्र में पड़ी। साथ ही वहाँ बसनेवाले परिवारों में भी यह एक संप्रदाय के रूप में बन गया।

उस दिन रात को रामानायुडु के सपने में लक्ष्मी नरसिंह स्वामी ने साक्षात्कार देकर इस रूप में आदेश दिया -

''इस प्रदेश में प्राचीन काल में दुर्वास महर्षि ने मेरी आराधना की थी। इसलिए आप सब मिलकर यहाँ पर एक मंदिर का निर्माण करो। कुलदेव के रूप में मेरी आराधना करते रहो। मंदिर निर्माण के लिए आवश्यक धन यहाँ से निकट मारेल्ल बावि में प्राप्त होगा।''

मंदिर का निर्माण

एक सुमुहूर्त में रामानायुडु मारेल्ल बावि गए। विधि के अनुसार पूजादि कार्यक्रम पूरा करके बलि चढ़ायी। वहाँ पर स्थित गुप्त निधि का संग्रहण किया। दुर्वासा महामुनि के द्वारा तप किए हुए प्रदेश में उस प्रत्तिमिट्टा में एक प्राचीन मंदिर था। वहीं रामानायुडु ने नए मंदिर का निर्माण करवाया।

गर्भालय, अंतरालय, मुख मंटप, माई जी का मंदिर, ध्वज स्तंभ, दुर्वास महर्षि के द्वारा स्थापित 'सत्य धर्म यंत्र' के ऊपर ही बलिपीठ, पार्श्व मंटप, प्राकार, महाद्वार, गालि गोपुर आदि सारे भाग वास्तु शास्त्र के अनुसार अत्यंत मनोहर ढंग से निर्मित हुए। मंदिर के निकट ही एक पुष्करिणी का पुनर्निर्माण भी हुआ।

श्री लक्ष्मी समेत नारसिंह स्वामी की अर्चामूर्ति, सालग्राम नृसिंह देव को गर्भालय में, अभयहस्त आंजनेय स्वामी जी को, चेंचु लक्ष्मी माई को और अन्य परिवार के देवी-देवताओं को आगम पंडितों के द्वारा निर्देशित प्रदेशों में वेद मंत्रों के साथ, मंगल वाद्यों के साथ मनोहर ध्वनियाँ आकाश को छूते, पांचरात्र आगमानुसार प्रजा के आनंदोत्साहों के बीच में अत्यंत वैभवपूर्ण ढंग से प्रतिस्थापित हुए। उस दिन से तरिगोंड आंध्रावनी में स्थित नृसिंह क्षेत्रों में अत्यंत प्रमुख क्षेत्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

सत्य शपथ लेना

आरंभ से ही तरिगोंड लक्ष्मी नरसिंह स्वामी का मंदिर सत्य प्रमाण करने के लिए प्रमुख क्षेत्र के रूप में प्रचलित हुआ। शपथ लेनेवाला व्यक्ति शिरो-स्नान करके, गीले वस्त्रों के साथ, मंगल वाद्यों के साथ तीन बार मंदिर की परिक्रमा करता है। तदुपरांत अर्चक स्वामी के निरीक्षण में बलिपीठ के पास मूल विराट के अभिमुख खड़ा हो जाता है। बलिपीठ पर कपूर जलाकर दोनों हाथों से बलिपीठ को पकड़कर अर्चक स्वामी के रटने के अनुसार शपथ लेता है। शपथ लेनेवाले वाक्य निम्न रूप में होते हैं -

''लक्ष्मी नरसिंह स्वामी को साक्ष्य बनाकर मुझे या मेरे परिवार के अन्य लोगों को इस अपराध से कोई संबंध नहीं है। हमने कभी यह अपराध नहीं किया। किसने किया, हमें मालूम नहीं है।''

उपर्युक्त तरीके से कसम खानेवाला व्यक्ति, उसके पूरा होते ही तब तक बलिपीठ पर जलनेवाले कपूर की ज्वाला को अपने हाथों से बुझा देता है। यदि उसकी कसम सही है तो उसे किसी भी प्रकार की हानि नहीं होती है। अगर वह झूठी है तो उस कसम खानेवाले व्यक्ति के साथ-साथ उसके परिवार व वंश को भी नुकसान उठाना पड़ता है। अर्थात उसके वंश-वारिस को नष्ट पहुँचता है। उनका सर्वनाश हो जाता है। यह विश्वास कई पीढ़ियों से इस पुण्य क्षेत्र से निकटवर्ती सारे प्रदेशों की पूरी जनता में दृढ विश्वास के रूप में देखा जाता है।

इस विश्वास के कारण ही अदालतों में झूठ बोलने के लिए तैयार होनेवाले भी इस महिमावान उस स्वामी के सामने झूठ बोलने का साहस नहीं करते हैं, बल्कि डरते हैं। यहाँ प्रस्तुत होनेवाले सत्य-प्रमाण मदनपल्लि जैसे शहरों में स्थित अदालतें, गाँव की पंचायतें, बुजुर्गों के संघ के द्वारा भी अनुमोदित होते देखा जा सकता है। यह शपथ प्रमाण करने के संदर्भ या संप्रदाय आज भी इस मंदिर में होना एक बड़ी विशेषता है।

कुछ और विशेषताएँ

इस पुण्य क्षेत्र से संबंधित कुछ और परंपराओं एवं संप्रदायों का उल्लेख करना इस संदर्भ में उचित है।

1. यह एक वीर नृसिंह क्षेत्र होने के नाते इस गाँव में भक्त प्रह्लाद नाटक नहीं खेला जाता है। इसके बारे में जानकारी न रखनेवाले एक

नाटक समाज ने सन् 1932 के आसापस इस गाँव में पधार कर एक नाटक प्रदर्शन देने की कोशिश की। उस प्रदर्शन के दौरान हिरण्यकश्यप के संहार के प्रसंग में नृसिंह वेशधारी पात्र को असीम आवेश आ गया। उसके चेहरे पर उग्रता नाचने लगी। उसके जांघों पर लेटनेवाले हिरण्यकश्यप वेशधारी पात्र ने इसको पहचान लिया। उस वीरावेश में वह अवश्य मुझे चीर-फाड़ेगा, इस प्रकार वह डर गया। तुरंत उसके जाँघों के ऊपर से उठकर मंच से खूद कर भाग निकला। उग्रता से झूमनेवाला नृसिंह वेशधारी उसका पीछा करने लगा।

स्थिति को भांप कर दर्शकों ने दौड़ कर नारियल, कपूर, गुग्गुल आदि पूजा द्रव्यों से पूजा करके उसे शांत किया। उसके साथ ही वह नाटक प्रदर्शन बंद हो गया था। तब से इस गाँव में भक्त प्रह्लाद नाटक का प्रदर्शन करना रोक दिया गया था।

2. तरिगोंड गाँव में प्रत्येक वर्ष फाल्गुन मास में श्रीदेवी और भूदेवी समेत नरसिंह देव के वार्षिक ब्रह्मोत्सव अत्यंत वैभव के साथ आयोजित किए जाते हैं। किंतु उन ब्रह्मोत्सवों में 'मोहिनी उत्सव' नहीं होता है। नरसिंह की उत्सव मूर्ति को ही 'मोहिनी अवतार' के रूप में अलंकृत करके शोभा यात्रा आदि नहीं करते हैं। स्वामी वीर नरसिंह होने के कारण इस क्षेत्र में मोहिनी अवतार के उत्सव के लिए कोई स्थान नहीं है।

3. आंध्र के सुप्रसिद्ध नरसिंह क्षेत्रों में प्रत्येक में एक-एक विशिष्ट वस्तु स्वामी के लिए प्रिय वस्तु के रूप में मान लिया गया है। यह रूढ़ी ही बन गयी है। उस रूप में सिंहाचल में चंदन कवच, मंगलगिरि में गुड का पानी (तेलुगु में पानकमु) आदि अधिक प्रचलित

हैं। ये पदार्थ स्वामी को विशेष रूप से समर्पित किए जाते हैं। उसी प्रकार तरिगोंड में स्थित नरसिंह स्वामी को मथे हुए गाढ़े मलाईवाले दही को समर्पित करना विशेष माना जाता है।

4. तरिगोंड लक्ष्मी नरसिंह स्वामी का मंदिर कई पीढ़ियों से विवाहादि शुभ कार्य संपन्न करने के लिए अत्यंत शुभ एवं सफल माना जाता है। निकटवर्ती गाँवों में ऐसा विश्वास फैला हुआ है। इस रूप में यह तरिगोंड लक्ष्मी नरसिंह का मंदिर प्रसिद्ध है।

मूल पुरुष अहोबल मंत्री

लक्ष्मी नरसिंह स्वामी के आदेश के अनुसार मंदिर का निर्माण करनेवाले रामानायुडु धीरे-धीरे उस गाँव का शासक बना। भगवान के आशीर्वाद से उसका शासन चिट्टेचेर्ला तक फैलता गया। इसलिए जनता उसे 'तरिगोंड रामानायुडु' 'चिट्टेचेर्ला रामानायुडु' कह कर पुकारने लगी।

रामानायुडु के काल में ही आज के आंध्र प्रदेश राज्य के कर्नूल जिले के कोवेलकुंट्ला के पासवाला गाँव कानाल गाँव के अहोबल मंत्री नामक एक व्यक्ति को तरिगोंड जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अहोबल क्षेत्र पर यात्रा के लिए आए लोगों से उसने तरिगोंड क्षेत्र के बारे में सुन रखा था। प्रत्तिमिट्टा में नए ढंग से उद्भूत नृसिंहदेव के बारे में भी सुना था। नरसिंह स्वामी का भक्त होने के कारण वह अहोबल मंत्री तरिगोंड के नरसिंह स्वामी के दर्शन करने वहाँ गया था।

पालीगर रामानायुडु ने नरसिंह के उपासक अहोबल मंत्री की योग्यता एवं विशेषताओं को पहचाना। तरिगोंड में ही वास करने के

लिए उससे प्रार्थना की। उसने समुचित रूप में वास का प्रबंधन करके उसका समादर भी किया। रामानायुडु की विनति को स्वीकार करके अहोबल प्रधान तरिगोंड का निवासी बना। इससे बढ़कर रामानायुडु का आप्त व्यक्ति भी बना। आंतरंगिक आदमी भी बना। उस समय से लेकर उस अहोबल मंत्री के वंशजों का उपनाम 'कानाल' बन गया।

परम योगिनी, आध्यात्मिक कवयित्री मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा सन् 18वीं सदी के प्रथम भाग में उपर्युक्त 'कानाल' वंश में पैदा हुई थी। प्रसिद्ध नरसिंहोपासिका के रूप में नामधारी बननेवाली वेंगमांबा की तरह, उस वंश के मूल पुरुष भी नृसिंहस्वामी के आराधक के रूप में प्रचलित होना यहाँ मुख्य विषय है।

वेंगमांबा का जन्म

कानाल अहोबल मंत्री नंदवर शाखीय का है। रुग्वेदी और अश्वलायन सूत्रक है। वसिष्ठ गोत्र का है। राजकार्य निपुण एवं पंडित है। उसके वंशज 18वीं सदी के आरंभ में तरिगोंड गाँव में रहनेवाला एक गृहस्थ कानाल कृष्णायामात्य, जो अत्यंत शिष्टमानस व्यक्ति था, उन्हीं का वंशज है। दुश्शील वर्जित हृदयवाला है। सललित हृदय, सतब्रह्मवेत्ता है। उसकी धर्मपत्नी मंगमांबा अनुकूलवती मानिनीमणी है। वरदान के रूप में प्राप्त प्रतिव्रत नारी है। उन उत्तम दंपतियों ने कन्यका संतान प्राप्ति की मनौती के साथ एक बार तिरुमल जाकर श्री वेंकटरमण के दर्शन किए। हार्दिक रूप से भगवान की मनौती की।

भगवान के प्रति भक्ति और सदाचार प्रवृत्ति के उन दंपतियों को एक वर्ष के उपरांत नृसिंह जयंती के पर्व के दिन एक स्त्री संतान की प्राप्ति हुई। श्री वेंकटेश्वर के अनुग्रह से प्राप्त होने के कारण उन्होंने उस शिशु का ''वेंगमांबा'' नाम से नामकरण किया।

बचपन

वेंकटरमण भगवान के प्रसाद के रूप में प्राप्त वेंगमांबा को बचपन से ही दैव भक्ति सहज ही प्राप्त हुई। सदाचारी एवं दार्शनिक चिंतन के निलय होने के कारण पारिवारिक वातावरण में वेंगमांबा को आध्यात्मिक वातावरण सहज ही प्राप्त हुआ। इसी वातावरण ने वेंगमांबा में भक्ति भाव को पैदा किया। वह लड़की बचपन में ही तरिगोंड लक्ष्मी नरसिंह और तिरुपति श्री वेंकटेश्वर से संबंधित गीत-खेल ही नित्य गाती और खेलती रहती थी। वेंगमांबा के ये कार्य उनके माता-पिता को तथा बंधुवों को आनंद ही देते थे।

कानाल के वंशजों ने पीढ़ियों से पंडित और कवियों के रूप में नाम कमाया था। कृष्णायामात्य भी अपने पूर्वजों की तरह अच्छा साहित्यकार, परोपकार बुद्धिवाला वेदांती पुरुष था। अक्सर अपने घर पर आनेवाले ग्रामीणों को महाभारत, रामायण, भागवत आदि ग्रंथों के विविध प्रसंगों को सुमधुर कंठ से गाकर सुनाया करता था। पिताजी के द्वारा अपने द्वार पर गाँववालों को सुमधुर रूप में सुनानेवाले उन प्रवचनों ने बालिका वेंगमांबा में एक उत्तम साहित्य के परिज्ञान को पैदा किया।

व्रत, पूजा, उपवास आदि संदर्भों में माताजी के द्वारा गाये जानेवाले गीत, कीर्तन आदि ने भी वेंगमांबा में सारस्वत संस्कारों को खूब विकसित कराया। असाधारण होशियारी रखनेवाली वेंगमांबा ने इस प्रकार अपने माता-पिता से बचपन में ही पढ़ने-लिखने के संस्कारों को अच्छे ढंग से प्राप्त किया।

भगवान की पूजा के लिए श्रद्धा और निष्ठा के साथ तुलसी, फूल आदि पूजा द्रव्यों को इकट्ठा करना, भक्ति तन्मयता में गीत

गाना आदि वेंगमांबा की चेष्टाओं को देखकर आरंभ में उनके माता-पिता अवश्य आनंद का अनुभव करते थे। किंतु, वह बालिका क्रम से भक्ति तन्मयता में लीन होकर गलियों में भी गीत गाना, नाचना आदि चकित करनेवाले कार्य करने लगी थी। तब उन माता-पिता में अपनी पुत्री के भविष्य को लेकर चिंता होने लगी थी।

तब से कृष्णयामात्य जब भी अवसर मिलता वेंगमांबा को डांट फटकार सुनाने लगा। उसी रूप में माता मंगमांबा भी हमेशा अपनी पुत्री को घेरलु काम सौंपकर उनमें व्यस्त रखने की कोशिश करने लगी थी। बालिका वेंगमांबा अपने माता-पिता द्वारा बताये कामों को करने के साथ-साथ मन में ध्यान, दैवोपासना, चिंतन-मनन करने का सदा निर्वहण करती रही।

ऐसे समय में जलन से आस-पड़ोस में रहनेवाले माँ-बेटियाँ कुछ ने कानाल कृष्णय्या की पुत्री पगली है, ऐसा प्रचार करना शुरु किया। एक प्रकार से अपवाहें फैलाने लगी थीं। ऐसी अपवाहों के फैलने से पुत्री का विवाह करना बहुत मुश्किल होगा, ऐसा संदेह वेंगमांबा के माता-पिता में बढ़ने लगा। इसलिए उन्होंने जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी वेंगमांबा का विवाह करने का निर्णय किया। विवाह करने से पुत्री का भक्ति-पागलपन कम हो जायेगा, ऐसा उन्होंने सोचा। ऐसा दृढ़ विश्वास भी उनको हुआ। उसी दिन से कृष्णय्या ने अपनी पुत्री के विवाह की तैयारियाँ आरंभ की।

विवाह

उस समय बाल विवाह की परंपरा चल रही थी। ''अष्ट वर्षा भवेत कन्या'' ऐसी शास्त्रोक्ति के अनुसार आठ साल की उम्र में ही

लड़कियों का विवाह करके कन्यादान से प्राप्त होनेवाले फल की प्राप्ति पाने का बहुत से माता-पिता सोचते थे।

माता-पिता अपने विवाह की तैयारियाँ कर रहे हैं, वेंगमांबा ने यह समझ लिया। भगवान (श्री वेंकटेश्वर) ही मेरा पति है, मेरे लिए किसी और वर की तलाश मत कीजिए, उन्होंने अपने माता-पिता से ऐसी बहुत विनति की। किंतु यह बात उन्हें भक्ति में पागल और निरीह बालिका की बात लगी।

'कन्या के लिए विवाह ललाट में लिखा भाग्य' और 'लोकाचार के विरोध में बातें मत करो', 'बुजुर्गों की बातों को स्वीकार कर लेना चाहिए।' - गुस्से के साथ कृष्णय्या ने पुत्री को डांटा। भगवान का निर्णय जिस रूप में होगा, वही होगा, समझकर वेंगमांबा उसके बाद मौन रह गयी।

बहुत प्रयत्न करने के बाद कृष्णय्या का प्रयत्न सफल हो गया। चित्तूर के निकट नार गुंट पालेम नामक गाँव में इंजेटी तिम्मयार्युडु नामक एक संपन्न गृहस्थ हुआ करता था। उनका श्रीवत्स गोत्र है। उसके पुत्र वेंकटाचलपति से वेंगमांबा का विवाह तय हो गया। वर की ओर वाले कन्या के व्यवहार के बारे में जानने के बावजूद भी वधू के चेहरे में लक्ष्मी कला को देखकर और विवाह से उसका पागलपन कम हो जाएगा, कानाल कृष्णयामात्य के सांप्रदायिक संस्कारों के बारे में सुन कर, मान कर विवाह के लिए राजी हो गए। कृष्णयामात्य ने एक शुभ मुहूर्त में वेंगमांबा का विवाह धूमधाम से करवाया।

बाल विवाह होने के कारण विवाह के तुरंत बाद वर के साथ सारे रिश्तेदार अपने-अपने गाँव लौट गए। तब वेंगमांबा अपने ही गाँव में रहते हुए अपनी भक्ति-साधना को आगे बढ़ाती रही। सुसराल

जाने के बाद वेंगमांबा में भक्ति तीव्रता कम हो जाएगी, वह साधारण बन जाएगी, ऐसी आशा से कृष्णयामात्य थोड़ा शांत हो गया। किंतु पुत्री की भक्ति-तन्मयता में कोई परिवर्तन देखने को नहीं मिला। इसके अतिरिक्त वेंगमांबा अपने पिता से भक्ति से संबंधित तर्क वितर्क करने लगी थी। अपने शरीर पर स्वयं को ही अधिकार नहीं है। ऐसे में किसी और को शरीर सौंपना उचित नहीं समझती थी वेंगमांबा। यही तर्क वह अपने पिता से करती रही। तन, मन और कर्मणा श्रीनिवास के लिए समर्पित अपने को किसी और को समर्पित करने का प्रयत्न क्यों किया गया। माता-पिता से उसने यही प्रश्न किया।

वेंगमांबा के वयस्क होते ही निषेक मुहूर्त तय की गयी। सुहाग रात के समय कमरे में प्रवेश करनेवाले वर से वेंगमांबा ने कहा कि उसे तिरुपति वेंकटाचलपति की पत्नी, आंतरंगिक भक्तिन के रूप में मान कर उसे क्षमा करें। तब कमरे में प्रवेश करनेवाले वर को वेंगमांबा अपनी कुल देवता (नंदरीक वंशजों की कुल देवता) चौडमांबा के रूप में दिखाई पड़ी। इसलिए वर उसके पास नहीं आया। वह अपनी कुल देवता का स्मरण करते हुए कमरे से बाहर निकल गया।

जीवन की अत्यंत मधुर एवं मुख्य घटना इस रूप में असफल होने पर चिंता से कुछ ही दिनों में वेंकटाचलपति काल कवलित हो गया। वेंगमांबा ने सुहाग रात को अपने कमरे में पति को 'हे मूर्ख' जैसे संबोधन से डांटा है, मेरा स्पर्श करने मात्र से तुम्हारा सर फट जाएगा, तुम भस्म हो जाओगे, जैसे शाप दिए, इन्हीं शापों के कारण ही वेंकटाचलपति ने चिंतित होकर गाँव के समीप रहनेवाले कुए में गिर कर आत्महत्या कर ली, ऐसा कुछ इतिहासकारों ने कल्पित किया है। ये सारे सचमुच कल्पित ही हैं। द्वेष और जलन से परिचालित हैं।

कालांतर में अनेक प्रक्षेपणों के कारण ऐसा हो गया। इस कवयित्री के मन में अपने पति को लेकर पूर्ण गौरव भाव था। उनकी सारी रचनाओं में इसके साक्ष्य प्रमाण प्राप्त होते हैं।

पुत्री के जीवन को सुखमय बनाने के लिए कृष्णयामात्य ने सारे प्रयत्न किए, किंतु भाग्य ने इसका विरोध किया। आह! ऐसा सोचते कृष्णयामात्य बहुत चिंताग्रस्त हुआ। इस विषाद घटना ने पहले से सांसारिक जीवन की ओर अनासक्त रहनेवाली वेंगमांबा में और विराग की भावनाओं को बढ़ाया।

'भाग्य के कारण विषाद में डूबा मनुष्य आखिर क्या कर सकता है, इसके लिए चिंता करने की जरूरत नहीं है', ऐसा वेंगमांबा ने अपने माता-पिता को कई रूपों में सांत्वना देने की कोशिश की। उम्र से बढ़कर उसके विराग और ज्ञान से भरी वेंगमांबा की बातों को सुनकर उनके माता-पिता को और भी दुख हुआ। इसके अतिरिक्त उन्हें अपनी पुत्री पर आश्चर्य भी हुआ।

सर्वेश्वर श्री वेंकटाचलपति को ही अपने पति के रूप में माननेवाली वेंगमांबा ने अपने शिरोमुंडन आदि परंपराओं का पालन भी नहीं किया। सुहागिन होने के चिह्नों को हटाने के लिए भी वे तैयार नहीं थीं। भगवान ही मेरा नाथ है। इसलिए मैं सदा सुहागिन ही रहूँगी। इस रूप में वे पूर्वाचार परायणों से तर्क करती रहीं। उनके विरोध में उन्होंने अपना दृढ़ विश्वास भी प्रकट किया।

गुरुजी का उपदेश

पति का मरण वेंगमांबा के जीवन में भारी परिवर्तन का कारण बना। उसके पहले वेंगमांबा के अंदर ही अंदर रहनेवाले वैराग्य,

आध्यात्मिक ज्ञान की आसक्ति एक ही बार सचेत हुई। कृष्णयामात्य चिंतन में डूब गए थे। अपनी पुत्री की वैराग्य रीति के अनुकूल कोई जीवन रीति है क्या? उस पर वे अतिगंभीर रूप से सोचने लगे थे। उस समय रूपावतार सुब्रह्मण्य शास्त्री नामक एक नामधारी वेदांती, जो विद्यारण्य स्वामी की गुरु परंपरा के हैं, मदनपल्ली में रहा करते थे। वे योग विद्या में बहुत निपुण राजयोगी थे। साधारण जनता में वे ''सुब्रह्मण्य योगी'' के रूप में प्रचलित थे।

श्री शास्त्री जी के साथ अपना पूर्व परिचय होने के कारण, इसका स्मरण आने पर तुरंत कृष्णयमात्य उनसे मिलने मदनपल्ली के लिए रवाना हो गए। मदनपल्ली जाकर उन्हें वेंगमांबा के बारे सब कुछ बताया। अपनी पुत्री के जीवन को फिर से साधारण बनाने के लिए कोई आध्यात्मिक उपाय बताने की विनति की। ज्ञान में और उम्र में वृद्ध और अनुभवी शास्त्री जी ने उत्तम गृहस्थ कानाल कृष्णयामात्य की विनति को सादर स्वीकार किया। तदुपरांत श्री शास्त्री जी के बताये दिन कृष्णय्या वेंगमांबा को लेकर तरिगोंड से मदनपल्ली चले गए।

मदनपल्ली की पश्चिम दिशा में आधी मील की दूरी पर बेंगलूर जानेवाले मार्ग के समीप धान की खेती के बीचों-बीच एक शिव मंदिर है। वह अत्यंत प्राचीन सिद्धों का स्थल है। उस मंदिर में बसे शिव भगवान का नाम ''योग भोग सोमेश्वर स्वामी'' है। वे स्वामी सुब्रह्मण्य स्वामी के आराध्य देव हैं। विद्या वृद्ध और वयोवृद्ध श्री शास्त्री जी अपनी धर्म पत्नी समेत उस मंदिर में अपने वानप्रस्त आश्रम जीवन को बिता रहे थे। साथ ही शिव भगवान की आराधना किया करते थे।

कृष्णय्या और वेंगमांबा ने गर्भालय में शिव भगवान के दर्शन किए। तदुपरांत मंदिर के प्राकार में ही रहनेवाले श्री शास्त्री के मकान में रहने लगे। शास्त्री के निवास में उन पिता-पुत्री का समुचित आदर सत्कार हुआ। बाद में सुब्रह्मण्य योगींद्र ने वेंगमांबा से कुछ प्रश्न किए। वेंगमांबा के द्वारा दिए गए जवाबों से वे वेंगमांबा के वैराग्य रीति को अच्छी तरह समझ गए। उनको लगा कि वेंगमांबा की रीति सही ही है। फिर ''योग भोग सोमेश्वर स्वामी'' की सन्निधि में ही सुब्रह्मण्य देशिक ने वेंगमांबा को ब्रह्म विद्या का उपदेश दिया। वेंगमांबा के ललाट पर बभूति का टीका लगाकर शिष्य वात्सल्य से अपने दाएँ हाथ को उसके सर पर रखकर, संप्रदयानुसार आध्यात्मिक गुरु परंपरा को बार-बार रटवाकर श्रद्धा भक्ति से बार-बार स्मरण करवाया। पंचदशी मंत्र, नारसिंहमंत्र राज का उपदेश देकर, उनको पुनःश्चरण करने की विधि को भी बताया।

बाद में योगाभ्यास पद्धतियों के बारे में बताकर उनकी अच्छाई और बुराई के बारे में सचेत भी किया। इस रूप में वेंगमांबा विद्यारण्य महर्षि की गुरु परंपरा के सुब्रह्मण्य योगीश्वर की शिष्या बन गयी। गुरुजी के निरीक्षण में मंत्र, जप, योग साधना आदि को पूरी निष्ठा के साथ आचरण करते हुए वेंगमांबा उसी मंदिर में कुछ दिनों के लिए रह गयी। तब उन्होंने आश्रम जीवन को विशेष रूप से सीखा। अपनी शिष्या स्वतंत्र रूप से योगाचरण और ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त कर सकती है, ऐसा विश्वास होने के बाद सुब्रह्मण्य देशिक ने वेंगमांबा को फिर से तरिगोंड जाने की अनुमति दे दी। ''गुरु साक्षात परमब्रह्म'' ऐसे परिपूर्ण विश्वास के साथ, आध्यात्मक तेज की प्रतिमूर्ति बन कर तेजोदीप्त गुरु को वेंगमांबा ने परिक्रमा करके नमस्कारों के साथ पादाभिवंदन करके उनका आशीस प्राप्त किया।

गुरुजी का आशीर्वाद लेकर तरिगोंड वेंगमांबा तरिगोंड पहुँचकर नये उत्साह से मंत्र-जप को, योगाभ्यास को पूरी निष्ठा के साथ आगे बढ़ाती रही। इसके लिए वे नित्य श्री लक्ष्मी नरसिंह स्वामी के मंदिर पर जाती रही। अचंचल निष्ठा एवं दीक्षा के साथ बहुत ही अल्प काल में उन्होंने अपनी साधना से उच्च स्तर को प्राप्त किया।

सरस्वती से साक्षात्कार हुआ

उस दिन बहुत समय तक वेंगमांबा योग समाधि में थीं। उस दिन दोपहर के समय योग साधना को पूरा करके, थकान से, अर्धनिमिलित नेत्रों से शून्य को ताकने लगी थी। तब आकाश में उन्हें कुछ अक्षरों की पंक्तियाँ चमकती आकाश से उतर कर अपने चेहरे पर विलीन हो गयी, ऐसा अनुभव हुआ। यह एक विचित्र एवं दिव्य अनुभूति थी। तत्काल कोई दिव्य शक्ति अपने में प्रवेश करके पूरे शरीर में भर गयी, ऐसा उनको लगा।

अगले दिन उन्होंने मदनपल्ली जाकर उस विचित्र अनुभव के बारे में अपने गुरुजी को बताया। अल्प काल में ही ऐसा विचित्र अनुभव होने का भाग्य अपनी शिष्या को प्राप्त हुआ, यह जानकर सुब्रह्मण्य शास्त्री को आश्चर्य के साथ-साथ बहुत आनंद भी हुआ। इस प्रसंग के आंतरिक परमार्थ को उन्होंने अपनी शिष्या को इस रूप में बताया।

''हे पुत्री! अपने पूर्व जन्मों के पुण्य के कारण ही इतने कम समय में तुम्हें योग विद्या में परिपूर्णता प्राप्त हुई है। उसके साथ-साथ सरस्वती देवी की कृपा से अक्षर रूप में ब्रह्म ज्ञान तुममें प्रविष्ट हुआ। तुममें ज्ञान शक्ति भर दी है। योग साधना के साथ-साथ समय मिलने पर कवितादि भी करती रहो! उत्तम कविता लिखना तप के समान है! यह बुजुर्गों का वाक्य है! उदात्त रचनाओं के द्वारा परमात्मा की

आराधना करो! उनके द्वारा तुम्हारा जीवन धन्य होने के साथ-साथ दूसरों के जीवन को भी धन्य बना सकती हो! इसे तुम अपने इष्ट देव तरिगोंड लक्ष्मी नरसिंह का आदेश ही समझ लो! बुलवानेवाले और बोलनेवाले वे ही हैं न! इसलिए देर किए बिना रचना करना शुरु करो!'' इस रूप में गुरुजी ने अपनी शिष्या को प्रोत्साहित किया।

वेंगमांबा ने बचपन में ही तरिगोंड में रहते समय ही अपने को प्राप्त इस विचित्र अनुभूति के बारे में बाद में तिरुमल में रहते समय रचित ''श्री वेंकटाचल महात्म्यमु'' पद्य-रचना के आरंभिक पद्यों में ही वर्णित किया है। वे पद्य इस प्रकार हैं -

शार्दुलम

अक्षीणाक्षर पंक्तिरीति मुनु म
ध्याह्नंबुनन नाकु ब्र
त्यक्षंबै गुरु नादि पुरुषुनि ब्र
त्यक्षंबु गाविंचि, चि
त्साक्षे ब्रह्ममटंचु जूपुचु दद
र्थंबुन गृपन जेप्पि, नन
रक्षिंपन पनिंबूनु भारतिनि गी
र्वाणिन प्रशंसिंचेदन।

चंपक माला

अलघ नभंबु नुंडि विम
लाक्षर पंक्तुलरीति वच्चि, ने
नलसत जेंदियुन्न तनि
ना ननमंदु वसिंचि, ज्ञानमुं

गलुगं जेसि, मानस वि
कारमुलं दोलंगिंचि, जिह्वपै
निलिचि नटिंचु शारदनु
नित्यमु सन्नुति सेयुचुन्डेदन्

अर्थात पहले यानी मेरे बचपन में एक दिन मध्याह्न के समय बड़े-बड़े अक्षरों की पंक्तियों के क्रम में मुझे साक्षात्कार देकर (पूरे जगत को) सबके गुरुवर्य और आदिपुरुष श्री तरिगोंड लक्ष्मी नरसिंह स्वामी से मुझे साक्षात्कार करवाकर, ज्ञान साक्षात्कार अनुभव ही परब्रह्म है, यह बतलाकर, मुझ पर दया से उसके अंतरार्थ को भी समझाते, मेरी रक्षा करने के लिए तैयार हुए उनके वचनों की अधीश्वरी भारती देवी की मैं प्रशंसा करती हूँ।

पहले एक दिन मध्याह्न समय में मेरे थके (शून्य में ताकते समय) हुए समय में निर्मल अक्षरों की पंक्ति में शारदा देवी ने विशालाकाश से नीचे उतर कर मेरे मुख मंडल में प्रवेश किया। इससे मुझे आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ। उस रूप में ज्ञान देकर, मेरे मन में प्रवेश करके मेरे लौकिक विकारों को दूर करके, मेरी जीभ पर खड़े होकर नित्य नर्तन करनेवाली वाग्देवता उस शारदा देवी की नित्य मैं स्तुति कर रही हूँ।

ग्रंथ रचना का शुभारंभ करना

बचपन में अक्षर ज्ञान तक प्राप्त करने में असमर्थ, रस-छंद-अलंकारों के ज्ञान के बिना, अलंकार शास्त्र का अभ्यास किए बिना, प्राचीन काव्यों का, इतिहासों का अनुशीलन किए बिना, योग-विद्या निपुणता और तरिगोंड लक्ष्मी नरसिंहस्वामी के अनुग्रह से, गुरुपाद के प्रोत्साहन से कई पीढ़ियों से चले आनेवाले घरेलू साहिती वातावरण

के साथ देने से ''तरिगोंड नृसिंह, दया पयोनिधी'' मुकुट से अपने इष्ट देव को पूरे मन से संबोधित करते हुए वेंगमांबा ने एक सुमुहूर्त में अपनी काव्य रचना का शुभारंभ किया।

तरिगोंड नृसिंह शतक

'तरिगोंड नृसिंह! दयापयोनिधी' ऐसे संबोधन से लिखी गयी यह वेंगमांबा की प्रथम काव्य-रचना है। इसमें पूरे 103 पद्य हैं। इस शतक का पठन करते समय हमें 'भद्रगिरि दाशरथी! करुणा पयोनिधी!' नामक मकुट से तेलुगु प्रदेश में प्रसिद्ध हुए, कंचेर्ल गोपन्ना (भक्त रामदास) के द्वारा रचित 'दाशरथी शतक' का स्मरण हो आता है।

वेंगमांबा के द्वारा काव्य रचना आरंभ करने का समाचार पाकर उस गाँव के कुछ अनपढ़ लोग 'कृष्णय्या की पुत्री को अक्षर ज्ञान ही नहीं वह कैसे कविता कर सकती है? वह कविता कैसे होगी। वह विकल्प कविता ही होगी।' इस रूप में संदेह ही नहीं अपमान भी करने लगे। 'विकल्प कविता' का मतलब कविता नहीं होते हुए भी कविता कहलानेवाली होती है, ऐसा आलोचकों का अभिप्राय है।

अपनी काव्य रचना के संबंध में हुई आलोचनाओं को सुनकर वेंगमांबा ने, ऐसे लोगों को सद्बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना एक पद्य में अपने इष्ट देव तरिगोंड लक्ष्मी नरसिंह स्वामी से की है। कवयित्री ने इस शतक में अपनी भक्ति भावनाओं को, योगाभ्यास के समय अपने को हुए अनुभवों को, लोक-नीतियों को बहुत ही स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है। भक्ति रस से परिपूर्ण इस शतक रचना का एक उदाहरण -

उ. **श्री रमणी मनोरमण!**
चिन्मय! विश्व शरीर! घोर सं

सार लता लवित्र! नव
सारस नेत्र! पवित्र! भक्त मं
दार! कृपातरंग! पर
तत्वमु नीवनि नम्मि, मुक्तिकै
कोरि भजिंतु निन्नु दरि
गोंड नृसिंह! दया पयोनिधी!

दया का सागर बन कर, तरिगोंड गाँव में बसे हे लक्ष्मी नरसिंह देव! लक्ष्मी देवी के मन को संतोष देनेवाले हे वल्लभा! हे ज्ञान स्वरूपा! हे विश्वदेही! भयानक सांसारिक रूपी लता के लिए दरांती जैसे हो! अभी अभी पुष्पित कमल जैसे सुंदर नेत्रवाले! सारे लोकों के लिए पवित्र स्वरूपा! भक्त जनों के लिए कल्प वृक्ष रूपा! दयारस छलकानेवाला हृदय रखनेवाले! तुम्हीं को परब्रह्म स्वरूप परिपूर्ण रूप से मान कर, मुक्ति की कामना करते हुए, आसक्ति से तुम्हारी सेवा कर रही हूँ, मुझ पर अनुग्रह करो हे देव!

नरसिंह अवतार का वर्णन करनेवाला एक और उदाहरण द्रष्टव्य है -

चंपक माला

फेळ फेळ नुक्कु कंबमुन
बिट्टुग बुट्टि, हिरण्य कश्यपुन
चेलुवुग गर्भगोलमुनु
जिंचि, सुमंचित रक्तधारलन,
गल गल द्रावि, डिंभकुनि
गाचिन देवुड वंचु जालगा

गोलिचितिनय्य! निन्नु दरि
गोंड नृसिंह! दया पयोनिधी!

हे दया सागर श्री तरिगोंड लक्ष्मी नरसिंह स्वामी! इस इस्पात खंभे को बड़ी आवाज के साथ चीरकर, लोगों को आश्चर्य चकित करनेवाले नरसिंह स्वरूपा, हिरण्य कश्यप का संहार करके, उसकी आंतड़ियों को चीर कर गट-गट ध्वनि के साथ उसके रक्त को पी कर, परम भक्ताग्रणी प्रह्लाद पुत्र की रक्षा करनेवाले देव के रूप में मैं तुम्हारा बार-बार भजन कर रही हूँ। हे महानुभाव! आपको प्रणाम।

नाई भाग निकला

पति के मरने के बावजूद, कृष्णय्या की पुत्री वेंगमांबा सुहागिनों के सारे चिह्नों को पहनते देखकर तरिगोंड के वासी, उनमें प्राचीन परंपराओं को माननेवालों के गुस्से का कारण बना। इसलिए उन सबने कृष्णयामात्य के घर पर आना-जाना कम कर दिया। वेंगमांबा के द्वारा वैधव्य पालन नहीं करवाने पर उस परिवार को ब्राह्मण समाज से पूरी तरह जाति-बहिष्कार करेंगे, ऐसे अपने दृढ़ निर्णय को उन्होंने कृष्णयामात्य को बताया। उस समय के समाज के अनुसार उनकी धमकियों से कृष्णयामात्य को बहुत चिंता होने लगी।

एक ओर पुत्री! दूसरी ओर रूढ़ी सामाजिक अंधविश्वास! अंत में उनके विचार सामाजिक प्रभाव के सामने झुक गए। कृष्णय्या की स्वीकृति को आधार बनाकर सारे विप्र जनों ने बलपूर्वक वेंगमांबा के शिरोमुंडन करवाने के प्रयत्न किए। अपने कारण पिता को हुए कष्ट के कारण चिंता करती हुई वेंगमांबा, होने को कौन रोक सकता है, समझ कर धैर्य के साथ अपने इष्ट देवता तरिगोंड लक्ष्मी नरसिंह का एकाग्रचित्त से ध्यान करती रह गयी।

तालाब के तट पर पद्मासीन होकर बैठी हुई शिरोमुंडन करने वेंगमांबा के पास आये नाई को वे एक भयानक देवी स्वरूप में दिखाई पड़ीं। वह डरते हुए ''क्षमा करो माई! प्रणाम माई!'' कहते भाग निकला। वहाँ इकट्ठा हुए अन्य लोगों में भी ऐसा ही भय और आतंक फैल गया। तत्काल वह कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया।

किंतु किसी भी रूप में वेंगमांबा का शिरोमंडन करवाने के लिए तैयार विप्रजनों को तसल्ली नहीं हुई। एक छोटी बालिका अपने आचारों का विरोध कर रही है, यह उनको अच्छा नहीं लगा। इसलिए वे किसी भी रूप में इस पूर्वाचार को वेंगमांबा से आचरण करवाने के उपाय सोचने लगे।

पुष्पगिरि शंकराचार्य पीठ

उस प्रदेश पर धार्मिक-आध्यात्मिक आधिपत्य रखनेवाले पीठ के अधिपति पुष्पगिरि शंकाराचार्य के सम्मुख जाकर विप्र जनों ने वेंगमांबा के पूर्वाचारों के आचरण में उसके विरोधी विचारों के बारे में स्पष्ट बताया। अपने गाँव का भ्रमण करने के लिए भक्ति से उनका स्वागत किया। उस समय पुष्पगिरि पीठ पर आधिपत्य रखनेवाले श्री मदभिनवोद्धंड विद्या नृसिंह भारती स्वामी ने इसे स्वीकार किया। ऐसा उन्होंने तरिगोंड गाँव के लोगों को समाचार दिया।

गाँव के वृद्ध, पंडित, सनातनधर्मावलंबी आदि ने मंगल वाद्यों के साथ स्वामी का स्वागत किया। वेद मंत्रों के साथ पूर्णकुंभ समेत उनका स्वागत किया गया। भक्ति प्रपत्ति से लिवा लाकर लक्ष्मी नरसिंह मंदिर में प्रबंध किए गए निवास पर उन्हें सपरिवार बसाया।

अगले दिन पूजा कार्यक्रम और गाँव के लोगों के भिक्षा-वंदन आदि कार्यक्रम पूरा होने के बाद स्वामी के निवास में धार्मिक सभा आयोजित की गई। इस सभा में सनातन धर्मावलंबी अनेक उस गाँव के आस-पड़ोस के गाँवों से भी आये।

सेवकों को सावधान प्रकट करते हुए स्वामी का आगमन हुआ। उन्होंने समुन्नत गुरु पीठ को ग्रहण किया। उनके शिष्यों में एक ने जाकर वेंगमांबा को बताया कि स्वामी जी ने उन्हें बुलाया है। पीठाधिपतियों के सामने खाली हाथों से नहीं जाना है, समझ कर वेंगमांबा अपने साथ एक नारियल लेकर चली। वहाँ स्वामी जी के सिंहासन के सामने कुछ दूरी पर एक परदा रखा गया। शिष्य के कहने के अनुसार वेंगमांबा उस परदे के उस पार जाकर खड़ी हो गयी। वेंगमांबा पूर्वाचारों की विमुखी है, इसलिए पीठाधिपति को उनका चेहरा दिखाई न पड़े, इसलिए परदा रखा गया। इस रूप में एक भरी सभा में दोषी के रूप में (उन दिनों में समाज में जातिगत अपराध करनेवालों को ऐसे ही खड़ा कर दिया जाता था।) वेंगमांबा को खड़ा किया गया। इसलिए परम योगिनी होते हुए भी वेंगमांबा को थोड़ी चिंता हुई।

स्वामी जी से वार्तालाप

स्वामी जी ने सनातन धर्म के वैशिष्ट्य के बारे में और ब्राह्मण कन्या के व्यवहार के बारे में, कर्तव्य के बारे में उदात्तता से उदाहरणों के साथ भाषण देना शुरु किया। सभा में मौजूद सब सन्नाटे के साथ सचेत होकर सुनते हुए तन्मयता में सर हिलाने लगे थे।

उस रूप में धर्म-बोध करनेवाले स्वामी जी ने अचानक परदे के पीछे खड़ी वेंगमांबा को लेकर इस रूप में प्रश्न किया।

स्वामी जी

क्यों री वेंगम्मा! पति को खोनेवाली ब्राह्मण स्त्री को शिरोमुंडन करवाकर विधवा परंपरा का पालन करना चाहिए न? तुम क्यों पूर्वाचार के विरोध में इस रूप में व्यवहार कर रही हो? क्या कारण है?

स्वामी के प्रश्न का वेंगमांबा ने इस रूप में सविनय जवाब दिया।

वेंगमांबा

हे स्वामी! तिरुपति वेंकटाचलपति को ही मैं अपना पति समझकर उनकी आराधना कर रही हूँ। इसलिए सुहागिन के सारे चिह्नों को निकालने की आवश्यकता नहीं है, ऐसा मैं सोचती हूँ। यही मेरा विश्वास है।

स्वामी जी

तिरुपति वेंकटरमण स्वामी को पति के रूप में मानना और आराधना करने मात्र से, अग्नि को साक्षी बनाकर विवाह करनेवाले पति के मर जाने के बाद लोकाचार का तो अवश्य पालन करना चाहिए न?

वेंगमांबा

हे आचार्यवर्य! कन्यका दीक्षा से पहले से मैं भगवान को ही त्रिकरण शुद्धि के साथ प्रणय भावना से उनकी आराधना कर रही हूँ। इसलिए सामान्य लोकाचार का पालन करने की आवश्यकता नहीं है।

उसी अचंचल विश्वास से जी रही हूँ। इसमें मेरा कोई दोष नहीं है, ऐसा मेरा पूरा विश्वास है।

स्वामी जी

इस रूप में कुतर्क करने की आवश्यकता नहीं है, सनातन आचार का विरोध करना भी उचित नहीं है न!

वेंगमांबा

मेरा कुतर्क नहीं है। आप बुजुर्ग हैं विचार करके मेरी प्रार्थना को स्वीकार करेंगे। इससे बढ़कर पातिव्रत्य स्त्री पराये नाई का स्पर्श (शिरोमुंडन से) कैसे कर सकती है? स्वामी! क्या नाई पराया पुरुष नहीं है?

स्वामी जी

कई पीढ़ियों से चली आ रही परंपरा को, आचार का पालन करने के लिए इस रूप में स्पर्श करना उचित ही है। इसमें कोई गलती नहीं है।

वेंगमांबा

हे स्वामी जी! कृपया आप यह बताइए कि ऐसा किस शास्त्र में लिखा गया है? उससे भी अलग शिरो मुंडन करवाने मात्र से मन में रहनेवाली कामनाओं का मुंडन हो सकता है क्या? हे स्वामी जी! अगर मैं आपके कहने के अनुसार शिरोमुंडन करवाने से, आप क्या मेरे बाल बढ़ने से रोक सकते हैं? अगर आप ऐसा कर सकते हैं तो मैं इसे स्वीकार कर लेती हूँ।

कम उम्रवाली ग्रामीण युवति वेंगमांबा इस रूप में प्रति सवाल करने पर, इसका अंदाजा नहीं रखनेवाले स्वामी जी को उनके सवालों से बहुत गुस्सा आया। फिर भी अपने को शांत रखते हुए फिर से इस रूप में सवाल किया।

स्वामी जी

ठीक है, अगर तुम इतनी भगवत भक्तिन हो तो अपने गाँव में पधारे गुरुपीठ को भी नमस्कार किए बिना इस रूप में व्यवहार कर रही हो! ऐसा व्यवहार करने का अधिकार किस शास्त्र ने दिया है? क्या यह तुम्हारे वेदांत का विषय है? या फिर यह तुम्हारी असावधानी है?

वेंगमांबा

स्वामी जी ने परदा करवाकर गुरु पीठ को नमस्कार करने का अवसर छीन लिया है। ऊपर से नमस्कार नहीं किया, ऐसा दोष दे रहे हैं, इसमें मेरी असावधानी है, ऐसा मुझ पर ही आरोप कर रहे हैं। मैंने किसी भी शास्त्र को नहीं पढ़ा। मैं वेदांतिनी हूँ, ऐसा मैंने कभी भी नहीं कहा। शास्त्र और वेदांत का ज्ञान आप जैसे पीठाधिपतियों को ही होना चाहिए। मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं है। मैं सिर्फ तरिगोंड नृसिंह की सेविका मात्र हूँ।

मेरे नमस्कार करने को लेकर अगर आपको आपत्ति है तो अगर आप उस पीठ से नीचे उतर जायेंगे तो आपकी इच्छा के अनुसार मैं गुरु पीठ को नमस्कार करूँगी।

पीठ परशुराम प्रीति का हो गया

वेंगमांबा के जवाब सुनकर पीठाधिपति को बहुत गुस्सा आया। फिर वेंगमांबा के द्वारा गुरु पीठ को नमस्कार करवाने की इच्छा से वे गुरु पीठ से उतर कर बगल में खड़े हो गये। वेंगमांबा की आड़ के परदे को भी हटाया दिया गया।

तुरंत वेंगमांबा ने अपने इष्ट देव तरिगोंड लक्ष्मी नरसिंह स्वामी को मन में ध्यान करते हुए पुष्पगिरि पीठ को नमस्कार किया। अगले ही क्षण में सिंह गर्जन जैसी आवाज सुनायी पड़ी। तुरंत पीठ के ऊपर से ज्वालाएँ भभक उठीं। वह पीठ पूरी तरह जलकर राख हो गया।

अचानक हुई इस घटना से पुष्पगिरि पीठाधिपति आश्चर्य और भय से विचलित हो गए। इस घटना से वेंगमांबा श्री नरसिंह की अप्रतिम भक्तिन है, उन्हें ऐसा लगा। वेंगमांबा प्रह्लाद के अंश से पैदा हुई है। वह कारण जन्मवाली है। इस रूप में उन्होंने वेंगमांबा का कीर्तन किया। तरिगोंड में अपने को बुलानेवाले पूर्वाचार परायण लोगों को समुचित रूप से डांट-फटकार सुनाकर सपरिवार वे वापस लौट गए।

नृसिंह विलास कथा

बाद में वेंगमांबा नृसिंह मंदिर में चली गयी। पीठाधिपति के समक्ष अपनी रक्षा करने के लिए परम भक्ति से अपने इष्ट देव की मन भर प्रार्थना की। उनके प्रति आभार प्रकट करने के उद्देश्य से 'नृसिंह विलास कथा' नामक यक्षगान को रचा। उसे नरसिंह स्वामी को ही समर्पित किया। इस नाम को देखकर इस यक्षगान नाटक में

'प्रह्लाद का चरित' का गायन हुआ होगा, ऐसा अंदाजा लगाया जा सकता है। यह आज अनुपलब्ध है।

राच राय के मेले

इस क्षेत्र में रायचोटी के पास एक प्राचीन शैव मंदिर है। भद्रकाली समेत वीर भद्र स्वामी इस मंदिर के मूल विराट हैं। वे अत्यंत महिमान्वित स्वामी हैं। जनता में वे 'राच राय' के नाम से प्रचलित हैं।

उन दिनों में राच राय के मेले हो रहे थे। अपने मन को शांत करने के लिए कानाल कृष्णयमात्य भी सपरिवार उस मेले में गया। माता-पिता समेत वेंगमांबा ने भी वीर भद्र स्वामी के दर्शन किए। उसी रूप में समीप के 'अनंत पुरी' गांव में बसी 'गंगम्मा' माई के दर्शन भी किए। गंगा माई वहाँ पर अत्यंत प्रसिद्ध ग्राम देवता थी। उस समय वेंगमांबा के मन में एक संकल्प का जन्म हो गया कि वीर भद्र स्वामी को समर्पित करने के लिए एक शैवत्मक यक्षगान की रचना करनी चाहिए।

शिवनाटक

नारद महर्षि अपने गान से सूर्य भगवान को तृप्त करके उनसे एक अपूर्व रत्न हार को पुरस्कार के रूप में प्राप्त कर लेता है। तदुपरांत वे देव महर्षि कैलास लोक जाकर पार्वती देवी के मंदिर में रहनेवाले शिव भगवान को उसे समर्पित करता है।

परम शिव उस हार को पार्वती को पुरस्कार के रूप में देता है। यह समाचार पाकर गंगा देवी को बहुत गुस्सा आता है। उसके बाद गंगा देवी को प्रसन्न करने के लिए शिव भगवान नारद के द्वारा दिए गए रत्न हार से भी बढ़कर सुंदर एक माणिक हार को ब्रह्म के द्वारा

मंगाकर गंगा देवी को प्रदान करता है। गंगा और गौरी के बीच में सख्यता के साथ यह यक्षगान सुखांत-समाप्त होता है।

वेंगमांबा ने इस कथा को श्री कृष्ण के पारिजातापहरण वृत्तांत के समानांतर उससे भी सुंदर कल्पना करके शिव नाटक यक्षगान की रचना की है। इस यक्षगान का 'शिव विलास' नामक दूसरा नाम भी है। प्रतियाँ बनानेवालों के द्वारा 'शिव पारिजातम' नाम भी प्रचलन में आ गया है।

राज योगामृत सार

शिव नाटक की रचना के उपरांत वेंगमांबा ने ''राज योगामृत सार'' नामक काव्य की रचना की। यह लगभग 900 द्विपद छंदों में तीन प्रकरणों में परिव्याप्त है। भागवत के तृतीय स्कंध के 'कपिल देवहूति संवाद' ही इस कृति का आधार है। कपिल मुनि अपनी माताजी देवहूति को वेदांत ज्ञान का प्रबोध करना इस रचना का इतिवृत्त है। कवयित्री ने इस कथा में अपने अनुभव से प्राप्त अपने तत्व ज्ञान को सुलभ शैली में संग्रह रूप में अभिव्यक्त किया है।

विद्यारण्य स्वामी से लेकर सुब्रह्मण्य देशिक तक होनेवाले अपने आध्यात्मिक गुरु परंपरा को वेंगमांबा ने इस काव्यारंभ में उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है। इस ग्रंथ के लिए 'राज योग सार' नामक दूसरा नाम भी है। यह आंध्र देश में 'सीता रामांजनेय संवाद' की तरह प्रशस्ति पानेवाला आध्यात्मिक काव्य है।

बाल कृष्ण नाटक

वेंगमांबा की रचनाओं में यह पांचवीं रचना है। तरिगोंड में रहते समय लिखी गयी रचनाओं में सबसे अंतिम रचना है। इसी का एक और नाम 'कृष्ण नाटक' है। भागवत पुराण के दशम स्कंध की रास

क्रीडा प्रसंग में से अल्प मात्रा में कथा को लेकर उसे स्वतंत्र इतिवत्त की कल्पना करके कवयित्री ने अत्यंत रमणीय रूप में इसे रचा है। यह भी सुंदर यक्षगान है।

वेंगमांबा के द्वारा बाल कृष्ण नाटक रचते समय ही रातों में अपने कमरे में एकांत ध्यान में राधा मनोहर कृष्ण का ध्यान किया करती थी। उस समय उस श्रृंगार रसाधिदेव के साथ साक्षात संवाद किया करती थी। ऐसी दिव्यानुभूति वेंगमांबा को प्राप्त हुई है।

इस रूप में होते समय एक दिन रात को वेंगमांबा के कमरे से किसी पुरुष की कंठ ध्वनि पड़ोसी की स्त्रियों को सुनाई पड़ी। उस ध्वनि को सुननेवाली उन स्त्रियों ने गलत अंदाजा लगाया कि वेंगमांबा के कमेरे में कोई पराया पुरुष है। इसलिए तुरंत उस पराये व्यक्ति को पकड़कर वेंगमांबा के रहस्य को खोलने के उद्देश्य से बुजुर्गों के सामने उसका भंडा फोड़ने का निर्णय कर लिया। इसके लिए एक रात को वे उस कमरे के पास गात लगाकर बैठीं।

काफी रात बीत जाने पर भी कोई पराया पुरुष बाहर न आने से साहस करती हुई स्त्रियाँ स्वयं वेंगमांबा के कमरे में गुस गयीं।

''अब तक तुम से बात करनेवाला वह कहाँ है?'' इस रूप में डांटती उन्होंने वेंगमांबा से पूछा।

''अपने हृदय में अपने आराध्य देव श्री कृष्ण को छोड़कर कोई दूसरा पुरुष यहाँ पर नहीं है।'' वेंगमांबा ने उनको कटु शब्दों में जवाब दिया। वेंगमांबा की मधुर भक्ति की रीति को समझ कर उन्होंने उसे स्वीकार किया। ऐसी पवित्र भक्तिन के बारे में गलत विचार रखा, इस प्रकार वे स्त्रियाँ तब पश्चाताप करने लगी।

वेंगमांबा की भक्ति तत्परता और उनकी भक्ति महिमा को पुष्पगिरि पीठाधिपति के द्वारा अनुमोदन प्राप्त होने के बावजूद भी तरिगोंड में रहनेवाले सनातन लोगों में अभी भी परिवर्तन नहीं आया। उन्होंने कानाल कृष्णय्या के घर पर आना-जाना छोड़ दिया। रास्ते में दिखाई पड़ने पर मुँह मोड़ कर चले जाने लगे थे। अपने परिवार को जाति बहिष्कार करके निषेध नहीं लगाने पर भी, परिणाम तो वैसा ही लग रहा था। इसलिए उत्तम गृहस्थ कृष्णय्या का मन व्याकुल हो उठा।

पुष्पगिरि के लोग तरिगोंड से लौट जाने के बाद दिन के समय वेंगमांबा अधिकांश समय मंदिर में ही रहा करती थी। यह भी कृष्णय्या की व्याकुलता का एक कारण बना। एक दिन अभी-अभी मंदिर से लौटनेवाली पुत्री से कृष्णयामात्य गुस्से में बोलते-बोलते इस रूप में बोल गए -

''हे वेंगम्मा! घर से मंदिर ही बेहतर है, क्या तुम इस कहावत को सार्थक बनाना चाहती हो? घर लौटना तुमको अगर पसंद नहीं है तो, मंदिर में ही रह जाना बेहतर है न?''

अपने पिताजी के गुस्से को भांप कर - वेंगमांबा ने धीरे-धीरे जवाब दिया -

''वैसे ही रह जाऊँगी पिताजी! अब आपको कष्ट नहीं दूँगी पिताजी! ''

पुत्री के जवाब को सुनकर कृष्णय्या ने बाद में अपने आपमें बहुत पश्चाताप किया।

तरिगोंड का मंदिर में तप करना

उस दिन के बाद वेंगमांबा न मंदिर में दिखाई पड़ी न गाँव में। मदनपल्ली के अपने गुरु के पास शायद गयी होगी, माता-पिता ने ऐसा ही समझा। दुर्जनों ने अपवाह फैला दी कि वेंगमांबा किसी के साथ भाग गयी। ऐसा समाचार फैला कर उन्होंने राक्षस आनंद प्राप्त किया। सनातन धर्म के कुछ अंधविश्वासी यह प्रकट करके प्रसन्न हो गए कि वेंगमांबा से गाँव बच गया।

वेंगमांबा पहले से लक्ष्मी नरसिंह के मंदिर में बाएँ तरफ रहनेवाले अभय हस्त हनुमान की ऊँची मूर्ति के पीछे बैठकर घंटों भर ध्यान मग्न हुआ करती थी।

अर्चक स्वामी ने एक दिन भगवान हनुमान का अलंकार करते हुए उनके पीछे रहनेवाली वेंगमांबा को देख लिया। धुंध प्रकाश में उन्हें देखकर, कानाल कृष्णय्या की पुत्री वेंगमांबा के रूप में उसे पहचान लिया।

इस युवति के वहाँ रहने के कारण स्वामी की सन्निधि अपवित्र हो गयी समझ कर गुस्सा करते हुए, किसी बुरे उद्देश्य से ही वे वहाँ पर पहुँच गयी, ऐसे विचार से वेंगमांबा को डांटते हुए, द्वेष करते हुए उसे सामने बुला लिया। योग समाधि में लीन रहने के कारण वेंगमांबा को वे बातें सुनायी नहीं दीं।

तुरंत बड़े गुस्से के साथ वह अर्चक स्वामी वेंगमांबा के सर के बाल पकड़ कर मूर्ति के पीछे से खींच कर ले आया। केश को खींचने के कारण हुई बाधा से वेंगमांबा की समाधी टूट गयी। उन्होंने आँखें खोल कर देखा। उस योगीश्री की तीक्षण दृष्टि को अर्चक स्वामी

सहन नहीं कर पाया। वह मूर्छित हो गया। कुछ समय के बाद मूर्छा से उठकर अपने अपराध के लिए क्षमा करने की प्रार्थना करते हुए अर्चक स्वामी ने प्रार्थना की। (इस पुजारी का नाम कृष्णमाचार्य है। इसने बाद में वेंगमांबा का शिष्य बनकर उनसे ज्ञान का उपदेश पाकर अपने को धन्य बनाया। कृष्णमाचार्य की तरह गाँव के मुराषावली नामक एक सज्ञन तरिगोंड में दुर्जनों से वेंगमांबा की रक्षा करते हुए, वेंगमांबा का सेवक बना। बाद में वेंगमांबा से उपदेश प्राप्त करके अपने जीवन को उसने भी धन्य बनाया, ऐसी जनश्रुति प्रचलित है। तरिगोंड के चारों ओर रहनेवाले कृष्णमाचार्य का मंटप, मुराषावली दर्गा, ये दोनों वेंगमांबा के शिष्यों के नाम पर आज भी दोनों के स्मारक बने हुए हैं। यहाँ के लोगों का यही विश्वास है।) आगे अर्चक स्वामी वेंगमांबा के चरणों में गिर पड़ा।

तरिगोंड के नरहरि के संकल्प से अपने ध्यान में यह विघ्न पड़ा है, समझ कर वेंगमांबा ने अर्चक को कुछ न कहकर गर्भालय में प्रवेश करके लक्ष्मी नरसिंह से इस रूप में प्रार्थन की।

''हे प्रभु! इस घटना से, मुझे यहाँ से जाने के लिए आज्ञा दे रहे हो क्या? यह सेविका आपकी सेवा को छोड़कर कहाँ जा सकती है?'' इस रूप में प्रार्थना करते हुए, अचानक उनके मन में तिरुमल का क्षेत्र एक बार चमक कर घूम गया।

तिरुमल की यात्रा

तुरंत वेंगमांबा मंदिर से बाहर निकल कर सीधे तिरुमल की तरफ यात्रा करने लगी। 'माता नास्ति पिता नास्ति' ऐसे वैराग्य के साथ उन्होंने वेंकटाचल जंगल में प्रवेश किया। तरिगोंड नृसिंह का स्मरण करते हुए, भूख-प्यास का ध्यान न करते हुए, क्रूर जानवरों के

संचार की परवाह किए बिना, एक दो दिन जंगल के रास्ते में पैदल चल कर 'संदेकालपु मोगलि पेंट' नामक घाटी पर पहुँच गयी। इस घाटी के समीप ही 'युद्ध कला तीर्थ' नामक एक पुण्य तीर्थ है।

वहाँ बसे हनुमान स्वामी के चरणों की सन्निधि में पद्मासन में बैठकर श्रीवेंकटेश्वर को लेकर तीव्र गति से तप करना आरंभ किया। ध्यान में रहते समय एक दिन वेंकटरमण ने साक्षात्कार देकर उन्हें तिरुमल पधारने का आदेश दिया। उस घने जंगल में अपनी रक्षा करनेवाले हनुमान का स्मरण करते हुए वेंगमांबा नए उत्साह के साथ जल्दी-जल्दी तिरुमल पहुँच गयी।

सहज भक्तिन, परम योगिनी वेंगमांबा ने कलियुग वैकुंठ के रूप में माने जानेवाले तिरुमल प्रवेश करते ही अपूर्व किसी नए लोक में प्रवेश करने की दिव्यानुभूति को प्राप्त किया। तत्काल आशु के रूप में निम्न पद्य को रचकर उसके द्वारा श्री वेंकटेश्वर भगवान की प्रार्थना की -

सी. श्रृंगाररायनि चेलुवु मीरिन कोंड
फणिराजु पेरिटि पसिडि कोंड
घोर पापमणंचु कोनेर्लु गल कोंड
तलिचिन मोक्षंबु तगुलु कोंड
पुष्प जातुल विष्णु भूजिंपगल कोंड
कल्पवृक्षमु लैदु कलुगु कोंड
चिलुकलु कोइलल् चेलगि कूसेडु कोंड
मृगजाति कोट्लेल्ल मेलगु कोंड

ते.गी. अमरवरुलकु आधारमैन कोंड
आलुवार्लकु प्रत्यक्षमैन कोंड

अलर जूचिन ब्रह्मांडमैन कोंड
एनु कनुगोंटि श्री वेंकटेशुनि कोंड''

अर्थात मुझे श्री वेंकटेश्वर के सप्तगिरियों के दर्शन हुए। यह पहाड़ शृंगार नायक श्री वेंकटेश्वर का वास स्थल है। यह पहाड़ शेष के नाम पर प्रसिद्ध सोने की गिरि है। घोर पापों से भी मुक्ति दिलानेवाले पुष्करों को रखनेवाला पहाड़ है, स्मरण करने मात्र से मुक्ति दिलानेवाला पहाड़, पुष्प जातियों से विष्णु की पूजा करनेवाला पहाड़, पाँच कल्पवृक्षों से परिवेष्ठित पहाड़, तोते और कोयल मैत्री से कू-कू बोलनेवाला पहाड़, मृग जाति अपने वैर को छोड़कर मैत्री के साथ रहनेवाला पहाड़ है।

यह पहाड़ देवताओं का मूलाधार पहाड़ है। भक्तों के लिए यह पहाड़ प्रत्यक्ष देव है। नेत्रों भर देखने से ब्रह्मांड जैसा लगनेवाला पहाड़ है। ऐसे पहाड़ को मैंने देखा है।

'पडि कावलि' महाद्वार के सामने भक्ति से विनम्र मुद्रा में खड़े होकर वेंगमांबा ने श्री वेंकटेश्वर को नमस्कार किया। दक्षिण माड वीथि से मंदिर की परिक्रमा पूरा करके वेंगमांबा स्वामी पुष्करिणी के समीप पहुँच गयी। पुष्करिणी में डुबकी लगाकर भू-वराह स्वामी के दर्शन किए। तदुपरांत महाद्वार से प्रवेश करके श्रीनिवास की सन्निधि पहुँच गयी।

करोडों लोगों के पुण्यफल के रूप में विराजित स्वयंभु अर्चामूर्ति के दर्शन को भक्ति परवश में डूबकर वेंगमांबा ने नेत्रपर्व के रूप में आस्वाद किया। उस संदर्भ में उन्होंने ऐसी प्रार्थना की।

"हे! अखिलांड कोटि ब्रह्मांड नायक! हे श्रीनिवास! प्रभु! तुम्हारी सन्निधि में तुम्हारी सेवा करते हुए जीवन बिताने के लिए आयी हूँ। हे आनंदनिलया! हे आर्त परायण! हे गोविंदा! आज्ञा नहीं दोगे?"

अर्चकों के द्वारा दिए गए पुण्य तीर्थ को ग्रहण करके, प्रसाद को आँखों पर लगाकर बड़े प्रेम से उसे खाकर, आनंद निलय की परिक्रमा करते हुए, विमान वेंकटेश्वर को तथा उसके सोने के शिखर के बड़े आनंद से दर्शन किए। संतोष के साथ और संतृप्ति के साथ उस दिन पूरा गोविंद नाम स्मरण करती हुई मंदिर में ही काट दिया।

अलिमेलु मंगम्मा की अनुमति

रात के समय हजार खंभेवाले मंटप के एक कोने में बैठकर स्वामी का ही ध्यान करते हुए वेंगमांबा थोड़ी देर के लिए सो गयी। भोर सुबह सपने में स्वामी का साक्षात्कार हुआ, तब उन्होंने आदेश दिया -

"मेरा ध्यान करने के कारण मैंने तुमको बुलाकर दर्शन करने का सौभाग्य दिया। इसी क्षेत्र में स्थायी रूप से वास करने के लिए अलिमेलु मंगा की अनुमति चाहिए।"

वेंगमांबा का सपना तुरंत टूट गया। सपने में स्वामी के द्वारा हुए आदेश 'अलिमेलु मंगा की अनुमति' को बार-बार रटते हुए शौच से निवृत्त होकर सुप्रभात के समय स्वामी की सन्निधि में गयी। श्री वेंकटेश्वर को प्रणाम किया। उनके वक्षस्थल पर स्थित अलरमेल मंगम्मा से आर्ध हृदय के साथ आशु के रूप में निम्न पद गाकर उनसे प्रार्थना की -

'अम्मा! ने निंदुंडुदुनटवे?
श्री अलमेल्मंग! नन्नादरिंचे वटवे? ।। पल्लवि ।।

अदियेमो कानि, विभुडु निन्नडिगि
नन्निंदुंडुमनि चेप्पिनाडू
सदय दृष्टिनि नन्नु चूडू
गद्गति गोरुचु ने निंदुंडे निपुडू ।। अम्मा ।।

ए देशमुलु तिरुग लेनू, खंड
वादुलतो पेक्कु वादिंचलेनू
मेदिनींद्रुल पोगडलेनू, धनमु
मेंडुगा गूर्चि दानमु चेय लेनू ।। अम्मा ।।

तनुवू ने नलइंचलेनू, कष्टमुल
कोर्वजाला, नेनेमि चेयुदुनू?
जन संघमुन निलुवलेनू, ई
स्थलमुन मी महिम सलुपुचुंडेदनू ।। अम्मा ।।

तरिगोंड नारसिंहुडइना शेषाच
लेंद्रुनि दापु जेरुदुना?
करुणिंचि सेलविम्मी! चाला, मी
परम पदंबुल भाविंचुदाना ।। अम्मा ।।'

अर्थात हे माई! अलिमेल मंगा! मैं यहाँ रहना चाहती हूँ। मैं यहाँ रहूँ क्या? क्या कारण है मैं नहीं जानती कि तुम्हारे नाथ ने तुझसे पूछकर मुझे यहाँ रहने के लिए कहा है। दया से मेरी ओर देखो। सद्गति की इच्छा से मैं यहाँ रहना चाहती हूँ। हे माई! मैं अब दूर दराज देश घूम नहीं सकती हूँ। दूसरों से वाद-विवाद भी नहीं कर सकती हूँ। आपके नाथ को छोड़कर अन्य की प्रशंसा नहीं कर सकती हूँ। धन

इकट्ठा करके दान नहीं कर सकती हूँ। हे माई, मेरा शरीर भी जीर्ण होता जा रहा है। कष्ट सहन नहीं कर सकती हूँ। अब मैं क्या करूँ? जन समाज में अकेली रह नहीं सकती हूँ। यहीं पर रहते हुए आपकी महिमा का गायन करती रहती हूँ। हे माई, तरिगोंड नारसिंह रूपधारी श्री शेषाचलेंद्र की छत्रछाया में शरण ले लूँ? मुझ पर कृपा करके बताइए? ऐसा करने पर मैं आपके चरणों को ही परमपद मानूँगी। हे माई!''

महंत का आदर

उस समय आत्माराम नामक एक सज्जन आदमी तिरुमल में स्थित हाथीराम जी मठ के अधिपति के रूप में था। उनके सेवक तिरुमल में संचरण करते हुए रोजाना उनको समाचार पहुँचाया करते थे।

वायल्पाड के तरिगोंड गाँव से आयी वेंगमांबा नामक एक युवति भक्ति के साथ मंदिर में रहते हुए, गीत गाते सुनकर, उनके द्वारा दिए जानेवाले प्रवचनों को सुनकर, वह स्वामी की सेवा करते, तिरुमल में रहने के उद्देश्य से उसके आने के उद्देश्य को जान लिया। यह समाचार जाकर तुरंत उन्होंने महंत को दिया।

उस रात को अलिमेल मंगम्मा ने महंत आत्माराम को सपने में दर्शन देकर, वेंगमांबा को आश्रय देने का आदेश दिया। उसके अगले दिन ही स्वामी के मंदिर में, पुष्करिणी की ईशान दिशा में पूरब माडा वीथी के अंत में पत्थर के रथ के दाएँ तरफ रहनेवाली कुटीर को महंत ने वेंगमांबा के लिए निवास के रूप में प्रबंध कर दिया। इसके अतिरिक्त श्रीनिवास की रसोई से वकुल मालिका के नाम पर 'होर वेच्चम' (पंद्रह दिनों के लिए आवश्यक सामान) सामान को भी वेंगमांबा की कुटीर पर भिजवाने का प्रबंध करवाया। उसके बाद

महंत आत्माराम ने स्वंय मंदिर पर जाकर वेंगमांबा के दर्शन किए। अलिमेल मंगा के आदेश पर अपने द्वारा किए गए पूरे प्रबंध के बारे में वेंगमांबा को बताया। वेंगमांबा को स्वयं साथ लेकर उन्हें कुटीर सौंप दिया। (आत्माराम दास के महंत के रूप में रहते समय ही बहुत बचपन में तरिगोंड वेंगमांबा तिरुमल पहुँच गयी थी। उसके बाद, सुदीर्घ काल तक उनके जीवन काल में तीन महंतों की प्रशंसा भी वेंगमांबा ने प्राप्त की है। उन तीनों महंतों के नाम निम्न हैं। 1. हरिराम दास (1785-1796), 2. जानकीराम दास (1796-1813), (रात के समय मंदिर में ही छिपकर वेंगमांबा के द्वारा स्वामी की पूजा करने को पहचाननेवाला महंत यही है) 3. गोवर्धन दास (1813 से) इस महंत के समय ही 1817 में ही वेंगमांबा ने सजीव समाधी के द्वारा श्री वेंकटेश्वर स्वामी में साइज्य को प्राप्त किया।) इस प्रकार महंत के कारण अलिमेल मंगा के अनुग्रह को प्राप्त करनेवाली वेंगमांबा ने उस दया स्वरूपिणी की मन भर स्तुति की।

वेंगमांबा अपनी कुटीर में रहते समय स्वयं खाना बनाकर, स्वामी को नैवेद्य चढ़ाकर, एक ही बार खाना खाया करती थी। बाकी समय में तुलसी मालाएँ, पुष्पों से मालाएँ बनाकर मंदिर जाकर स्वामी को समर्पित किया करती थी।

भक्तिपूरक योग साधना के साथ-साथ तरिगोंड में रहते समय जिस रूप में किया करती थी उसी रूप में ग्रंथ रचना करके स्वामी को समर्पित करने की बात पर विचार कर रही थी। उसके लिए आवश्यक अनुकूल शक्ति और उपायों को अनुग्रह करने के लिए हर समय श्रीनिवास से आर्ति के साथ वे प्रार्थना किया करती थी।

आत्माराम महंत के द्वारा वेंगमांबा को प्रदत्त कुटीर के चिह्नों के बारे में हाल ही में अर्थात 1985 साल तक समाचार प्राप्त हुआ था।

तदुपरांत तिरुमल के आधुनिकीकरण के संदर्भ में हुए कई परिवर्तनों के साथ-साथ वेंगमांबा की कुटीर के चिह्न भी परिवर्तित हुए हैं। इसलिए जहाँ पहले वेंगमांबा की कुटीर थी, अर्थात आज के राम बगीचा अतिथि गृह के पिछवाड़े में आज एक इमली का पेड़ (तिरुमल क्षेत्र का स्थल वृक्ष) और गणेश का मंदिर ही आज चिह्नों के रूप में बचे हुए हैं।

श्रीनिवास के मंदिर के समीप में हयग्रीव स्वामी का मंदिर है। वेंगमांबा के तिरुमल पर पहुँचने से लेकर इस हयग्रीव स्वामी की आराधना करती रही है। उस स्वामी ने उनकी निर्मल भक्ति को जानकर बहुत कम समय में ही स्वच्छ धवलाकृति में दर्शन दिए। 'मदभावमंदु वसिंचि, लेस्सयगु शब्दश्रेणी' का अनुग्रह करने की याचना वेंगमांबा ने बहुत आत्मीयता के साथ उस बाग्धीश्वर से की थी। अक्षर शारदा साक्षात्कार से तरिगोंड में कवयित्री के रूप में नाम कमानेवाली वेंगमांबा, हयग्रीव स्वामी के करुण-कटाक्ष से तिरुमल में महा कवयित्री के रूप में प्रकाशित हुई।

विष्णु पारिजात की रचना

जिस तरफ देखो उस तरफ नंदनवन, उन फूलों के बगीचों के बीच में आनंद निलय में भक्तों की प्रार्थनाओं को सुनने के लिए स्वयंभु अर्चा मूर्ति के रूप में बसे श्री वेंकटेश्वर स्वामी - इस रूप में इस सुंदर प्रशांत पवित्र वातावरण को देखकर पुलकित होनेवाली वेंगमांबा के कविता-हृदय को स्वामी आश्रित परिजात के रूप में लगे। उस पवित्र भावना से प्रेरित होने से ही इस कवयित्री ने ''विष्णु पारिजात'' नामक यक्षगान की रचना की। उसे स्वामी श्री वेंकटेश्वर और तरिगोंड नृसिंह को अभेद मानते हुए उन्हें समर्पित किया।

''विष्णु पारिजात'' का मतलब श्री वेंकटेश्वर रूपधारी श्री महाविष्णु नामक पारिजात वृक्ष है।

श्री कृष्ण के द्वारा सत्यभामा के लिए स्वर्ग लोक से पारिजात नामक वृक्ष को ले आना, इसकी कथा है। यह कथा काफी कुछ द्वारका के उद्यान वनों में घटित है, ऐसा कवयित्री ने रचा है।

कथा नायक श्रीकृष्ण को तथा श्री वेंकटेश्वर को इस नाटक में अभेदकत्व की स्थापना करके इसकी रचना की गयी है। इसलिए इस नाटक में उस समय के तिरुमल मंदिर की कुछ विशेषताएँ परावर्तित हुई हैं। विष्णु पारिजातम यक्षगान तेलुगु में विकसित यक्षगानों में सर्वाधिक श्रेष्ठ मणी के रूप में भासित है।

ताळ्ळपाक वंशजों का स्वागत

तिरुमल क्षेत्र में संकीर्तनाचार्य के पद पर शोभित अन्नमाचार्य के वंशज वेंगमांबा की भक्ति की महिमा को जान कर और उनके काव्य वैशिष्ट्य को मान कर बहुत प्रसन्न हुए। अपने नंदवरीक शाखा से ही संबंध रखनेवाली स्त्री है, इस अभिमान से और आदर के साथ उत्तर माडा वीथी में उन्होंने अपने निवास गृह के बगल में एक छोटे मकान को वेंगमांबा को मुफ्त में दे दिया।

इसलिए वेंगमांबा अपनी कुटीर को छोड़कर ताळ्ळपाक वंशजों के दिए मकान में रहने लगी। उस मकान के पिछवाड़े में तुलसी वन को पालकर श्री वेंकटेश्वर की पूजा तुलसी मालाओं और फूल मालाओं से करने लगीं। ताळ्ळपाक वंशजों के पड़ोस में रहने के कारण उन वंशजों के द्वारा रची गयी रचनाओं से परिचित होने का उन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ।

वेंगमांबा के ताल्लपाक वंशजों के मकान में बसने के कुछ दिनों में घर में अपनी सहायता करने के लिए अपनी बहन की बेटी मंगम्मा को अपने पास रख लिया। तदुपरांत कुछ समय के बाद तरिगोंड के अपने पीहर में रहनेवाली देवतार्चन-सामग्री को तिरुमल के अपने निवास में ले आयी।

रमा परिणय (श्रीनिवास के विवाह गीत)

ताल्लपाक कवियों की रचनाओं में अन्नमय्या की धर्मपत्नी तिम्मक्का (तिरुमलांबा) के द्वारा रचित 'सुभद्रा कल्याण' नामक विवाह गीत ने वेंगमांबा को विशेष रूप में आकर्षित किया। तदनुसार उन्होंने 'रमा परिणय' (विवाह गीत) नामक रचना को रचा।

सागर राजा की पुत्री रमादेवी से (लक्ष्मी देवी) श्री वेंकटेश्वर का विवाह इस रचना का इतिवृत्त है। 'मधुर कविता सरस्वती' मानी जानेवाली वेंगमांबा ने सिर्फ 400 द्विपद छंदों में तेलुगु देशी कविता के रूप में संप्रदाय का निर्वहण करते हुए अति मनोहर रूप में सुंदर शैली में रमा परिणय को रचा है।

तालपत्र ग्रंथों की प्रतियाँ लिखनेवाले लेखकों के द्वारा इस 'विवाह गीत' काव्य के लिए 'स्वामी का विवाह' नाम भी व्यवहार में प्रचलित हो गया है।

पांडव तीर्थ

स्वामी के मंदिर के ईशान दिशा में आधी मील की दूरी पर 'पांडव तीर्थ' नाम का एक पुण्य तीर्थ है। माना जाता है कि द्वापर युग में इस पुण्य तीर्थ में पांडवों ने स्नान किया। तदुपरांत श्री वेंकटेश्वर के दर्शन किए। श्री वेंकटेश्वर के अनुग्रह से ही उन्होंने शत्रुओं पर

विजय हासिल की। तद्वारा साम्राज्य भोगों को भी प्राप्त किया। इसलिए इस तीर्थ का नाम ''पांडव तीर्थ'' प्रचलित एवं सार्थक हो गया।

मान्यता है कि श्री वेंकटेश्वर स्वामी ने वेंगमांबा को एक बार वचन दिया था कि वेंगमांबा के द्वारा भक्ति से पकाये खाने को एक बार पांडव तीर्थ में मैं खाऊँगा। इसलिए अत्यंत रुचिकर भोजन को वेंगमांबा पूरी भक्ति के साथ पकाकर ले जाकर पांडव तीर्थ के प्रशांत वातावरण में एकांत स्थल में स्वामी को परोसा करती थी। अपने मधुर कंठ से गीत गाते परोसा करती थी। स्वामी अत्यंत आनंद के साथ वेंगमांबा के द्वारा परोसे गये खाने को पूरे आस्वाद के साथ खाया करते थे।

हर दिन कुछ नये पदार्थों को तैयार करके अपनी टोकरी में रखकर वेंगमांबा कहाँ ले जा रही है और किसे खिला रही है, मंदिर के अधिकारीगणों ने यह जानना चाहा। कुछ अधिकारी एक दिन उन्हें बिना बताये वहाँ जाकर, पांडव तीर्थ प्रांत में झुरमुठ की आड़ में बैठ कर देखने लगे।

उस समय एक असाधारण आकार वाला एक बाघ भयानक गर्जन करते हुए वेंगमांबा के सामने बड़ी तेजी से कूद कर जहाँ अधिकारीगण बैठे थे, उन्हें टकराते हुए भाग निकला।

इस भयानक घटना से अधिकारीगण भयभीत होकर कांपते हुए वहीं झुरमुट में गिर कर बेहोश हो गए। काफी समय तक वे होश में नहीं आ सके। अपने आंतरंगिक भक्तिन की परीक्षा लेने की कोशिश करनेवाले अधिकारी को स्वामी ने इस प्रकार बाघ के रूप में दिखाई

देकर डराया। स्वामी ने इस रूप में उन्हें तीव्र ढंग से सावधान भी किया। ऐसा वे अवगत हो गए। उस दिन से उन्होंने वेंगमांबा के प्रति अत्यंत भक्ति और आदर दिखाना शुरु किया।

श्रीनिवास के तत्व तथा महिमा को जाननेवाली भक्त शिरोमणी वेंगमांबा तो वैसे ही रोजाना की तरह अपनी आराधना विधि को यथाढंग से आगे बढ़ाती रही।

अक्कराम वेंकट्राम दीक्षित

वेंगमांबा के मकान के बगल में पश्चिम की ओर अक्काराम वेंकट्राम दीक्षित नामक सरकारी-अर्चक (ईस्टिंडिया कंपनी की ओर से नियुक्त अर्चक) रहा करता था। वह संपन्न, बहु-परिवार का और वैखानस अर्चक संगठन के अधिपति होने के कारण उस समय तिरुमल क्षेत्र में अत्यंत प्रचलित और अधिकार प्राप्त व्यक्ति था।

अपने लोगों से तजी हुई और गाँव छोड़ कर आयी एक युवती को, वह भी पूर्वाचारों के प्रति विद्रोह करनेवाली महिला, वेंकटाचल पुण्य क्षेत्र में भक्तिन के रूप में तथा कवयित्री के रूप में नाम पाना उसके अहं के लिए अच्छा नहीं लगा। इसके अतिरिक्त वेंगमांबा रोजाना तुलसी मालिकाओं से स्वामी के मंदिर में जाकर समर्पित करती थी। ऐसी स्त्री अपनी पड़ोसिन के रूप में, वह भी स्वयं अपने कामों में व्यस्त होकर दूसरों की परवाह नहीं करनेवाली, ऐसी वेंगमांबा की आदतें उसे अच्छी नहीं लगीं।

इसलिए वह अपने घर पर आने वाले लोगों से, वेंगमांबा को अच्छी तरह सुनायी पड़े, ऐसे स्वर में परिहास से भरी चुगलखोरी

करता था। परम शांत स्वभाव रखनेवाली वेंगमांबा उन बातों को सुन कर अनसुना करती थी। सब कुछ ईश्वरेच्छा समझकर वे सदा भगवान के ध्यान में रहा करती थी।

अधिकार का गर्व करनेवाले वेंकट्राम दीक्षित ऐसे चुप रहनेवाला नहीं था। अपने घर के जूठे पत्तलों को वेंगमांबा के मकान के पिछवाड़े में फूलों के पौधों पर गिराया करता था। इससे वह आनंद का अनुभव करता था। इसे लेकर वेंगमांबा के द्वारा उस घरवालों को कितनी ही बार बताने के बावजूद भी कोई फायदा नहीं हुआ। इसलिए उन जूठे पत्तलों को स्वयं चुनकर, नित्य तुलसी आदि फूलों के पौधों को स्वयं साफ किया करती थीं।

एक दिन संध्या के समय वेंगमांबा घर के पिछवाड़े में तुलसी मंटप के तट पर बैठकर, श्रीनिवास के ध्यान में मग्न हो गयी थी और तन्मय होकर निश्चल बैठी थी। उस रूप में कितने समय के लिए बैठी थी किसी ने उस ओर ध्यान नहीं दिया था। इतने में दीक्षित जी के घर में रात का भोजन पूरा करके रोजाना की तरह जूठे पत्तलों को वेंगमांबा के मकान के पिछवाड़े में फेंका गया। वे जूठे पत्तल सीधे वेंगमांबा की गोद में, पैरों पर गिरने से वेंगमांबा का ध्यान-भंग हो गया। इसके पहले कभी भी वेंगमांबा को गुस्सा नहीं आया था। शायद इसमें ईश्वरीय प्रेरणा थी। वेंगमांबा ने आवेश के साथ दीक्षित जी के मकान की ओर देखते हुए शाप दिया कि ''री! पापी! तुम्हारे वंश का नाश हो!''

उनके शाप प्रभाव से उस परिवार के कई सदस्यों को उस रात भर उल्टियाँ होती रही। दस्त भी होते रहे। शीघ्र ही सभी का देहांत

हो गया। तब अक्करामय्या ने दौड़कर आकर वेंगमांबा के पैरों पर गिर कर दुःख प्रकट करते हुए, शाप को वापस लेने की दीनता से प्रार्थना की।

परम साधु स्वभावी योगीश्वरी वेंगमांबा ने इस पूरे को वेंकटरमण की लीला के रूप में माना। ''तुम पश्चाताप से पुनीत हो गये हो। अब आगे तुम्हारे वंश में सिर्फ एक प्राणी बचकर ही रहेगा।'' ऐसा अपने शाप को उन्होंने थोड़ा कम करके दीक्षित जी को वापस भेजा।

तुंबुर घाटी में तप

स्वामी के संकल्प से उपर्युक्त घटित घटना के बाद वेंगमांबा का मन विचलित हो गया। इसलिए विजन स्थल में प्रशांत चित्त के साथ तप करने की इच्छा उनको हुई। इसके लिए अनुकूल प्रदेश बताने की तीव्र-प्रार्थना उन्होंने स्वामी से की। तिरुमल मंदिर से दस-बारह मील दूरी पर स्थित तुंबुर घाटी परम रमणीय एकांत प्रदेश है। इसके पहले एक बार तिरुमल यात्रा के दौरान पौर्णमी (तुंबुर तीर्थ मुक्कोटी) के दिन वेंगमांबा ने उस स्थल को देखा था। उस समय वे तुंबुर तीर्थ से तिरुमल लौटते समय क्रूर जंगली मृगों से स्वयं राम-लक्ष्मण ने ही उनकी रक्षा की थी, ऐसा उन्होंने एक गीत में प्रस्तुत किया है।

(देखिए-करूणामूर्तुलु राम लक्ष्मणुलु कापाडिरि नन्नू-नामक चौथा कीर्तन, नवरत्न कीर्तन)

श्रीनिवास स्वामी! सेलवीयवय्या!
नाना प्रकारमुल ननु गाववय्या!
नेलवुगा ना तोडु नीडवै ना वेंट
वलनुगा नीवु रावलयु नच्चटिकी,

नीवु संकल्पिंचि निलुपु चुंडिन चोट
ने वसिंचुट नाकु निष्करुष गनुका
श्रीनिवास स्वामी! सेलवीयवय्या!
ना ना प्रकारमुल ननु गाववय्या!

अर्थात हे श्रीनिवास स्वामी! मुझे आज्ञा दे दो! कई रूपों में नाना प्रकार से मेरी रक्षा करो! सदा मेरे साथ रहते हुए मेरी रक्षा करते हुए मेरे साथ वहाँ पर तुमको आना पड़ेगा। जिसे तुमने बताया है वहाँ पर मुझे रहना पसंद है। इसलिए हे श्रीनिवास स्वामी! मुझे आज्ञा दो! नाना प्रकार से मेरी रक्षा करो!

इस रूप में गीत गाते हुए किसी को बिना बताये तत्काल वेंगमांबा तुंबुर घाटी पर चली गयीं। वहाँ के पहाड़ी गुफाओं में एक में वास करते हुए तीव्र तप करना आरंभ किया। ब्रह्मचर्य नियम रखनेवाले, प्राणायाम, तप करनेवाले ही वहाँ रह सकते हैं, बाकी लोग वहाँ रह नहीं सकते हैं। ऐसा वेंगमांबा के सौ साल के बाद तुंबुर घाटी के गुफा में तप करनेवाले महर्षि और सद्गुरु मलयाल स्वामी ने स्वानुभवपूर्वक बताया है। इससे वेंगमांबा के तप करने की शक्ति का अंदाजा लगाया जा सकता है।

वेंगमांबा ने तुंबुर घाटी में लगभग पांच सालों तक तीव्र तप-साधना की थी। वहाँ की गुफा से तिरुमल श्रीनिवास स्वामी के गर्भगृह मंदिर तक एक रहस्य बिल मार्ग हुआ करता था। इस रहस्य मार्ग के बारे में पहले स्वामी ने ही वेंगमांबा को बताया था। नित्य आधी रात बीत जाने के बाद इसी बिल मार्ग से वेंगमांबा वेंकटेश्वर की सन्निधि पर पहुँच कर भक्ति-प्रपत्ति के साथ आराधना करके लौटती थी। रात के समय अर्चक स्वामी के द्वारा पहनायी गयी फूल-मालाओं को निकाल कर तुंबुर घाटी में स्वयं संग्रह करनेवाली तुलसी, पुष्प

मालिकाओं से बहुत प्रेम के साथ स्वामी को समर्पित करके गीत गाकर उन्हें प्रसन्न किया करती थी।

रात के समय स्वामी को पहनायी गयी मालाओं के बदल जाने के विषय को अगले दिन प्रातःकाल ही अर्चक स्वामियों ने पहचान लिया। संभ्रम और आश्चर्य चकित हो इसके बारे में तुरंत महंत को उन्होंने समाचार दिया।

इसलिए महंत ने उस दिन रात को मंदिर में ही रह कर इसके बारे में पता लगाना चाहा। स्वयं मंदिर के अंदर रह कर अर्चक स्वामियों के द्वारा मंदिर के दरवाजों को बंद करवाया गया। गर्भालय के दरवाजे पर लगे छोटे रंध्र के द्वारा एकाग्र चित्त होकर स्वामी की तरफ देखते बैठ गया। आधी रात होते ही स्वामी की सन्निधि के सामने एक बिल खुल गया। उस बिल से एक नए प्रकाश के साथ दिव्य परिमल के साथ वेंगमांबा ऊपर आ गयी। उनके हाथों में जंगल में इकट्ठा किए हुए फूल और फल थे। उन फूल-मालाओं से स्वामी का अलंकरण करके फलों को उन्हें निवेदन करके उस भक्तसुलभ स्वामी की प्रार्थना करके फिर वे लौट गयीं।

तरिगोंड वेंगमांबा पर श्री वेंकटेश्वर स्वामी के इस अटूट आदर को देखकर महंत आश्चर्यचकित हुए। विस्मय में कुछ बोल पाने में असमर्थ रह गये। (मंदिर में छिप कर वेंगमांबा को देखनेवाले महंत का नाम जानकीराम दास जी है (1706-1813)

अगले दिन सुप्रभात सेवा के अनंतर मंदिर में प्रवेश करनेवाले अर्चक स्वामियों ने महंत को स्वस्थ करके कारण के बारे में पूछा। कुछ समय पश्चात महंत ने स्वस्थ होकर भावुकता में वेंगमांबा के द्वारा स्वामी के दर्शन और अर्चना करने की बात बतायी।

सरकारी अर्चक वेंकट्राम दीक्षित को शाप देने के पश्चात वेंगमांबा स्वामी में लीन हो गयी समझनेवाले तिरुमल वासियों ने वेंगमांबा गुप्त रूप से शेषाचल जंगल में रहते हुए रात के समय रहस्य मार्ग से आकर स्वामी की पूजा करने की इस विधि को जान लिया। तब से वे वेंगमांबा के लिए शेषाचल पहाड़ में तलाशने लगे।

उस दिन से वेंगमांबा की इच्छा के अनुसार श्री वेंकट रमण ही तुंबुर घाटी पर जाकर अपनी भक्तिन से आराधना और अर्चना स्वीकारने लगे। वेंकटेश्वर के तुंबुर घाटी जाने की बात को कवयित्री ने अपने ''चेंचु नाटकमु'' नामक यक्षगान में सुंदर रूप से चित्रण किया है।

चेंचु नाटक

वेंगमांबा ने इस यक्षगान को तुंबुर घाटी में रहते समय लिखा है। तुंबुर घाटी में वास करनेवाले अनुसूचित आदिवासियों का जीवन-वृत्तांत इसमें वर्णित है। यहाँ के अनुसूचित जनजातियों के जीवन विधान के आधार पर कवयित्री ने इस कहानी की कल्पना की है।

तरिगोंड नृसिंह की पत्नी चेंचु लक्ष्मी है। उसकी बहन एक चेंचु (अनुसूचित जन जाति) युवती है। वह युवती विंध्या पर्वत से आये चेंचु युवक के साथ विवाह करके, तुंबुर घाटी के अंदर अनुसूचित लोगों के मुहल्ले में वास किया करती थी।

वह युवती एक दिन अपने पुत्र को साड़ी की पल्लू में बांध कर अपने पति की तलाश करते हुए श्रीनिवास के मंदिर के पास पहुँचती। श्रीनिवास के मंदिर के द्वार पालक जय विजयों के साथ बात करती

है। उन द्वार पालकों के द्वारा किए गए प्रश्नों के जवाब के रूप में अपनी कुल-जाति के बारे में, वास करनेवाले स्थल, विहार करने के प्रदेश, विवाह आदि आचार व्यवहार के बारे में बहुत अच्छे ढंग से बताती है। मुख्य रूप से तुंबुर घाटी में शेर-गाय, सिंह-हाथी, गरुड पक्षी, सर्प आदि पशु अपने सहज वैरता को भुलाकर मिल-जुलकर संचार करते हुए वास करने की बात वह युवती जय-विजयों को बताती है।

वह युवती चेंचिता तुंबुर घाटी पर समय-समय पर आनेवाले श्री वेंकटेश्वर के रूप का अत्यंत सहज रूप में वर्णन करती है। साथ ही अनुसूचित मुहल्ले के लोग उनकी आराधना कैसे करते हैं, उसके बारे में भी बताने लगती है। तब चेंचु नायुडु आखेट से लौट कर आता है।

वह श्री वेंकटेश्वर के दर्शन करने जानेवाली चेंचीता को रोकता है। अपनी भूख को मिटाने के लिए कुछ खाने के लिए व्यवस्था करने की बात कहता है। चेंचीता अपने पुत्र को उसके हाथों में सौंप कर कंद मूल लाने के लिए जंगल में चली जाती है। तब एक शेर आकर चेंचु नायुडु को डराकर पुत्र को उठाकर ले जाता है।

चेंचीता लौटकर अपने पुत्र के बारे में चिंता करने लगती है। ''मुह पर ताला लगाकर, कदम-कदम पर प्रणाम करते हुए, गंडादीप सर पर उठाकर, तुम्हारे दर्शन करूँगी। मेरे पुत्र के द्वारा हुंडी में धन डलवाऊँगी, लुढ़कन-प्रणाम कराऊँगी।'' वह श्री वेंकटेश्वर को लेकर ऐसी मनौती करती है। शेर के मुँह से अपने पुत्र को बचाने की प्रार्थना करती है। स्वामी चेंचीता के पुत्र को शेर के मुँह से बचाकर उसे सौंपता है। चेंचीता अपनी सारी मनौतियों को पूरा करके अपने पुत्र और पति के साथ तुंबुर घाटी के अपने मुहल्ले में पहुँच जाती है।

प्राचीन काल में तुंबुर, अगस्त्य आदि महर्षियों का कार्य स्थल पवित्र तुंबुर घाटी थी। तदुपरांत अनेकों मुनियों की आश्रय-भूमि भी तुंबुर घाटी रही। परम योगिनी तरिगोंड वेंगमांबा ने अपनी तपोभूमि तुंबुर घाटी और तुंबुर तीर्थ का वर्णन इस यक्षगान में चेंचु युवती के माध्यम से अत्यंत सहज रूप में किया है।

कोढ़ी रोगी चंद्रशेखर (पुष्करिणी)

कांचीपुरम के प्रदेशवासी चंद्रशेखर नामक एक विप्र अपने प्रारब्धवश कोढ़ी बीमारी का शिकार हुआ। अपने बंधुओं के द्वारा निष्कासित होकर और लोगों से असह्य का शिकार होकर जीवन से विरक्त हो गया। मानसिक रोग से शरीर त्यागने के पहले एक बार श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने का संकल्प किया। बहुत कष्ट उठाकर तिरुमल पहुँच गया।

कोढ़ी से पीड़ित होने के कारण मंदिर के परिचारकों ने उसे मंदिर के अंदर जाने नहीं दिया। 'स्वामी के दर्शन करने में असमर्थ यह जिंदगी क्यों? किसलिए?' अपने जीवन पर इस रूप में विरत होकर वह जंगल में घूमघाम करते हुए भटककर अनजान में तुंबुर घाटी में पहुँच गया।

भूख, प्यास के बढ़ने से आगे बढ़ नहीं सका। स्वामी की कृपा के लिए जानेवाले उसके आर्तनाद प्रशांत उस घाटी में प्रतिध्वनित होने लगे। उस समय अपनी गुफा के सामने खड़ी वेंगमांबा ने उसके आर्तनाद को सुन लिया। उन्होंने उस पर दया करते हुए स्वामी को समर्पित फलों को और पेय जल को देकर उस कोढ़ी को आराम दिया।

'वेंकटरमण की दया से तुम स्वस्थ्य हो जाओगे। किंतु तुमने मुझे यहाँ पर देखा है, ऐसा किसी से मत बताना। अगर तुम बताओगे तो तुम्हारे लिए खतरा होगा। अब आँखे बंद करो।' इस रूप में वेंगमांबा ने विप्र को सचेत किया।

चंद्रशेखर के नेत्र खुलते ही स्वामी की पुष्करिणी से वह ऊपर उठ रहा था। वहाँ स्नान करनेवाले यात्री पानी से ऊपर आनेवाले इसे देखकर आश्चर्यचकित हुए। कोई तपस्वी या सिद्ध पुरुष होंगे, ऐसा उन्होंने समझ लिया। इसलिए उसे फल-पुष्प आदि समर्पित करके सत्कार किया। पुष्करिणी से बाहर निकलने के कारण उसे पुष्करिणी नामक नाम से पुकारने लगे।

तिरुमल में वह कुछ दिनों के लिए गंभीर और मौनी के रूप में ही रहा। तिरुमल वासियों के आदर का पात्र होकर कुछ ही दिनों में पूर्ण स्वस्थ होकर गर्व से वेंगमांबा को दिए वचन को भूलकर वेंगमांबा के बारे में उनको बता दिया। तुरंत वेंगमांबा के वचन के अनुसार फिर रोगी होकर कालकवलित हो गया।

स्वामी की पुष्करिणी के पश्चिमी तट पर आदि वराह स्वामी के मंदिर के समीप चंद्रशेखर के मरने की जगह पर बाद में बनाये गए बृंदावन (तुलसी मंटप) के पास औंधे मुँहवाली प्रतिमा काफी समय तक (1963 तक) पायी गयी थी।

पुनः तिरुमल लौटना

वेंगमांबा तुंबुर घाटी में तप कर रही है, इसके बारे में चंद्रशेखर से तिरुमल वासियों को पता चला। इसलिए महंत आदि कुछ अधिकारी और कुछ तिरुमल के नागरिक मंगल वाद्यों के साथ तुंबुर

घाटी में रहनेवाली वेंगमांबा की गुफा के पास गये। (वेंगमांबा के द्वारा यहाँ पर तप करने के कारण यह गुफा 'वेंगमांबा गवि' नाम से जनता में प्रचलित हो गया। इसी गुफा में ही चेन्नपुरी वासी श्री परांकुशदास जी नामक महानुभाव तथा इधर के महर्षि मलयाल स्वामी जी जैसे लोगों ने यहाँ पर तप करके आध्यात्मिक ऊँचाईयों को प्राप्त किया। इस गुफा के समीप ही 'सिद्धेश्वर गुफा' नामक एक और गुफा भी है। ऐसी प्रतीति है कि इस गुफा में सिद्ध पुरुष श्रीनिवास परब्रह्म को लेकर तप करते रहते हैं।)

''माई! फिर से तिरुमल लौटकर हम सबको धन्य बनाइए!'' इस रूप में उन्होंने अत्यंत भक्ति और प्रपत्ति के साथ वेंगमांबा से प्रार्थना की।

तिरुमलवासियों की सविनय प्रार्थना को श्रीनिवास के आदेश के रूप में लेकर वेंगमांबा उनके साथ तिरुमल लौट आयी। ताल्लपाक वंशजों के बगल में अपने निजी वास को फिर पहुँच गयी। तुरंत पिछवाड़े के तुलसी मंटप के तट पर एक पैर पर खड़े होकर आनंद निलय विमान शिखर पर मन केंद्रित करके उसे एकटक देखते हुए आशु के रूप में 'श्री वेंकटेश्वर कृष्णमंजरी' नामक अतिमनोहर स्त्रोत्र को तन्मयता के साथ गान किया।

श्री वेंकटेश्वर कृष्ण मंजरी

श्री वेंकटेश्वर जी को कृष्ण मानते हुए भक्ति परवशता में गाये गए यह स्तोत्र गीत जनता में अत्यंत प्रचलित और प्रभावकारी कृति रत्न के रूप में विकसित हुई है।

कदम-कदम पर 'कृष्ण' मकुट के साथ संबोधन के साथ 114 द्विपद पंक्तियों में यह गीत नित्य पारायण करने की शैली में प्रचलित हुआ है।

आंध्र प्रदेश के विविध प्रदेशों में भक्त जन उनमें भी मुख्य रूप से महिलाएँ इस रमणीय स्तोत्र को नित्य अत्यंत श्राव्य रीति से गाते हुए आनंद का अनुभव करते देखी जाती थीं।

इस स्तोत्र गीत के अंतिम नौ द्विपदों में लिखित समर्पण, फलश्रुति आदि अंशों ने इस लघु कृति के लिए एक समग्र रूप दिया है।

''मंगल मलमेलु मंग चित्ताब्ज सारंग! इदे नीकु जय मंगलंबु'' (अर्थात हे अलिमेल मंगा के हृदयहारी! तुझे जय मंगल हो!'' इस रूप में यह लघु कृति श्रीवेंकटेश्वर की जय मंगल गाथा गाती है। कवयित्री के द्वारा बताया गया कि यह श्रीकृष्ण के मंत्र जप के समान है।

वेंगमांबा के बृंदावन और मठ

तुंबुर घाटी से लौटने के बाद वेंगमांबा ने अपने घर के उत्तर की दिशा में एक ऊँचे प्रदेश में एक विशाल स्थल का संग्रह किया। उस स्थल में पूरब की दिशा में एक कुँए को खुदवाया। फिर उस स्थल में तुलसी वन, फूलों के पौधे तथा कुछ फलों के वृक्षों को लगाया।

उस रूप में अपने द्वारा लगाये गए तुलसी वन को, बहुत पहले द्वापर युग में पवित्र यमुना नदी के तट पर श्री कृष्ण के द्वारा विहरित बृंदावन के रूप में अर्थ देने के लिए वेंगमांबा ने अपने इस वन को बृंदावन का नामकरण किया। क्रम क्रम से उस तुलसी वन के चारों

दिशाओं में कुटीर बनायी गयीं। उन कुटीरों में वेंगमांबा के आध्यात्मिक उपदेशों को सुनने के लिए आनेवाली साधु वनिताएँ तथा महिलामणियों के लिए ठहरने की व्यवस्था कर दी जाती थी।

उस फूल बगीचे के बीच में शिष्यों के द्वारा बनाये गए शिलातल पर परम योगिनी और कला तपस्विनी वेंगमांबा मोक्ष का चिंतन करती हुई या तुलसी मालाओं को चुनती हुई या ग्रंथ-रचना करती हुई सदा दिखाई देती थी। शिला तल पर उनके द्वारा ध्यान समाधि में रहते समय एक श्वेत नाग आकर (श्वेत नागेंद्र) अपना फण खोल कर उन्हें छाया दिया करता था, ऐसी मान्यता तिरुमल में थी। तिरुमल वासियों का यह भी विचार है कि वह नागेंद्र वेंगमांबा के समाधिस्त होने के बाद भी कुछ समय के पहले तक उस प्रदेश में संचरण करते हुए किसी को कोई हानि नहीं पहुँचाया करता था।

तुंबुर घाटी से तिरुमल पहुँचने के बाद इस कवयित्री माई की लेखनी से निकली सारी रचनाओं ने इसी दिव्य प्रशांत कुटीरों के मध्य में अक्षर रूप को प्राप्त किया। तिरुमल वासी वेंगमांबा के इस वृंदावन को ''तरिगणम्म तोटा'' (वेंगमांबा का बगीचा) ''तरिगोंडमम्म तोटा'' (तरिगोंड माई का बगीचा) कहा करते थे। प्रति शुक्रवार के दिन उनकी समाधि पर नारियल तोड़कर और कपूर हारती दिया करते थे। साथ ही पूजाएँ, मेले और परिक्रमाएँ करते मनौतियाँ मांगते थे। नए वस्त्र उनको समर्पित करके बाद में पहना करते थे। त्रिकरण शुद्धी के साथ विश्वास करके प्रार्थना करने वालों को वेंगमांबा माई स्वप्नादेश, संदेश दिया करती थी, ऐसी मान्यताएँ आज भी जनता में देखी जा सकती हैं। इस रूप में तिरुमल की महिलाएँ आज भी अपने अनुभवों को सुनाया करती हैं।

वेंगमांबा के द्वारा लगाये गए बगीचे को वृंदावन का नाम प्रचलित होने की तरह उन परम योगिनी और वे सन्यासिन होने के कारण उनके निवास स्थान के मकान को 'वेंगमांबा गारि मठमु' (वेंगमांबा जी का मठ) नाम प्रचलित हो गया। नृसिंह जयंती के उत्सावों के समय उनके द्वारा दिए जानेवाले अन्नदान कार्यक्रमों के आयोजन के लिए उस समय के जमींदार, संस्थानाधीशों ने अनेक दान पत्र ''मातृश्री तरिगोंड वेगमांबा के मठ के लिए'' स्पष्ट रूप से लिखकर उन्हें सौंपा है।

स्पष्ट शब्दों में अगर कहें तो वेंगमांबा के समय में स्थापित उनका मठ और वृंदावन दोनों तिरुमल पर आनेवाले यात्रियों के लिए संदर्शन करने के महत्वपूर्ण स्थल बन गए।

अष्ट लेखक

वेंगमांबा के द्वारा वृंदावन की स्थापना के बाद उनके मठ में ''अष्ट लेखक'' नाम से ताल पत्तों पर प्रतियों का लेखन कार्य करनेवाले आठ लेखक हुआ करते थे। ये आठों लेखक इस महाकवयित्री की प्रत्येक रचना की आठ प्रतियाँ तैयार करते थे।

उन प्रतियों के कारण और दूसरे आधारों के अनुसार उन लेखकों के कुछ नाम आज प्राप्त हो रहे हैं। वे नाम 1. गरिडि मिट्ट चिदंबरय्या का पुत्र नरसप्पा 2. पुदूर चंद्रशेखर पिल्लै 3. रत्नगिरि विठोबा पंत 4. गादमशेट्टी पुल्लय्या 5. भोजनपाटि अब्बय्या नायुडु।

उस समय वेंकटगिरि, श्री कालहस्ती, कार्वेटी नगर आदि संस्थानों के प्रतिनिधि, कूचिपूडि भागवत, पौराणिक लोग और आसक्ति रखनेवाले पाठक तिरुमल पर आकर वेंगमांबा से विनति करके श्री वेंकटाचल महात्म्यमु, श्री भागवतमु, विष्णुपारिजातमु, रमा

परिणयमु आदि रचनाओं की प्रतियों को भक्ति के साथ मांगकर ले जाते थे।

अम्मोरम्मा का कुआँ

वेंगमांबा अपने घर में तुलसी वन की स्थापना से ही संतुष्ट नहीं हुई। श्रीनिवास स्वामी के लिए और भी अधिक फूलों की मालाएँ, तुलसी मालाओं को संग्रहीत करने के लिए उन्होंने अपने वृंदावन की उत्तर दिशा में पापविनाशन तीर्थ जानेवाली पगडंडी के समीप कुछ दूरी पर थोड़ी जमीन को संग्रह किया। उस स्थल में और बड़े बगीचे को उगाने के उद्देश्य से पानी की सिंचाई के लिए एक बड़े कुएँ को खुदवाने का प्रयत्न किया। कुछ गहराई तक खोदने के बाद कुएँ में एक बड़ा-सा पत्थर पहाड़ की तरह आड़ा आ गया।

तब वेंगमांबा ने कुएँ में उतरकर आशु के रूप में गंगा भवानी को लेकर निम्न गीत में प्रार्थना की:

ओ तल्ली! गंगा भवानी! रावे!
ख्यातिगा इचटकि कपटमु मानी ।।ओ तल्लि।।

हरि पादमुन पुट्टिनावु; पुर
हरुनि जटाजूटमुन निलिचिनावु
परम पवित्रमैनावु, मा
पालिट वेलसि पूजलु गैकोन्नावु ।।ओ तल्लि।।

अर्थात हे माई गंगा भवानी! आओ री! कपट को छोड़कर अपने नाम को सार्थक करते हुए आओ री। हरि के चरणों में पैदा हुई। शिव भगवान के जटा-जूट में स्थिर रही। तुम अत्यंत पवित्र बन

गयी हो। हमारे भाग्य से यहाँ तुमने अपनी पूजाओं को स्वीकार किया है।

गीत के समाप्त होते ही तुरंत कुएँ के अंदर पत्थर में बड़ी दरार पड़कर कुछ भाग निकल आया। (वेंगमांबा के उपास्य देव श्री हनुमान ने ही अपने हाथों में कुदाल और फावड़ा लेकर एक वृद्ध के वेश में पधार कर उस पत्थर को तोड़ा। उसके बाद वेंगमांबा ने अलग से गंगा भवानी की प्रार्थना की। ऐसा एक और कथन प्राप्त होता है।) चारों ओर से काफी पानी रिस गया। इसके बारे में समाचार प्राप्त करके तिरुमल के निवासी ने उस परमयोगिनी के वचनों के प्रभाव की भूरी भूरी प्रशंसा की।

वेंगमांबा के द्वारा खुदवाया गया यह कुआँ एक छोटी पुष्करिणी की आकृति में होता है। यह कुआँ अम्मोरम्मा कुआँ (अम्मोरी बावि) नाम से लोक प्रचलित हो गया है। (उस समय तिरुमल आनेवाले यात्री वेंगमांबा के द्वारा गंगा की प्रार्थना करके आविर्भाव करने की वजह से उस कुएँ के पानी को पवित्र मानते हुए तीर्थ के रूप में स्वीकार करते थे।)

वेंगमांबा के कुएँ में खड़े होकर गंगा भवानी की प्रार्थना करते समय और पत्थर में दरार पड़ने पर, उसमें से निकले एक बड़े शिलाखंड को निकाल कर ले आकर उनके शिष्यों ने वेंगमांबा की महिमा के मिसाल के रूप में उसे शिलातल बनाया। वृंदावन में इसकी स्थापना करने से वेंगमांबा के लिए एक अच्छा शिलातल बन गया।

शिष्यों की बातों को मानते हुए वेंगमांबा उस शिलातल पर बैठ कर मोक्ष का चिंतन करते हुए, फूलों की मालाओं को चुनते हुए,

काव्य रचना करते हुए, आध्यात्मिक उपदेश देते हुए कई सालों तक धार्मिक कार्य संपन्न करती रहीं।

इतना महत्वपूर्ण इतिहास रखनेवाला यह शिलातल (पत्थर) हाल ही में उनकी समाधी के पिछवाड़े में चिपकाया गया है।

रुक्मिणी नाटक

इस कवयित्री के द्वारा अपने वृंदावन में रहते हुए लिखी गयी प्रथम कृति रुक्मिणी नाटक है। यह आज उपलब्ध नहीं है। नाम से स्पष्ट होता है कि इसमें रुक्मिणी का श्रीकृष्ण के साथ परिणय करना इस यक्षगान की मुख्य कथा है।

गोपिका नाटक (गोल्ल कलापमु)

तेलुगु में 'गोल्ल' का मतलब ग्वाला है। कलापमु का मतलब नाटक है। यह वेदांत विषयक यक्षगान है। गोल्ल कलापमु, गोल्ल कथा इसके अन्य नाम हैं।

एक ग्वालिन इसकी नायिका है। वह ग्वालिन 'चल्लोयम्म चल्ला' (तेलुगु में चल्ला का मतलब दही है) दही-दही पुकारती हुई सहज रूप में मंच पर आती है। सामने आनेवाले हास्य चतुर एक ब्राह्मण से बातचीत करना शुरु करती है। उन दोनों की बातचीतों के माध्यम से पिंडोत्पत्ति (मनुष्य शिशु जनन) से आरंभ करके दही से माखन निकालने से लेकर जीवात्मा और परमात्मा के संबंधों तक ब्रह्म की सृष्टि को लेकर विविध विषयों की आध्यात्मिक व्याख्या की गयी है। मुख्य रूप से वेंगमांबा के द्वारा रची गयी गोल्ल कलाप में 'यज्ञपु पट्टु' नामक प्रसंग अति मुख्य है।

पूर्व गोदावरी जिले के मुम्मडिवरम निवासी अन्नाबत्तुल मंगतायारु नामक महिलामणी वेंगमांबा की रचना 'गोल्ल कलाप' को हाल ही में कुछ सालों से अपने शिष्य और प्रशिष्यों की सहायता से मनोज्ञ रीति में नाटक का मंचीकरण कर रही है।

पिछली सदी (19) के आरंभ में सुब्बारायुडु नामक एक विद्वान ने चित्तूर जिले से पूरब गोदावरी जिले के मुम्मडिवरम प्रांत में जाकर, वहाँ की महिलामणियों को वेंगमांबा की कृति 'गोल्ल कलाप' यक्षगान को सिखाया है। श्री मंगा तायारु की नानी सुब्बारायुडु के द्वारा सिखाये गये उस गोल्ल कलाप का प्रदर्शन करनेवाली संप्रदायबद्ध महिला कलाकारों में अग्रगण्य है।

इससे स्पष्ट होता है कि वेंगमांबा की रचना 'गोल्ल कलाप' का प्रदर्शन एक परंपरा के रूप में मुम्मडिवरम प्रदेश में कई पीढ़ियों से जीवित था। वेदांत विषयक इस यक्षगान को संग्रह करके छापने की आवश्यकता है।

श्री भागवत (द्विपद काव्य)

वेंगमांबा एक दिन प्रातःकाल (शायद अपने द्वारा लगाये गए बगीचे वृंदावन में) मोक्ष के बारे में चिंतन कर रही थी। तब श्री वेंकटेश्वर एक ब्राह्मण के वेश में उनके पास आये।

'भागवत के तत्वार्थों को अनपढ़ लोगों को भी समझ में आये उस रूप में तुम संग्रह करो। उसमें हरि के पराक्रम, हरि के विहार, हरि के अवतार, हरि की महिमा रहनेवाले सारे प्रसंगों को विस्तार देकर तुम फिर से रचो।' वेंगमांबा को इस प्रकार का आदेश देकर वे लौट

गये। उसके बाद 'इस प्रकार भागवत को तेलुगु में लिखने का सौभाग्य मुझे दे दो।' ऐसी प्रार्थना वेंगमांबा श्रीनिवास से विनति करती रही।

उस रूप में प्रार्थना करते रहने पर उस दिन के दोपहर के समय फिर से श्री वेंकटेश्वर स्वामी बाल कृष्ण के वेश में कवयित्री के पास आये। भागवत ग्रंथ को (ताल पत्र ग्रंथ) हाथ में दिया। 'इसे द्विपद काव्य के रूप में रचो' ऐसा आदेश दिया।

स्वामी की आज्ञा के अनुसार कवि पोतनामात्य के पद्य भागवत ग्रंथ के आधार पर वेंगमांबा ने 12 स्कंधों को द्विपद में भागवत को रचा। उस काल में बोम्मेर पोतना के द्वारा कहलवाये पट्टाभिराम ने ही आज मुझ से भागवत को द्विपद में कहलवाया, इस विषय का वेंगमांबा ने इस कृति में उल्लेख किया है। किंतु आज उपलब्ध होनेवाले वेंगमांबा के द्विपद भागवत में 7, 8, 9 स्कंध अभी प्राप्त होना बाकी हैं। प्राप्त हुए बाकी स्कंध भी श्रीनिवास के अनुग्रह से छापने का भाग्य अभी होना ही है।

वेंगमांबा ने अपने द्वारा लिखित श्री भागवत द्विपद काव्य के लिए 'श्री कृष्ण लीलामृत' नामक सार्थक नामकरण दिया है।

रथ रुक गया

वेंगमांबा तिरुमल में स्थिर निवास बनाने के बाद से प्रति दिन, दिन में तुलसी और फूलों की मालाओं को, रात के समय एकांत सेवा के समय कपूर हारती को मंदिर ले जाकर समर्पण करती थी। कई पीढ़ियों से अनेक महात्माओं के कैंकर्यों को स्वीकार करनेवाले श्रीनिवास को एक महिला - भले ही बड़ी भक्तिन क्यों न हो,

पूर्वाचारों का विरोध करनेवाली, कपूर हारती लाकर देना, मंदिर के अर्चक स्वामियों के लिए जलन का विषय बना।

इसलिए उन्होंने एक दिन एकांत सेवा के समय वेंगमांबा को सुनायी पड़े, ऐसा उनके द्वारा दी जानेवाली हारती कैंकर्य का परिहास किया श्रीनिवास की सन्निधि में जो भी कहा जाता है श्रीनिवास के लिए सम्मत है, ऐसी सद्भावना से वेंगमांबा अगले दिन मंदिर नहीं गयी। अपने घर में रहनेवाली श्री वेंकटेश्वर की अर्चामूर्ति को हारती देकर स्वयं संतुष्ट हो गयी। पिछले दिन वेंगमांबा को लेकर जो बातें हमने कहीं उसी की वजह से वेंगमांबा मंदिर पर नहीं आयी है, हमारा प्रयास सफल हो गया, स्वामी को कपूर हारती लाना उसने छोड़ दिया, ऐसा समझकर अर्चक स्वामियों ने श्रेष्ठ भक्तिन वेंगमांबा की खिल्ली उड़ायी।

उसके बाद का दिन श्रीनिवास का रथोत्सव था। भक्त वृंद के जोश-आवेश में तिरु माड वीथियों में तेज गति से चलनेवाला तिरुवेंकटनाथ का रथ उत्तर माड वीथि में वेंगमांबा के निवास के सामने आकर अचानक रुक गया।

कई लोगों ने कई रूपों में रथ को आगे ले जाने के प्रयत्न किया। रथ टस-से-मस न हुआ। वेंगमांबा के भक्ति-प्रभाव से ही रथ रुक गया है, ऐसा अर्चक स्वामियों ने अंदाजा लगाया। पश्चाताप करते हुए वेंगमांबा के सामने जाकर अपने अपराध के लिए क्षमा याचना की। रथ के सामने आकर कपूर हारती देकर रथ को आगे बढ़ाने के लिए श्री वेंकटेश्वर से प्रार्थना करने की बहुत विनति की।

महंत आदि अधिकारियों की इच्छा के अनुसार तब वेंगमांबा ने श्रीदेवी और भूदेवी समेत विराजमान देवाधिदेव के लिए परम भक्ति

के साथ और आनंद के साथ कपूर हारती नीराजन समर्पित किया। तुरंत रुका हुआ रथ आगे बढ़कर अपने लक्ष्य तक पहुँच गया। तब से तरिगोंड वेंगमांबा की हारती को नित्य हारती के रूप में मंदिर के अधिकारियों के द्वारा स्वीकार कर लिया गया।

मुत्याल हारती (मोतियों की हारती)

उसके अगले ही दिन एकांत सेवा के समय वेंगमांबा स्वयं हारती समर्पित करते समय वेंकटेश्वर ने अपने दशावतारों के विराट रूप को उन भक्तिन को दिखाया। उस समय वेंगमांबा ने अपनी हारती को शाश्वत रूप से देने की परंपरा डालने का अनुग्रह करने की उस परब्रह्म से प्रार्थना की है। भक्त सुलभ भगवान श्री वेंकटेश्वर ने हल्की मुस्कान से अपनी भक्तिन की मनोकामना पूरी करने का इशारा दिया।

उस दिन रात को मंदिर के अधिकारियों को और अर्चक स्वामियों को सपने में दर्शन देकर स्वामी ने वेंगमांबा की हारती कैंकर्य को प्रतिदिन एकांत सेवा के समय शाश्वत रूप से अमल करने का आदेश दिया। महनीय भक्त शिरोमणी और परमयोगिनी वेंगमांबा के द्वारा आरंभ किया गया यह हारती कैंकर्य ''नित्य मुत्याल हारती'', ''तरिगोड वारि हारती'' नामों से आज भी अविच्छिन्न रूप से श्रीनिवास के आनंद निलय मंदिर में आज भी अमल किया जा रहा है।

इस संदर्भ में मुत्याल हारती (मोतियों की हारती) के बारे में पूरी जानकारी लेना आवश्यक है।

एक पांच लोहे के थाल के मध्य में तरिगोंड नरसिंहा स्वामी की खड़ी हुई चांदी की मूर्ति को चिपकाकर स्वामी के दशावतारों में नित्य एक अवतार को चांदी की मोतियों से रेखा मात्र से सुंदर ढंग से

सजाकर रखते हैं। हल्दी और कुंकुम के साथ अवतार को चारों ओर सजाते हैं। थाल के बीच में एक छोटे प्याले में कपूर रखा जाता है। इस रूप में तैयार करके थाल को वेंगमांबा के वारिस का व्यक्ति श्रीनिवास की एकांत सेवा के समय ले जाकर अर्चक स्वामियों को सौंपता है।

थाल में जलायी गयी हारती अर्चक स्वामी पहले मूल विराट को, उसके बाद शय्या पर लेटे हुए भोग श्रीनिवास की मूर्ति को नयनानंद रूप में समर्पित करते हैं। आनंद निलय मंदिर में दिए जानेवाले सारे कैंकर्यों में यह मुत्याल हारती ही अंतिम कैंकर्य है।

इस हारती को लेकर ही ''ताळ्ळपाक वारि लाली, तरिगोंड वारि हारती'' (अर्थात ताळ्ळपाक वंशजों की लोरी और तरिगोंड वंशजों की हारती) कहावत चल पड़ी है।

वेंगमांबा के जीवित रहते समय ''श्री पन्नागाद्रि वरशिखराग्र वासुनकु'' (यानी श्री पन्नगाद्री शिखर पर रहनेवाले को) नामक 12 चरणों का लंबा गीत (जय मंगल गीत) गाते हुए स्वयं वेंगमांबा श्रीनिवास को हारती समर्पित किया करती थी। (इस मुत्याल हारती का गीत इस पुस्तक के अंत में नव रत्न कीर्तनों में 9 वें कीर्तन के रूप में दिया जा रहा है।)

वेंगमांबा के द्वारा श्रीनिवास की अनुमति लेकर आरंभ किये गए ''नित्य मुत्याल हारती कैंकर्य'' की परंपरा उनके तदुपरांत निरंतर अमल किए जाने के लिए वेंगमांबा ने 'नरसप्प' नामक व्यक्ति को गोद लिया था। नरसप्प की पुत्री चेंगम्मा है। इन दंपतियों की पुत्री लक्ष्मम्मा है। लक्ष्मम्मा का पति गरिडिमिट्ट चीनेपल्ली के वंशज गम्मन्ना है।

इन लक्ष्मम्मा और गम्मन्न दंपतियों को 1. गंगाधरप्पा 2. नरसप्पा नामक दो पुत्र हैं। इनमें बड़े श्री गंगाधरप्पा के पुत्र का नाम गम्मन्ना है। यह ब्रह्मचारी है।

दूसरा पुत्र नरसप्पा का पुत्र चिदंबरप्पा है। इनका पुत्र सुब्रह्मण्यम है। इस सुब्रह्मण्यम का पुत्र ही विश्वमूर्ति है। यह विश्वमूर्ति ही आज वेंगमांबा की मुत्याल हारती कैंकर्य का निर्वहण कर रहा है।

तरिगोंड वेंगमांबा की ''मुत्याल हारती'' का निर्वहण करने के लिए ही वेंगमांबा के द्वारा गोद लेनेवालों के वंश वृक्ष की तालिका निम्न रूप से है।

मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा

जन्म : साधारण नाम संवत्सर वैशाख शुद्ध चतुर्दशी, सोमवार, नृसिंह जयंती का पर्व दिन।

ई.1730-4-20.

परमपद : ईश्वरनाम संवत्सर श्रावण, शुद्ध नवमी, गुरुवार, ई. नाम 1817-8-21.

श्री वेंकटाचल महात्म्यमु (पद्य काव्य)

वेंगमांबा के द्वारा रची गयी सारी रचनाओं में 'श्री वेंकटाचल महात्म्यमु' सबसे किरीट जैसी रचना है। यह छः आश्वासों का पद्य काव्य है। लगभग 1600 गद्य-पद्यों में यह विस्तरित है। यह महात्म्य काव्य वेंगमांबा की लेखनी से अवतरित होने के दिन से वेंकटाचल पुण्य क्षेत्र की महिमाओं को तथा श्रीनिवास भगवान के प्रभाव को आंध्र प्रदेश में प्रचार करने में प्रमुख भूमिका निभा रहा है।

संस्कृत 'वेंकटाचल महात्म्य' काव्य के वराह पुराण, भविष्योत्तर पुराण, पद्मपुराण नामक तीन पुराणों के भागों से मूल आधारों को स्वीकार करके, वेंगमांबा ने इस काव्य को स्वेच्छा से, स्वतंत्र रूप से, भक्ति भाव से भरपूर रूप में और अतिसुंदर रूप से तेलुगु में अनुवाद किया है।

तेलुगु में महाभारत का मतलब कवित्रय के द्वारा रचित आंध्र महाभारत ही प्रामाणिक है। भागवत का मतलब पोतना के द्वारा रचित आंध्र महाभागवत ही है। उसी प्रकार 'वेंकटाचल माहात्म्यम' कहने मात्र से मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा के द्वारा रचित श्री 'वेंकटाचल महात्म्यम' प्रबंध ही सबसे प्रचलित एवं प्रसिद्ध रचना है।

अविवाहित कन्याएँ अपने लिए अनुकूल वर को प्राप्त करने के लिए मार्गनिर्देश करनेवाले के रूप में भी यह काव्य प्रसिद्ध हुआ है। कोई कन्या इस काव्य की श्रद्धा-भक्ति से प्रति बना कर योग्य आदमी को दान करने से वैसी कन्याओं को अचिर काल में ही योग्य वर की प्राप्ति होकर विवाह संपन्न होगा। ऐसा विश्वास समाज में फैला हुआ है।

इसके दो मुख्य कारण

1. इसमें श्रीनिवास के विवाह का वर्णन होना 2. श्रीनिवास स्वामी के अंतरंग भक्तिन शिरोमणी वेंगमांबा के द्वारा इस महात्म्य प्रबंध को पवित्र कवित्व दीक्षा से रचना।

दुपट्टा हाथ लगा

आनंद निलय मंदिर में एकांत सेवा के बाद वेंगमांबा अपने घर में एक कमरे में बैठकर हाथ में घुंघुरन (चिरुतलु) पकड़ कर भगवान

पर गीत गाते, भजन करते, भक्ति परवशता में तन्मयता का अनुभव करती थी। अर्चक स्वामियों के द्वारा मंदिर के दरवाजे बंद करने के बाद श्रीनिवास स्वामी वेंगमांबा के निवास स्थान पर आया करते थे। इस भक्तिन शिरोमणी के द्वारा गानेवाले कीर्तनों को, श्री वेंकटाचल महात्म्य काव्य के प्रसंगों को अत्यंत आसक्ति से सुना करते थे। कभी-कभी आनंदातिरेक से नाच भी किया करते थे।

इस रूप में समय बीतता गया। एक दिन भोर सुबह वेंगमांबा ने श्रीनिवास स्वामी से इस रूप में प्रार्थना की -

''हे श्रीनिवास प्रभु! मेरी एक छोटी इच्छा है। इसी रूप में तुमहें सदा पूरे समय के लिए मेरे साथ ही रहना है। तुम सर्वांतर्यामी हो। इसलिए हमेशा मेरे साथ होने पर भी तुम्हारे शत सहस्र कार्यकलापों को चलाने में कोई कमी नहीं आयेगी!'' - वेंगमांबा के इस रूप में प्रार्थना करते समय ही मंदिर में सुप्रभात स्तोत्र शुरु हो गया। सोने के दरवाजे खोलने का समय भी हो चला। इसलिए श्रीनिवास स्वामी तुरंत चले जाएंगे समझ कर वेंगमांबा ने स्वामी के समाधान की आशा करते हुए उनके द्वारा पहने हुए पीतांबर को जोर से पकड़ कर रखा।

समय के न होते स्वामी तुरंत वहाँ से अंतर्धान हो गए। श्रीनिवास के अतितेज गति से अंतर्धान होने के उस समय में उनके पीतांबर का थोड़ा हिस्सा फटकर वेंगमांबा के हाथों में ही रह गया। ''स्वामी! अपचार हो गया, अपचार हो गया।'' बोलते हुए अपने हाथ लगे उस पीतांबर के हिस्से को अपनी आँखों पर लगाकर, अपने घर के आराधना-मंदिर में उसे पवित्र ढंग से सुरक्षित किया।

इधर मंदिर में सुप्रभात सेवा के तदुपरांत अर्चक स्वामियों ने कपूर हारती देते समय पीतांबर के फटे हुए दृश्य को पहचान लिया।

पीतांबर का थोड़ा हिस्सा फटकर अदृश्य हुआ था। अर्चा मूर्ति की इस हालत को देखकर अर्चक स्वामियों को आश्चर्य के साथ-साथ भय भी हुआ। उन्होंने तुरंत इस विषय के बारे में महंत आदि अधिकारियों को बता दिया। इस समाचार को पाकर वे आश्चर्यचकित हो गए।

दरवाजे पर जो ताला लगाया गया था, वह ज्यों-का-त्यों ही था। फिर गर्भालय के अंदर अर्चामूर्ति को पहनाया गया सोने की जरी से बने पीतांबर का थोड़ा हिस्सा रातों-रात कैसे अदृश्य हो गया? इसका कारण क्या है? अधिकारियों की समझ में नहीं आया। श्रीनिवास के पीतांबर को चोर फाड़कर ले जाने की कोई संभावना नहीं है। श्री हरि के अंतरंगिक भक्तों से सलाह-मशाविरा करने पर कुछ समझ में आयेगा, ऐसा उन्होंने सोचा।

उसी के अनुरूप उनको सबसे पहले तरिगोंड वेंगमांबा की याद आयी।

रथोत्सव दिन की घटना की याद आते ही अर्चक स्वामी सीधे वेंगमांबा के घर पहुँच गए। उन्हें नमस्कार करके, श्रीहरि के पट्टु वस्त्र के खो जाने के वृत्तांत के बारे में सब कुछ बता दिया।

''स्वामी का पीतांबर बगलवाले कमरे में रखा हुआ है। जाकर ले लीजिए।'' इस रूप में वेंगमांबा ने शांत-स्वर में अर्चक स्वामियों से कहा। उन्होंने आतुरता के साथ उस वस्त्र को लेकर तहों को खोल कर देखा। वह वस्त्र बिना किसी फाटन के दोनों छोरों के साथ पल्लुओं के साथ स्वामी के पहनने चिह्नों के साथ प्रकाशित होते दिखाई दिया। इससे अर्चक स्वामियों को असीम आश्चर्य हुआ।

स्वामी के उस अखंड वस्त्र को एक थाल में रख कर भक्ति से उसे प्रणाम करते हुए वे उसे मंदिर ले आए। वहाँ पर श्री हरि की मूल मूर्ति पर इसके पहले जो फटा हुआ पीतांबर था, वह दिखाई नहीं पड़ा। इस घटना ने उन अर्चक स्वामियों को और आश्चर्यचकित कर दिया।

तब महंत ने ''यह सब विष्णु की माया है! परम भागवत भक्तों के वैशिष्ट्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए तद्वारा जनता में भक्ति भाव को बढ़ाने और उसे सुदृढ़ बनाने के लिए स्वामी बीच-बीच में ऐसी घटनाओं का सृजन करते रहते हैं।'' कहा।

विचित्र ढंग से इस रूप में समस्या सुलझ जाने पर सभी ने आनंद का अनुभव किया। अर्चक स्वामियों ने संतोष के साथ श्रीनिवास को वेदोक्त रीति से सहस्र कलशाभिशेक किया। साथ ही वेंगमांबा के घर से ले आये पीतांबर को सुंदर ढंग से स्वामी को पहनाया।

अनंतर कपूर नीराजन और नवनीत हारती को समर्पण किया।

महंत के परिवार के बैरागी बृंद आनंद से उछलते ''जय! जय! बालाजी! जय बालाजी!'' ऐसा संबोधन करते, उन्होंने जमीन आसमान को अपने जयघोष से एक किया। वहाँ इकट्ठा हुए सारे भक्तजन अपने नेत्रों से आनंद भाष्प के गिराते श्री वेंकटेश्वर स्वामी की बहुत-बहुत प्रशंसा करते रहे!

अष्टांग योग सार

अंष्टांग योग सार वेंगमांबा के द्वारा रचित दूसरा पद्य काव्य है। 'श्री वेंकटाचल माहात्मयम्' रचना के तीसरे आश्वास में यह वराह स्वामी के द्वारा भूदेवी को बतायी योग-विद्या विशेषताएँ 86 गद्य-पद्यों

(80 वचन से 165 वें पद्य तक) में इसमें वर्णित है। ये सारे योग विद्या संबंधी विषय कवयित्री के निजी स्वभाव और स्वानुभव से जनित ज्ञान के आधार पर सरल भाषा में और सुलभ शैली में वर्णित हुए हैं।

इन सारी योग विद्या संबंधी विशेषताओं को एक लघु कृति के रूप में प्रस्तुत करने से सभा गोष्ठियों में उनको पढ़कर व्याख्या करने में अनुकूल होगा, ऐसा कुछ शिष्यों ने वेंगमांबा से विनति की थी। उनके द्वारा इस रूप में विनति करने का एक मुख्य कारण यह दिखाई पड़ता है -

कवयित्री के समय में सारी कृतियाँ ताल पत्तों पर लिखी जाती थीं। श्री वेंकटाचल माहात्म्यमु लगभग 180 ताडी के पत्तों पर विस्तरित सचमुच ही एक बृहद ग्रंथ है। इसके तीसरे आश्वास के 86 गद्य-पद्य सिर्फ 15 या 16 ताडी के पत्तों की सीमाओं के बाहर नहीं होते हैं। इसलिए उस योग के विषयों को सभा-गोष्ठियों में प्रवचन करने हेतु उपयोग करनेवालों के लिए लंबे-लंबे ताडी के पत्तों के इस बृहद काव्य को बार-बार उलटना-पलटना मुश्किल का काम होता है। इसलिए उस अंश को अलग करके एक अलग कृति के रूप में प्रस्तुत करने से आसानी होगी। सभा गोष्ठियों में उसका उपयोग करना और प्रवचन करने में आसानी होगी, ऐसा वेंगमांबा के शिष्यों का अभिप्राय था।

वेंगमांबा ने अपने शिष्यों के इस अभीष्ट को स्वीकार करते हुए उस ग्रंथ के अंश को मूल से अलग करके उसे समग्र रूप देने के लिए आरंभ में 6 पद्यों की एक अवतारिका को और अंत में एक फलश्रुति

के पद्य को जोड़कर 'अष्टांग योग सार' नामक एक सार्थक नाम रखकर साहिती लोक को उससे परिचय कराया।

इसे देखते हुए कहा जा सकता है कि वेंगमांबा की रचनाओं ने उनके जीवन काल में ही विशेष आदर, प्रशस्ति और प्रचार को प्राप्त किया है। ऐसे सत्य का निरूपण हो जाता है।

वेंगमांबा के दान पत्र

मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा तिरुमल पुण्य क्षेत्र में प्रति वर्ष वैशाख मास में नृसिंह जयंती महोत्सवों को दस दिनों तक प्रजारंजक में आयोजित करवाती थी। उन उत्सव के दिनों में गरीबों को अन्नदान करना, पेय जल घरों की स्थापना करवाना आदि धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन अत्यंत सफल रूप में होता था।

इन पवित्र कार्यक्रमों के लिए दक्षिण में दिंडिगल से लेकर उत्तर में गोल्कोंडा तक के राज्यों के जमींदार, पालिगर, भूस्वामी, धनस्वामी, व्यापारी, किसान, ग्रामीण लोग आदि भक्त जनों के द्वारा समर्पित भू, धन, धान्यादि के बारे में बतानेवाले दान पत्र - जो ताल के पत्तों पर अंकित थे, लगभग तीस से अधिक प्राप्त हुए हैं। ये दान पत्र सन् 1785 से लेकर सन् 1812 तक लगभग तीस वर्षों की कालावधि में प्रस्तुत हुए हैं।

इन दान पत्रों के लिए - ''वर्षाशन दान पत्रिका मान्य पत्र, धर्मशासन दान पत्रिका, सन्नदु'' आदि पर्याय पदों के रूप में जगह-जगह पर प्रयोग किए गए हैं। इन दान पत्रों में प्रयुक्त - ''श्रीमद अखिलांड कोटि ब्रह्मांड नायकुलैन श्री वेंकटेश्वर स्वामीवारि सान्निध्यमंदु श्री तरिगोंड लक्ष्मी नृसिंह स्वामी दिव्य श्रीपादारविंद मधुकरायमाण

मानसयैन मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा गारिकि'' (अर्थात श्रीमत अखिलांड कोटि ब्रह्मांड नायक श्री वेंकटेश्वर स्वामी की सन्निधि में श्री तरिगोंड लक्ष्मी नरसिंह के दिव्य चरणारविंद को मानस में धारण करनेवाली श्री मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा जी को) आदि विशेषण वेंगमांबा के प्रति उस समय के जन-जन में व्याप्त भक्ति-गौरव को उदात्त ढंग से प्रस्फुटित कर रहे हैं।

इन दान पत्रों में उन गाँवों में निवास करनेवाले रेड्डी जाति के, करणम जाति के, पुरोहित वर्ग के, शेट्टी व्यापारी वर्ग के, कापु जाति के, किराना व्यापारी आदि सामाजिक वर्गों से संबंध रखनेवाले लोग एकत्रित होकर समेकित रूप से लिखवाये दान पत्रों का अधिक होना इनकी एक और विशेषता है। वे सब कुल बडि (जाति के हिसाब से) पेरुबडि (नाम के हिसाब से) प्रति घर के लिए, प्रति माह के लिए यथाशक्ति से संग्रह करके साल में एक बार वेंगमांबा के मठ को समर्पित करते थे। ऐसे प्राप्त चावल, धन, वरहा (पुराना धन) आदि नृसिंह जयंती के उत्सवों के दिनों में तिरुमल पर पधारनेवाले यात्रियों के लिए अन्नप्रसादादि के प्रबंधन के निमित्त खर्च किया करते थे।

इनके अतिरिक्त, उन गाँवों में कुछ सामाजिक वर्गों के लोग - उदाहरण के लिए चित्तूर प्रदेश के रेड्डी सामाजिक वर्ग, तिरुपति बेरि शेट्टी वर्ग, तिरुमल के व्यापारी आदि सब अलग-अलग एक-एक वर्ग के रूप में एकत्रित होकर लिखवाये दान पत्र भी इनमें कुछ हैं। उन ग्रामीण जनता में बहुत से लोग आज की सामाजिक विचारधारा के अनुसार 'पढ़े-लिखे लोग' न होने पर भी, सिर्फ लेखनी से परिचित होने मात्र से सभी ने यथाशक्ति वेंगमांबा के धार्मिक कार्यक्रमों के लिए

हाथ बंटाया था। उनकी उदात्तता की हजारों कंठों से प्रशंसा करनी चाहिए।

इन दान पत्रों में कुछेक के अंत में ''इस दान के लिए किसी का आक्षेप होने पर'' होने वाले परिणामों पर प्रकाश डाला गया है। इससे स्पष्ट होता है कि उस समय के सभी सामाजिक-वर्गों की सारी जनता वेंगमांबा के धार्मिक कार्यक्रमों एवं कैंकर्यों के प्रति भक्ति प्रपत्ति के साथ सहायता करती थी। इन दान पत्रों से इस बात की पुष्टि हो जाती है।

इन दान पत्रों में प्रस्तावित सरिहद के नाम, दाताओं के नाम, सिक्कों के नाम कुछ और विशेषताएँ, उस समय की सामाजिक परिस्थितियों पर शोध करने के लिए उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करती हैं।

कुल मिलाकर असंख्यक भक्तजन से प्राप्त सहायता और सहयोग से तिरुमल पुण्य क्षेत्र में उन दिनों में (18 सदी में) अन्नदान कार्यक्रम को अत्यंत सफल ढंग से आयोजित करनेवाली सामाजिक चैतन्य स्फूर्ति रखनेवाली आध्यात्मिक साहिती मूर्ति मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा हैं, ऐसे सत्य का उद्घाटन इन दान पत्रों के द्वारा हो जाता है।

जलक्रीड़ा विलास

'जलक्रीड़ा विलास' नामक यह यक्षगान वेंगमांबा की यक्षगान-रचनाओं में आठवाँ है। यह 'श्री वेंकटाचल माहात्म्यमु' के बाद तिरुमल में रहते हुए लिखा गया है। इसमें श्री कृष्ण के जन्म से लेकर गोपिकाओं की जल क्रीड़ाओं तक संपन्न उस गोपाल के बचपन और

यौवन दशाओं का वर्णन किया गया है। यह कथा पोतना के द्वारा रचित आंध्र महाभागवत के दशम स्कंध से गृहीत है।

अत्यंत निपुण वेंगमांबा ने इस कथा को अपनी रचना-प्रणाली के अनुरूप बदलकर, जीवंत एवं श्रेष्ठ व्यावहारिक भाषा में सहज सुंदर शैली में अत्यंत सुंदर बना दिया है।

वेंगमांबा की कृष्ण भक्ति भावना का यह मार्मिक उदाहरण है। इस भक्तिन कवयित्री ने ताल्लपाक अन्नमाचार्य की तरह आरंभ से तिरुमल श्रीनिवास को शृंगार रस सर्वस्व माने जानेवाले श्रीकृष्ण के रूप में ही अत्यधिक आराधना की है। इस मधुर कविता सरस्वती की मनोज्ञ रचना रीति के लिए इसमें वर्णित श्रीकृष्णावतार प्रसंग ही एक सुंदर और सुरम्य उदाहरण है।

ई.18 वीं सदी के उत्तरार्ध में मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा स्वामी की सन्निधि में रहते हुए स्थापित 'साहिती वृंदावन' से विकसित रस भरे काव्यों में यह 'जलक्रीड़ा विलास' यक्षगान नाटक अत्यंत अह्लाद करनेवाला कृति रत्न है।

मुक्ति कांत विलास

तरिगोंड वेंगमांबा के द्वारा रचित यक्षगानों में सबसे अंतिम रचना 'मुक्तिकांता विलास' है। इसका विषय वेदांत से संबंधित है, ऐसा नाम से ही स्पष्ट हो जाता है। 'जगदीश्वर' के द्वारा 'मुक्तिकांता' से मिलना इस यक्षगान की मुख्य कथा है।

इस यक्षगान के कथा नायक जगदीश्वर (तरिगोंड लक्ष्मी नरसिंह स्वामी) अपनी पूरी सरकार को तिरुमल श्री वेंकट रमण स्वामी को सौंप कर, मुक्ति कांता से रमन करते हुए सातों पहाड़ों पर बसे हुए

हैं, वे स्वामी भक्ति और ज्ञान दोनों का प्रतिनिधित्व करते हुए सभी प्रकार के भक्तों का उद्धार करेंगे, ऐसा कवयित्री ने इस यक्षगान के द्वारा सिद्ध किया है। कवयित्री की यह शैली अनुपम है।

मुख्य रूप से श्रीनिवास 'भक्ति कांत' नामक पात्र पर पूरे आवेश के साथ व्यक्त बातें श्री वेंकटेश्वर के तत्व के बारे में और उनकी महिमा के बारे में जानने में अपने निजी अनुभवों से व्यक्त करने की कवयित्री की यह शैली चित्ताकर्षक है।

आंध्र के यक्षगान वाङ्मय में लिखित वेदांत विषयक यक्षगान नाटकों में इसके लिए यही कसौटी है।

वासिष्ठ रामायणमु

तरिगोंड वेंगमाबा के द्वारा रचित कृतियों में अंतिम रचना वासिष्ठ रामायण है। यह एक द्विपद काव्य है। इसका विषय वेदांतपरक है। रघुवंशीय राजाओं के कुलगुरु वशिष्ठ महर्षि ने विश्वामित्र की प्रेरणा से श्री रामचंद्र को अनेक तात्विक विशेषताओं को तथा विविध कथाओं के माध्यम से उपदेश दिया है। उन उपदेशों के रूप में प्राप्त उनके सारे संदेहों की निवृत्ति वशिष्ठ समुचित रूप से दूर करते हैं।

परम योगिनी इस कवयित्री ने वाल्मीकि महाकवि के द्वारा संस्कृत में रचित 'वासिष्ठ रामायण' काव्य से विषयों को स्वीकार करके, उन्हें अपने स्वानुभव के द्वारा अच्छे ढंग से समन्वय करके, इस काव्य को स्वेच्छा से और संग्रह करके पांच प्रकरणों में द्विपदों में अनुवाद किया है।

कुल मिलाकर आत्म तत्व से संबंधित विषयों को सामान्य जनता तक सुलभ रीति से पहुँचाने के लिए पद्य से अधिक द्विपद छंद अत्यंत अनुकूल होता है, इस सूक्ष्मांश का यह काव्य सटीक निरूपण करता है।

तत्व कीर्तन

तरिगोंड वेंगमांबा ने अनेक ग्रंथों को रचने के साथ-साथ संदर्भ के अनुसार - तरिगोंड में रहते समय और अन्यत्र भी, तिरुमल पर पहुँचने के बाद भी - अपने जीवन काल के अंतिम दिनों तक अनेक कीर्तनों को और गीतों को आशु के रूप में रचा है। इस रूप में उनकी लेखनी से निकले अनेक गीतों में आज की पीढ़ी को बहुत ही कम प्राप्त हुए हैं। पिछली पीढ़ी तक कई लोगों को उनके द्वारा रचित गीत और कीर्तन अनेक कंठस्थ हुआ करते थे।

परब्रह्म के तत्व को (निज स्थिति) स्पष्ट करनेवाले होने के कारण इनको 'तत्व कीर्तन' का नामकरण किया गया है। वेंगमांबा के द्वारा रचित सारे तत्व कीर्तन 'तरिगोंड' मुद्रांकित हैं। 'मुद्रा' का मतलब पद्य या गीत के अंतिम चरण में कवि अपने नाम या अपने इष्ट देव के नाम को जोड़ना।

वेंगमांबा ने अपने सारे गीतों में अपने इष्ट देव तरिगोंड नरसिंह का नाम जोड़ कर रचा है। उनके गीतों के अंतिम चरणों में 'तरिगोंड नरहरि', 'तरिगोंडाधिपुडु', 'तरिगोंडपति' जैसे पद प्रयोग आवश्यक रूप से दिखाई देते हैं।

इन तत्व कीर्तनों के अतिरिक्त वेंगमांबा के द्वारा आशु के रूप में प्रस्तुत श्लोक, पद्य आदि सटीक नीतियों से भरे भक्ति-रस भरे

गीतों के रूप में प्रसिद्ध हुए हैं। किंतु उन आशु कविताओं की संपदा में आज नयी पीढ़ी के लिए कुछ ही उपलब्ध हो पाए हैं। उस समूह से आज प्राप्त निम्न सीस पद्य एक अनुपम अनर्घ रत्न है -

"सी. जगतिलो मानव जन्मंबु दोरकदु,
दोरकिन पुरुषुडै पुट्टटरुदुः
पुरुषुडै पुट्टिन पोलति मंचिदि रादु,
वच्चिन भाग्यंबु लेच्चुटरुदु,
भग्यशालिकि पुत्र फलमु चेकूरदुः
कूडिन वितरण जाड लरुदु,
वितरण गलिगिन वितत शांतमु सुन्न,
शांतंबु गलिगिन सत्यमरुदु।

ते.गी. सत्यमोदविन श्रीहरि स्मरण लरुदुः
हरिनि दलचिन बाडेपो परमयोगी!
पुंडरीकाक्ष! तरिगोंड पुर निवास!
सरस! ननु ब्रोवु वेंकटाचल निवास!"

अर्थात इस जगत में मानव जन्म दुर्लभ है। मानव जन्म प्राप्त होने पर भी पुरुष के रूप में पैदा होना बहुत विरल है। पुरुष के रूप में पैदा होने पर भी पत्नी अच्छी नहीं मिलेगी। ऐसी पत्नी प्राप्त होने पर भी भाग्य साथ नहीं देता है। भाग्यशाली को पुत्र संतान प्राप्त नहीं होती है। पुत्र संतान प्राप्त होने पर भी उदारता नहीं होती है। उदार पुत्र होने पर उसमें शांत गुण नहीं होता है। शांत गुण होने पर उस में सत्य गुण बहुत कम होता है।

सत्य पालक होने पर भी उसमें श्रीहरि की चिंता बहुत कम होती है। जो हरि की चिंता करता है वही परमयोगी माना जाता है। हे

पुंडरीकाक्ष! हे तरिगोंड पुर निवासा! हे सरस! मेरी रक्षा करो हे वेंकटाचल निवासा!

महा समाधि

मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा के द्वारा स्थापित फूलों के बगीचे 'बृंदावन' में जहाँ नित्य वे ध्यान में लीन रहती थी वहाँ पर उनकी सूचना के अनुसार चार शिला स्तंभों की सहायता से एक समाधि मंटप का निर्माण किया गया है।

परम योगिनी और महाज्ञानी होने के कारण वेंगमांबा अपनी अंतिम दशा को जान पायी! ईश्वरनाम संवत्सर श्रावण शुद्ध नवमि के दिन निर्णीत समय में गोविंद नाम स्मरण के साथ वे समाधि मंटप में पहुँच गयी। समाधि में प्रवेश करके, पद्मासन पर आसीन होकर, नारायण अष्टाक्षरी (ओम नमो नारायणाय) मंत्र को त्रिकरण शुद्धी के साथ जप करने लगी।

एक ओर वेद मंत्रों का घोष, दूसरी ओर श्रीवेंकटेश्वर, विष्णु, नृसिंह, सहस्रनामों का पठन, उस प्रशांत वातावरण में गंभीर रूप से प्रतिध्वनित होते रहे। उस पवित्र वातावरण में कुंडलिनी शक्ति को षटकमलों के माध्यम से जगाकर, सहस्रार में प्रेरित करके, निर्विकल्प समाधि में संलीन होकर, स्वच्छंद रूप से ब्रह्म रंध्र का भेदन करके मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा ज्योति स्वरूप में श्री वेंकटेश परमात्मा राम में समैक्य हो गयीं।

उस समय पहले से वहाँ पहुँचनेवाले महंत आदि मंदिर के अधिकारीगण, पुर प्रमुख, शिष्य, तरिगोंड प्रांत से आये बुजुर्ग लोग,

बैरागी बृंद आदि अशेष जनों के द्वारा श्री वेंकटेश्वर स्वामी की तथा वेंगमांबा की जय जय ध्वनियाँ आकाश को छूती और गूंजती रही।

ब्रह्मचारिणी तरिगोंड वेंगमांबा के परमपद नाथ की सन्निधि में पहुँचने के उस संदर्भ में देवतागण ने अभिनंदन सूचक आकाश से समाधि पर फूलों की वर्षा करवायी।

वेंगमांबा के शिष्य बृंद ने चिंता-वदन के होते हुए भी निर्देशित रीति में सब मंगल कार्य और मंगल द्रव्यों के साथ, मंत्रोच्चारण के साथ समाधिस्त करके समाधि को हमेशा के लिए बंद किया।

तब वहाँ के भक्त बृंद, बैरागी बृंद सब मिलकर फिर से श्री वेंकटरमण स्वामी को तथा वेंगमांबा को जय जयकार करते मंत्रोच्चारण के साथ समाधि की परिक्रमा नमस्कार समर्पित करते वहाँ से निकल पड़े।

मूर्तिभव व्यक्तित्व

'मूर्तिमत्व' का मतलब व्यक्तित्व है। यह भौतिक और आध्यात्मिक दो तरह का होता है। इन दोनों में दूसरा बहुत महत्वपूर्ण है। महाकार्य दीक्षाबद्ध और महनीय सभी अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण ही विश्व भर में प्रचलित हुए हैं। ऐसे महानुभावों में महाकवियों की विशिष्ट पंक्ति है।

आंध्र साहित्य के जगत में ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व के प्रकाशित महाकवियों में तथा कवयित्रियों में विशिष्ट वाङ्मय मूर्ति मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा हैं।

इस कवयित्री के स्वभाव में मख्य रूप से उल्लेखनीय गुण विनय है। वेंगमाबा की प्रत्येक रचना में आरंभ में ''हे सुनिए कविगण!

विद्वतगण!'' ऐसे विनीत रूप से संबोधित करके धीरे-धीरे कथा में प्रस्थान करती जाती हैं।

वेंगमांबा प्रह्लाद की तरह ''पढ़ाई में सब कुछ पढ़ लिया'' स्वभाववाली हैं। तेलुगु में ही नहीं संदर्भ के अनुसार संस्कृत, तमिल आदि भाषाओं में भी समर्थ रूप से लेखन कार्य करनेवाली समर्थ रखनेवाली बहुभाषावेत्ता तरिगोंड वेंगमांबा हैं। संपूर्ण आंध्र वाङ्मय के इतिहास में ''अक्षर शारदा का साक्षात्कार'' पानेवाली इकलौती कवयित्री वेंगमांबा हैं।

बचपन में तरिगोंड में पुष्पगिरि पीठाधिपति श्री विद्या नृसिंह भारती स्वामी जी के द्वारा, तदुपरांत बुढ़ापे में तिरुमल क्षेत्र में श्रृंगेरी पीठाधिपति 3वें सच्चिदानंद भारती स्वामी जी के द्वारा विद्याज्ञान प्राप्त करनेवाली, प्रह्लादांश के साथ, अपूर्व लक्ष्मी नरसिंह उपासिका के रूप में, आध्यात्मिक विद्यावेत्ता के रूप में, ब्रह्म ज्ञानी के रूप में प्रशंसित परमयोगिनी और योगीश्वरी मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा है!

साक्षात तिरुमल के श्रीनिवास ने ही वेंगमांबा पर आदर के साथ, अभिमान के साथ अपने सुदर्शन चक्र से उनको स्पर्श करवाया। अद्वितीय उस चक्र स्पर्श के कारण उनके अंदर के और बाहर के सारे दोष (बहिरंतस्तमस्सुलु) उनसे दूर हो गए।

सदा मुस्कान के साथ भासित उनका चहेरा विशिष्ट आध्यात्मिक तेज से प्रकाशित होता रहता है। देवदत्त प्रदान वाक्शुद्धी और वाकसिद्धी रखनेवाली, शिव केशव को समभाव से प्रकाशित होनेवाली उनकी रचनाओं के प्रत्येक शब्द उस ''तरिगोंड शेष कुधराध्यक्ष'' के दिव्य चरणों में समर्पित एक-एक तुलसीदल है।

अन्नमय्या और तरिगोंड वेंगमांबा

वेंगमांबा का तरिगोंड को छोड़कर तिरुमल पर पहुँचना उनके जीवन में महत्वपूर्ण घटना है। उसी रूप में तिरुमल पहुँचने के कुछ ही दिनों में ताल्लपाक वंशजों के बगल में निवास प्राप्त करना, इससे भी महत्व रखता है। इसलिए इस कवयित्री को संकीर्तनाचार्य के रूप में कई पीढ़ियों से श्री वेंकटेश्वर की आराधना करनेवाले ताल्लपाक वंशजों के साथ तथा उनके पूर्वजों के द्वारा रचित अनेक रचनाओं के साथ उन्हें परिचय प्राप्त हुआ।

अन्नमाचार्य और उनका दूसरा पुत्र पेदतिरुमलाचार्य, उनके पोता चिन तिरुमलाचार्य के द्वारा रचित आध्यात्म व श्रृंगार संकीर्तनों को, एक और पोता चिन तिरुवेंगल नाथ के द्वारा रचित द्विपद काव्यों को, अन्नमाचार्य की धर्म पत्नी तिम्मक्का (तिरुमलम्मा) के द्वारा रचित 'सुभद्रा कल्याण' नामक विवाह गीत ने वेंगमांबा को बहुत आकर्षित किया।

इसलिए उसी शैली में ''रमा परिणय'' नामक विवाह गीत को रचकर स्वामी को ही अर्पित किया।

ताल्लपाक वंशज कवियों के मूल पुरुष अन्नमाचार्य के लिए, तरिगोंड वेंगमांबा के लिए बहुत विषयों में स्पष्ट तुलना करने के लिए कई साम्य गुण प्राप्त होते हैं। उन साम्य गुणों की तुलना करने की आवश्यकता है -

1. अन्नमाचार्य और वेंगमांबा दोनों सारस्वत मूर्ति श्री वेंकटेश्वर के वर प्रसाद के रूप में अवतरित हुए हैं।

2. दोनों को भगवदानुग्रह के कारण ही विद्याएँ प्राप्त हुई हैं।

3. दोनों नंदवरीक नामक शाखा में ही पैदा हुए हैं।

4. अन्नमय्या परिस्थितियों के प्रभाव से बचपन में ही निजी गाँव ताल्लपाक को छोड़कर तिरुमल क्षेत्र पहुँच गए थे। वेंगमांबा भी छोटी उम्र में ही जीवन के कष्टों से ऊबकर तरिगोंड को छोड़कर अकेली यात्रा करके तिरुमल पहुँच गयी।

5. अन्नमाचार्य परम भागवतोत्तम हैं। भक्त और महा कवि हैं। वेंगमांबा भी परम भागवोत्तम और भक्तिन-कवयित्री हैं।

6. अन्नमय्या ने तिरुपति श्री वेंकटेश्वर को, अहोबल नरसिंह देव को अभेद मानते हुए उनकी आराधना की है। वेंगमांबा ने लक्ष्मी नरसिंह को तथा तिरुमल श्रीनिवास को अभेद भाव से आराधना करके अपने को धन्य बनाया है।

7. ये दोनों अपने-अपने जीवन में सहस्र चंद्र दर्शन प्राप्त करनेवाले महानुभाव हैं। मतलब 85 वर्षों से अधिक समय तक जीवित लोग हैं।

8. इन दोनों ने अपने-अपने जीवन में अधिक समय तिरुमल क्षेत्र में वास करते हुए ग्रंथों की रचना के द्वारा भगवान की आराधना करके उस पुण्य क्षेत्र में सिद्धी को प्राप्त किया है।

9. अन्नमय्या ने मंजरी द्विपद में 'श्रृंगार मंजरी' नामक काव्य को रचा है। वेंगमांबा ने उसी छंद में 'श्री वेंकटेश्वर कृष्ण मंजरी' नाम से कमनीय स्तुति काव्य को रचा है।

10. अन्नमाचार्य ने संस्कृत में ''वेंकटाद्री माहात्म्यम्'' नामक ग्रंथ को रचा है। वेंगमांबा ने तेलुगु में सुप्रसिद्ध 'श्री वेंकटाचल माहात्म्यमु' नामक पद्य काव्य को रचा है।

11. अन्नमय्या ने तेलुगु में द्विपद छंद में रामायण को रचा है। वेंगमांबा ने द्विपद छंद में 'वासिष्ट रामायण' नामक ग्रंथ को रचा है।

12. अन्नमय्या के द्वारा रचित आध्यात्म संकीर्तनों में प्रचलित संकीर्तनों को वेंगमांबा ने अपने यक्षगान नाटकों में सटीक रूप से अनुकरण करते हुए संगीत की लय के साथ गीतों की रचना की है।

13. दोनों अपनी भक्ति-प्रपत्ति के प्रभाव से अनेक कष्टों को और तकलीफों को धैर्य के साथ सामना करके धन्य जीव बने हैं।

14. वेंगमांबा अपने 'श्री वेंकटाचल माहात्म्यमु' पद्य काव्य में प्राचीन कवियों की प्रशंसा करते समय ''आदि कवीश्वरुडैन वाल्मीकी कि'' (आदि कविश्वर वाल्मीकी कवि को) नामक सीस पद्य में ''वरलब्धमन्नमाचार्यनकु'' (वरदान प्राप्त अन्नमाचार्य को) कहते हुए अन्नमाचार्य की विशेष रूप से प्रशंसा की है। वेंगमांबा को छोड़कर और किसी ने अन्नमाचार्य को प्राचीन महा कवि के रूप में प्रस्तुत नहीं किया है। मतलब आंध्र वाङ्मय में अन्नमय्या को प्राचीन महाकवि के रूप में पहचाननेवाली प्रथम एवं अकेली महाकवयित्री वेंगमांबा ही हैं।

15. तिरुमल क्षेत्र के श्री वेंकटेश्वर स्वामी की नित्य-सेवाओं में सबसे अंतिम सेवा ''एकांत सेवा'' है। इस सेवा के समय अन्नमाचार्य ने स्वामी को लोरी गीत के कैंकर्य को आरंभ किया था। अन्नमय्या के तीन सौ साल बाद तिरुमल पधारनेवाली वेंगमांबा ने उसी एकांत सेवा के समय में ''मुत्याल हारती'' नामक कपूर हारती कैंकर्य को आरंभ किया था।

तिरुमल क्षेत्र के मंदिर में प्रति दिन सबसे अंत में एक ही समय में संपन्न होनवाले इन दोनों कैंकर्यों को देखते हुए ही ''ताल्लपाक

वारि लालि पाटा, तरिगोंड वारि हारती पाट'' (अन्नमाचार्य जी का लोरी गीत और तरिगोंड माई जी का हारती गीत) नामक कहावत चल पड़ी है। वह अत्यंत प्रचलित भी हुई है।

16. अन्नमय्या ने आल्वार भक्तों की तरह मधुर भक्ति की नायिका भावना से स्वामी की आराधना करके अपने जीवन को धन्य बनाया है। वेंगमांबा ने सहज ही स्वयं महिला होने के कारण उदात्त नायिका की भावना से स्वामी को ही अपना नाथ समझ कर उनकी सेवा करके अपने जीवन को धन्य बनाया है। पति के नाम और इष्टदेव के नाम एक ही होना इस पवित्र प्रणय भावना के लिए अत्यंत अनुकूल बन पड़ा है।

17. ये दोनों एक ही नरसिंह मंत्र का जप करके मंत्र सिद्धी और भागवत साक्षात्कार को प्राप्त करनेवाले महानुभाव हैं। इनके द्वारा जप किया हुआ नारसिंह मंत्र निम्नांकित है -

उग्रम् वीरम् महाविष्णुम् ज्वलंतम् सर्वतोमुखम्।
नृसिंहम् भीषणम् भद्रम् मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्।।

बत्तीस अक्षरों से परिपूर्ण उपर्युक्त मंत्र के जप करने के प्रभाव से ही अन्नमाचार्य ने बत्तीस हजार संकीर्तनों को रचा है। उसी प्रकार मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा ने 18 अलग-अलग ग्रंथों को तथा असंख्य कीर्तन-श्लोकों को, पद्यों को, गीतों को आशु के रूप में रचकर प्रशंसाएँ प्राप्त की हैं।

18. श्री वेंकटेश्वर ने अपने वर से पैदा हुए इन दोनों भागवतोत्तमों को छोटी उम्र में ही अपने पास बुला लिया। तदुपरांत अपनी सन्निधि

सेवा का अवसर देकर सही समय पर दोनों को साइज्य प्रदान किया।

मीराबाई और तरिगोंड वेंगमांबा

भक्तों के जीवन में जिस रूप में साम्य दिखाई देते हैं वैसे ही भक्तिनों के जीवन में भी साम्य दिखाई पड़ना सहज गुण है। श्रीकृष्ण की भक्तिन मीराबाई और तरिगोंड वेंगमांबा दोनों आध्यात्मिक साहिती मूर्तियों के बीच में भी अनेक प्रकार के साम्य गुण प्राप्त होते हैं। उनकी समीक्षा निम्नांकित है।

1. मीराबाई में श्री कृष्ण के प्रति भक्ति पांच साल की उम्र से ही विकसित हुई है। वेंगमांबा में भी कम उम्र में ही बालक श्री कृष्ण के प्रति भक्ति भावना जागी है।

2. इन दोनों की भक्ति तीव्रता और भक्ति की चेष्टाओं को तत्कालीन समाज के अधिकांश लोगों ने पागलपन समझा है।

3. गिरिधर गोपाल से अपना विवाह हुआ है, भोर सुबह उस भगवान से अपना विवाह हुआ है, ऐसा सपना आया है, इसलिए किसी मनुष्य के साथ अपना विवाह करने की आवश्यकता नहीं है, ऐसा मीराबाई ने बार-बार अपनी माँ से विनतियाँ की हैं। वेंगमांबा ने भी वेंकट रमण ही अपना पति मान कर, अपने को किसी पुरुष के साथ विवाह मत करो, ऐसा अपने माता-पिता से बार-बार प्रार्थना की है।

4. बुजुर्गों के द्वारा दोनों का विवाह बलपूर्वक रचा गया है। पति के मरणोपरांत दोनों के जीवन में विषाद की जगह वैराग्य भावना जागी है।

5. राजपूत स्त्री होने के कारण मीराबाई पति की तरफ वालों के द्वारा कठिन परीक्षाओं का शिकार हुई। फिर भी गिरिधर गोपाल की कृपा विशेष से उन यातनाओं को झेलकर अपने को संभाल लिया। वेंगमांबा ने भी पूर्वाचार परायण तरिगोंड के ग्रामीणों से अनेक प्रकार के कष्टों को झेला। अपने इष्टदेव लक्ष्मी नरसिंह स्वामी की दया से उन सारे कष्टों का सामना करते हुए धैर्य के साथ अपने को संभाला है।

6. इन दोनों कवयित्रियों ने कीर्ति के लिए या लौकिक सुखों के लिए रचनाएँ नहीं लिखी हैं। बल्कि मधुर भक्ति मार्ग के द्वारा इष्ट देव के अनुग्रह को प्राप्त करके, तद्वारा मुक्ति को प्राप्त करने की प्रधान इच्छा से दोनों ने रचनाएँ की हैं।

7. दोनों ने संदर्भ के अनुसार अपनी-अपनी कृतियों में विनयशीलता को दिखाया है।

8. दोनों ने परिपक्व भक्ति भावना से अपने इष्टदेव को अपने ही स्थान पर आने के लिए विवश किया।

9. भक्त-नारी मीरा बाई 'मोक्षपुरी' समझे जानेवाले द्वारका को जाकर, वहाँ के श्री कृष्ण मंदिर में अर्चा मूर्ति में विलय हो गयी। उसी प्रकार वेंगमांबा कलियुग देव 'कलियुग वैकुंठ' में रहनेवाले श्रीनिवास में लीन हो गयी। इन सारे तुलनात्मक साम्य गुणों के होते शोधकर्ताओं के द्वारा वेंगमांबा आंध्र की मीरा कहलायी।

वेंगमांबा और मलयाल स्वामी

श्री मलयाल स्वामी जी के सन्यास आश्रम का नाम 'असंगानंद यतींद्र' है। वे मलयाल देश से आने के कारण सभी उन्हें मलयाल

स्वामी के नाम से पुकारते थे। धीरे-धीरे वही नाम उनके लिए स्थायी हो गया।

स्वामी जी सन् 1936 में तिरुमल क्षेत्र में आये थे। तब तक वेंगमांबा जी परमपद प्राप्त करके लगभग सौ साल बीत गए थे। उन दिनों में वेंगमांबा के द्वारा संस्थापित मठ में और बृंदावन बगीचे में उन के शिष्यों की परंपरा ही रहा करती थी। वे तरिगोंड वेंगमांबा के जीवन संबंधी विशेषताओं को और उनके आध्यात्मिक उपदेशों के बारे में साथ ही उनकी महिमाओं के बारे में बहुत ही सुंदर ढंग से लोगों में प्रचार करते थे।

इसके अतिरिक्त बचपन में वेंगमांबा के दर्शन करनेवाले तथा अपने बुजुर्गों के द्वारा वेंगमांबा के बारे में सुने हुए लोग उस समय के तिरुमल में रहा करते थे। आध्यात्मिक प्रतिभावान श्री मलयाल स्वामी जी ने उन तिरुमल के लोगों से परमयोगिनी वेंगमांबा के बारे में बहुत विशद रूप से जानकारी प्राप्त की।

वेंगमांबा के द्वारा तप किया हुआ प्रदेश तुंबुर घाटी की गुफा में ही कुछ समय के लिए मलयाल स्वामी जी ने भी तप किया है। उस संदर्भ में अपने को प्राप्त दिव्यानुभूति के बारे में उन्होंने इस रूप में बताया है -

''उपर्युक्त बताये सारे तीर्थों में तुंबुर तीर्थ, श्री तरिगोंड वेंगमांबा का निवास स्थल गुफा अत्यंत श्रेष्ठ है। श्री तरिगोंड वेंगमांबा ने वहाँ पर रहते हुए देव साक्षात्कार सिद्धी को प्राप्त किया है। मेरे वहाँ पर ब्रह्मनिष्ठ कार्यक्रम करते समय ही आज जो देव का अनुग्रह प्राप्त करने का रूप दिखाई पड़ रहा है, प्राप्त हुआ है। मन की उपरति,

तुरीय दशा में निश्चलता, साधना से प्राप्त होनेवाला ज्ञान भी वहीं पर प्राप्त हुआ है।'' (बालयोगिनी, पृष्ठः 376, 377)

कहा जाता है कि स्वामी जी तुंबुर घाटी में तपस्साधना करते समय एक दिन अनेक बार वेंगमाबा के जीवन चरित को आत्मीयता से पढ़ते हुए उन्हीं का स्मरण कर रहे थे। तब गंगा नदी के रूप में तेजो रूप धारण करके सफेद घूंघट पहन कर वेंगमांबा ने उन्हें दर्शन दिए थे।

कहा जाता है कि उस रूप में दर्शन देकर 'हे वत्स! तुम्हारे उदात्त संकल्प ने मुझे बहुत संतोष दिया' उन्होंने कहा है। उस रूप में दर्शन देनेवाली को मातृश्री तरिगोंड वेंगमाबा के रूप में पहचान करनेवाले स्वामी जी ने उन्हें भक्ति-प्रपत्ति के साथ साष्टांग नमस्कार किया। कहा जाता है कि तब उन्होंने (वेंगमांबा ने) हार्दिक रूप से स्वामी को आशीर्वाद दिए। (मलयाल स्वामी जी को वेंगमांबा के दर्शन होने का विषय नारु नागनार्य कवि के द्वारा रचित 'श्री मलयाल स्वामी जी का चरित' नामक पद्य काव्य के 116 पृष्ठ में उल्लिखित है।)

स्वामी जी के पहले और उनके बाद भी महात्मान तरिगोंड वेंगमांबा की भक्ति-प्रपत्ति के साथ ध्यान करनेवाले आस्तिक महाशय और महिला मणियों को वेंगमांबा तेजो रूप में साक्षात्कार देकर आशीर्वाद देने के प्रसंग और अनुभव तिरुमल क्षेत्र के निवासियों में आज भी बड़ी संख्या में प्राप्त होते हैं।

श्री स्वामी जी के द्वारा 1919 में रचित ''शुष्क वेदांत तमो भास्कर'' नामक ग्रंथ में महिलाओं की ब्रह्म विद्या-पात्रता का निरूपण करते हुए देवहूती, चूडाल, मदलस आदि साध्विमणियों का उल्लेख

करते हुए उनके साथ उन्होंने तरिगोंड वेंगमांबा का उल्लेख भी किया है। बल्कि उन तक जाने की जगह हाल ही में हुई महिला मणी के रूप में उन्होंने वेंगमांबा का उल्लेख किया है। उन्होंने वेंगमांबा को एक अत्यंत महिमावान महायोगिनी के रूप में घोषित किया है। (पृष्ठ 18)

श्री स्वामी जी ने एक और जगह तरिगोंड वेंगमांबा को जीवन्मुक्ति प्राप्त करनेवाली तपस्विनी के रूप में बताया है। (बालयोगिनी-पृ.326)

वेंगमांबा की समाधि (बृंदावन) के पास वैराग्य भाव रखनेवाली कुछ महिलामणि उन दिनों में ध्यान आदि साधनाएँ करती थीं, साथ ही वे श्री मलयाल स्वामी जी के प्रति बहुत भक्ति-श्रद्धा रखती थी, ऐसा 'बाल योगिनी' नामक स्वामीजी के ग्रंथ को पढ़ने से मालूम हो जाता है।

उसी प्रकार श्री स्वामी जी अपनी रचनाओं में तथा प्रवचनों में स्त्रियों के बारे में, उनकी ब्रह्मविद्या पात्रता के बारे में, आध्यात्मिक विद्या विदूषि मणियों की चर्चा करते समय में सभी संदर्भों में मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा के नाम को अक्सर उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते थे।

एक शब्द में अगर कहना है तो पवित्र तिरुमल क्षेत्र ने वेंगमांबा को तथा उनके तप को सफल बनाने के लिए सहयोग दिया है। फिर उनके तप से उस क्षेत्र का प्रभाव और बढ़ गया। ताल्लपाक अन्नमाचार्य, हाथीराम बाबाजी, तरिगोंड वेंगमांबा, महर्षि सद्गुरु मलयाल स्वामी जी - ये सभी आध्यात्मिक महानुभाव अपने-अपने समय में समुन्नत श्रेणी

में भासित हुए तथा आज भी भासित होनेवाले महानुभाव और महात्मावान हैं!!

1. मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा की रचनाएँ

(अ) तरिगोंड में रहते समय लिखी गयी

1. तरिगोंड नृसिंह शतक (पद्य शतक)
2. नारसिंह विलास कथा (यक्षगान)
3. शिव नाटक (यक्षगान)
4. राजयोगामृत सार (द्वपिद काव्य)
5. बाल कृष्ण नाटक (यक्षगान)

(आ) तिरुमल में रहते समय लिखी गयी

6. विष्णु पारिजात (यक्षगान)
7. रमा परिणय (यक्षगान)
8. चेंचु नाटक (यक्षगान)
9. श्री वेंकटेश्वर कृष्ण मंजरी (मंजरी द्विपद में रचित सुंदर स्तुति काव्य)
10. श्री रुक्मिणी नाटक (यक्षगान)
11. गोपिका नाटक (द्विपद काव्य)
12. श्री भागवत (यक्षगान) (गोल्ल कलाप)
13. श्री वेंकटाचल महात्म्यमु (6 आश्वासों का पद्य काव्य)
14. अष्टांग योग सार (पद्य कृति)
15. जलक्रीड़ा विलास (यक्षगान)

16. मुक्तिकांता विलास (यक्षगान)
17. तत्वकीर्तन[1] (आध्यात्मिक गीत)
18. वासिष्ठ रामायण (द्विपद काव्य)

2. नवरत्न कीर्तन

1. गण नायक स्तुति

(जलक्रीडा विलास)

मूल कीर्तन
गण नायका! शरणु गणनायका! शरणु
गण नायका! शरणु गणनायका! ॥ टेक ॥

श्री शिववरपुत्र! चिरतर घन चित् प्र
काश! मम्मेलु! श्री गणनायका! ॥ गण ॥ 1

भवरोग संहार! भक्त चित्त विहार!
कविजन मंदार! गणनायका! ॥ गण ॥ 2

मुनिजन पालन! मूषक वाहन!
घन सुगुण संतान! गणनायका! ॥ गण ॥ 3

नीरधि गंभीर! निगम गोचर! विश्व
कारण विग्रह! गणनायका! ॥ गण ॥ 4

([1]इस महाकवयित्री ने अक्षरों के रूप में सरस्वती देवी के साक्षात्कार प्राप्त करने से लेकर तरिगोंड में, तिरुमल में रहते समय भक्ति, वेदांतभाव भरित कीर्तन, श्लोक, पद्य और गीतों को बड़ी मात्रा में रचा है। अपने जीवन के अनेकानेक संदर्भों एवं प्रसंगों में भी आशु के रूप में कीर्तनों को रचा है। हजारों संख्या में रचित उन रसरम्य आशु रचनाओं में आज कुछ ही उपलब्ध हैं।)

अलरार निनु नम्मि नटुवंटि मा पाल
कलिगियुंडुमु नीवु गणनायका! || गण || 5

तापत्रयंबुनु तोलगिंचि, ममु ब्रोचि
कापाडवय्या! श्री गणनायका! || गण || 6

तलगक विघ्न कारुल द्रुंचि, ब्रह्म स
त्कललो नन्नुंचु श्री गणनायका! || गण || 7

आरूढि तरिगोंड हरिकि सोदरियैन
गौरी कुमार! श्री गणनायका! || गण || 8

अनुवाद

हे गणनायक! शरण गणनायक! तुझे शरण
गण नायक! शरण गण नायक! || टेक ||

हे श्री शिव पुत्र! चिरतर घन चित
प्रकाश हमारी रक्षा करो! श्री गण नायक! || गण || 1

भवरोग के संहारक! भक्त चित्त विहारी!
कविजन मंदार! हे गण नायक! || गण || 2

हे मुनिजन पालक! मूषिक वाहन!
घन सुगुण संतान! गण नायक! || गण || 3

नीरधि गंभीर! निगम गोचर! विश्व
कारण विग्रह! गण नायक! || गण || 4

तुझ पर ही विश्वास किया! ऐसे हम पर
कृपा करो! तुम गण नायक! || गण || 5

हमारी चिंता को दूर करो! हमारी रक्षा
करो! हे श्री गण नायक! ।। गण ।। 6

किसी भी विघ्न को दूर करके, ब्रह्म के पास
मुझे पहुँचाओ! हे श्री गण नायक! ।। गण ।। 7

इस विश्वास से तरिगोंड हरि की सहोदरी
हे गौरी पुत्र! श्री गण नायक!! ।। गण ।। 8

2. इष्ट देवता स्तुति

(जलक्रीड़ा विलास)

नंद नंदन! ते नमो नमो
सा, नंद हृदय! ते नमो नमो! ।। पल्लवि ।।
नंद नंदन! ते नमो नमो ।। उप पल्लवि ।।

नारायण! पूर्ण सुधाकर वद
ना! माधव! ते नमो नमो
नारद सनक सनंदन नुत पद
सलिन युगल ते नमो नमो ।। नंद ।। 1

समर विभीषण! सज्ञन पोषण!
विमल चरित! ते नमो नमो
कमनीयांग! विकार विरहित! वि
नम दुद्धर! ते नमो नमो ।। नंद ।। 2

वर तरिगोंड निवास! परात्पर!
नर मृगवर! ते नमो नमो
गुरुतर पन्नग गिरि नायक! बहु
नर पूजित! ते नमो नमो ।। नंद ।। 3

अनुवाद

हे नंद नंदन! तुझे नमन नमन
हे सानंद हृदय! तुझे नमन नमन ।। टेक ।।
नंद नंदन! तुझे नमन नमन ।। उप टेक ।।

हे नारायण! हे पूर्ण सुधाकर वंदना!
हे माधव! तुझे नमन नमन
हे नारद सनक सनंदन से कीर्तित
कमलनयन युगल तुझे नमन नमन ।। टेक ।। 1

समर में विभीषण! हे पोषक!
हे विमल चरित! तुझे नमन नमन
हे कमनीयांग! विकार रहित!
सुंदर रूपा! तुझे नमन नमन ।। टेक ।। 2

हे तरिगोंड के निवासी! हे परात्पर!
नर मृगवर! तुझे नमन नमन
गुरुतर शेषागिरि नायक! बहु
जनों से पूजित! तुझे नमन नमन ।। टेक ।। 3

3. इष्ट देवता स्तुति

(शिव नाटक)

जय चिन्मयाकार! जय देव परिवार!
जय फल्गुणोद्धार! जय दुरित दूरा!
जय कलुष संहार! जय भावज विदार!
जय जाह्नवी दार! जय सुगुण सारा ।। जय जया ।। 1

जय दीन मंदार!! जय सिंधु गंभीर!
जय मेरु समधीर! जय भुजग हारा!
जय रत्न केयूर! जय सत्मृपा पूरा!
जय निगम संचार! जगदेक वीरा! ॥ जय जया ॥ 2

जय सत्य चारित्र! जय सन्मुनि स्तोत्र!
जय मुरांतक मित्र! जय दिव्य गात्रा!
जय संतत पवित्र! जय शुक्र नुति पात्र!
जय निटल तटनेत्र! जय पंचवक्रा! ॥ जय जया ॥ 3

अनुवाद

हे चिन्मय आकार! जय देव परिवार!
हे फाल्गुण के उद्धारक! जय दुरित दूरा!
जय कलुष संहारक! जय भावज विदार!
जय जाह्नवी विजयी! जय सुगुण सारा! ॥ जय जया ॥ 1

जय दीनों के रक्षक! जय सिंधु गंभीर!
जय मेरु समधीर! जय भुजग हारा!
जय रत्न केयूर! जय सत्कृपा पूरा!
हे निगम संचार! जगदेक वीर! ॥ जय जया ॥ 2

जय सत्य चरित! जय मुनियों से वंदित!
जय मुरांतक मित्र! जय दिव्य गात्रा!
जय संतत पवित्र! जय शुक्र नुति पात्रा!
जय विटल तटनेत्र! जय पंच वक्रा! ॥ जय जया ॥ 3

4. राम लक्ष्मण के दर्शन

(वेंगमांबा की तुंबुर घाटी से तिरुमल लौटते समय भक्ति रस के परवश में आशु के रूप में गाया गया गीत)

करुणामूर्तुलु रामलक्ष्मणुलु - कापाडिरि नन्नू ।। पल्लवि ।।
गुरुतर तंबुरु कोननुंडि ने
मरलि वच्चुनेड मार्गमुलो नति ।। करुणामूर्तुलु ।।
।। उप पल्लवि ।।

सुरचिर कनकांबरमुलु, दिव्या
भरणमु लोप्पगनू,
शर, चापंबुलु सवरिंपुचु ना
किरुगडलनु, मुंदर नडचुचु नति ।। करुणा ।। 1

कन्नुलल्लोनु प्रसन्न भावमुनु
मिन्नग जूपुचुनू,
क्रन्नन चोर, मृगमुलकु मदिलो
पन्नुग निंचुक भयपड निय्यक ।। करुणा ।। 2

हाटक रत्न किरीटमु लमरग
नीटु चेलंगगनू,
तेटगु श्यामल देहंबुलतो
नाटिन सत्कृप नायेड नुंचुचु ।। करुणा ।। 3

धरपै नार्तत्राण परायण
बिरुदमु मरुवकनू,
वेरवकुमनि तोंदरपडनिय्यक
अरिमुरि नाकु सहायंबगुचुनु ।। करुणा ।। 4

तरिगोंड नृकेसरियगु वेंकट
गिरि नायकु कृप परगगनू,
शरणागत संरक्षण,
मरयग तम पनि यनिन विधंबुन || करुणा || 5

अनुवाद

करुणामूर्ति राम लक्ष्मण ने बचाया मुझे || टेक ||
गुरुतर तुंबुर घाटी से मेरे
लौटनेवाले मार्ग में घने जंगल में || करुणामूर्ति ||
|| उप टेक ||

सुरचिर सोने के वस्त्र, दिव्य
आभरण से भासित,
शर, छाप संवारते मेरे
दोनों ओर साथ चलते ठीक || करुणा || 1

नेत्रों में प्रसन्न भाव
अधिक बरसाते,
मुझे चोर, मृगों से मन में
भय न होने देते || करुणा || 2

मूल्यवान रत्न किरीट से शोभित
सुंदर लगते,
स्वच्छ श्यामल देहों से
मेरे प्रति सत्कृपा दिखाते || करुणा || 3

धरती पर आर्त त्राण पारायण
अपनी उपाधि को न भूल कर
डरो मत कहते जल्दी मत करो
सब प्रकार की सहायता मुझे करते || करुणा ||4

तरिगोंड नृकेसरी बन कर वेंकट
गिरि नायक की कृपा दिखाते,
शरणागत का संरक्षण करते,
यह हमारा काम है कहनेवाले विधान में ।। करुणा ।।5

5. प्रार्थना

(वेंगमांबा के तुंबुर घाटी जाते समय अनुमति मांगते हुए आशु के रूप में श्रीनिवास की प्रार्थना करनेवाला गीत)

श्रीनिवास स्वामी! सेलवियवय्या! ।। पल्लवि ।।
नाना प्रकारमुल ननु गाववय्या! ।। उप पल्लवि ।।

तेरगोप्प ने स्वतंत्रिंचिनाननि मदिनि
परमात्मा! नीवु कोपमु नुंचवलदू,
सुर विनुतमैन तुंबुरु कोन वीक्षिंचि
मरल वच्चेद ननेडि मति नाकु गलदू ।। श्रीनिवास ।। 1

अलघु भागवतमु समग्रंबुगा जदुव
वले गनुक, शीघ्रमे वत्तु निच्चटिकी,
नेलवुगा ना तोडु नीडवै ना वेंट
वलनुगा नीवु रा वलयु नच्चटिकी ।। श्रीनिवास ।। 2

नीवु संकल्पिंचि निलुपुचुंडिन चोट
ने वसिंचुट नाकु निष्करुष गनुका,
देव! ना संकल्प मे विधंबुन सागु?
गोविंद! कृष्ण! तरिगोंड नरसिंहा! ।। श्रीनिवास ।। 3

अनुवाद

हे श्रीनिवास स्वामी! मुझे आज्ञा दो! ॥ टेक ॥
नाना प्रकार से मेरी रक्षा करो! ॥ श्रीनिवास ॥
॥ उप टेक ॥

बहुत मैं स्वतंत्र हो गयी मन में
हे परमात्मा!, मुझ पर गुस्सा मत करो
सुर वंदित तुंबुरु घाटी देख कर
फिर लौटने का मन है मुझे ॥ श्रीनिवास ॥ 1

पवित्र भागवत समग्र पढ़ने
के लिए बहुत शीघ्र ही लौटूँगी यहाँ
तब तक मेरी छाया बनकर मेरे साथ
तुमको पड़ेगा आना वहाँ ॥ श्रीनिवास ॥ 2

तुम्हारे संकल्प से रहने के लिए
जो कहा वह मुझे है पसंद
हे देव! तो मेरा संकल्प कैसे चलेगा?
हे गोविंद! हे कृष्ण! हे तरिगोंड नरसिंहा!॥ श्रीनिवास ॥ 3

6. तत्व कीर्तन

शिवुडंटे नेमि? केशवुडंटे नेमि? ॥ पल्लवि ॥
शिवकेशवुल चित्तस्थिति भेदमेमि? ॥ उप पल्लवि ॥

रतिराजु भ्रमलचे रट्टय्ये देमि?
मतिमंतुडैते ई मतभेद मेमि? ॥ शिवुडंटे ॥ 1

मंचुवंटिदि देहमनि येंचलेरु,
मिंचुबोणुल गूडि विर्रवीगेरु ॥ शिवुडंटे ॥ 2

मंचिदि,कानिदि मदि नेंचलेरु,
पंचेंद्रियंबुल बडि पोरलेरु ॥ शिवुडंटे ॥ 3

आ महादेवुडे अच्युतडाये,
श्री महाविष्णुवे शिवरूपमाये ॥ शिवुडंटे ॥ 4

ई महा तात्पर्यमर्थमिदि नित्यमाये,
सोमुडे नरसिंहा नामुडतडाये ॥ शिवुडंटे ॥ 5

तमकमु पोदाये ताल्मि लेदाये,
तम गति गानक तह तह लाये ॥ शिवुडंटे ॥ 6

स्वामी श्री तरिगोंड नरहरि याये,
सामाद्रि वासुडे शिव शंभुडाये ॥ शिवुडंटे ॥ 7

अनुवाद

शिव कहने से मतलब? केशव कहने से मतलब?
॥ टेक ॥
शिव केशवों की चित्तस्थिति में भेद क्या? ॥ उप टेक ॥

रति राज के भ्रम से क्या मिलेगा?
बुद्धिमान होने से क्या होगा यह भेद? ॥ शिव कहने ॥ 1

समझते नहीं बर्फ जैसी यह देह
गर्व करते उचल कूद करते ॥ शिव कहने ॥ 2

अच्छा और बुरा मन में नहीं समझते
पंचेंद्रियों के मोह में गिर कर छोड़ते संघर्ष को
॥ शिव कहने ॥ 3

वह महा देव ही बने अच्युत,
श्री महाविष्णु ही बने शिव रूप ।। शिव कहने ।। 4

यह महा तात्पर्य हो गया नित्य
सोम ही हो गया नारसिंह ।। शिव कहने ।। 5

प्यास नहीं बुझी शांति नहीं रही,
अपनी गति न जाने उचलने लगे ।। शिव कहने ।। 6

स्वामी श्री तरिगोंड नरहरि बने,
शेषाद्रिवास ही शिव शंभु बने ।। शिव कहने ।। 7

7. गोपिकाओं की शरणागति

(बालकृष्ण नाटक)

शरणु शरणू शरणु शरणू
शरणु शरणू शरणु शरणू ।। पल्लवि ।।

शरणु शरणु त्रिलोक नायक!
शरणु पुरहार नायका!
शरणु मुक्तिफल प्रदायक!
शरणु भक्त सहायका! ।। शरणु ।। 1

शरणु योगि मनोब्ज बंभर!
शरणु शरणु चिदंबरा!
शरणु प्रविमल कांचनांबर!
शरणु मायाडंबरा! ।। शरणु ।। 2

शरणु श्री तरिगोंड मंदिर!
शरणु वत्स धृतेंदिरा!
शरणु मोहन! दिव्य सुंदरा!
शरणु दरनिभ कंधरा! ।। शरणु ।। 3

अनुवाद

शरण शरण शरण शरण
शरण शरण शरण शरण || टेक ||

शरण शरण हे त्रिलोक नायक!
शरण हे पुरहर नायका!
शरण हे मुक्ति फल प्रदायक!
शरण हे भक्त सहायक! || शरण || 1

शरण हे योगी मनोब्ज बंभर!
शरण शरण हे चिदंबरा!
शरण हे प्रविमल कांचनांबरा!
शरण हे मायाडंबरा! || शरण || 2

शरण हे तरिगोंड मंदिर वासा!
शरण हे वत्स धृतेंदिरा!
शरण हे मोहन दिव्य सुंदर!
शरण हे धरणी के रक्षक! || शरण || 3

8. लोरी गीत

(जलक्रीड़ा विलास)

लालि मुद्दुल बाला! - लालि गोपाला!
लालि कांचन चेल! - ललित गुणजाला!
|| लाली || 1

प्रविमलाचार या - दव कुलोद्धारा!
कविबृंद मंदार! कलिकलुष दूरा! || लाली || 2

नंद नंदना! - सदा - नंद! गोविंदा!
सौंदर्य वदनार! - विंद मुकुंदा! ॥ लाली ॥ 3

वर चिन्मयाकार! वनधि गंभीरा!
निरुपम गुण हार! निगम संचारा! ॥ लाली ॥ 4

शैलज स्तुत नाम! - संपूर्ण कामा!
नीलमेघ श्याम! - निर्जर ललामा ॥ लाली ॥ 5

तरिगोंड पुरवास! - तारक विलासा
चिर रम्य दरहास! श्री श्रीनिवासा! ॥ लाली ॥ 6

अनुवाद

लाली हे मेरा लाडला! - लाली हे गोपाल!
लाली हे कांचन चेल! - लाली हे ललित गुणज
॥ लाली ॥ 1

हे प्रविमलाचार! - हे यादव कुलोद्धारा!
कवि बृंद मंदार! - हे कलि कलुष निवारा! ॥ लाली ॥ 2

हे नंद नंदन! - सदानंद हे गोविंदा
सौंदर्य! हे वदनारविंद! - हे मुकुंदा! ॥ लाली ॥ 3

हे वर चिन्मयाकार! - हे वनधि गंभीर!
हे निरुपम गुण हारा! - हे निगम संचारा! ॥ लाली ॥ 4

हे शैलजा स्तुत नाम! - हे संपूर्ण कामा!
नील मेघ श्यामा! - निर्जर ललामा! ॥ लाली ॥ 5

हे तरिगोंड पुरवासा! - तारक विलासा!
चिर रम्य दरहासा! - हे श्री श्रीनिवासा! ॥ लाली ॥ 6

9. मुत्याल हारती गीत

(तिरुणल श्री वेंकटेश्वर स्वामी के आनंद निलय मंदिर में नित्य रात को एकांत सेवा के समय इस भक्त कवयित्री के द्वारा श्रीनिवास को आरती देते हुए नित्य गानेवाले जय मंगल गीत)

श्री पन्नगाद्रिवर शिखराग्र वासुनकु
पापांधकार घन भास्करुनकू
आ परात्मुनकु नित्यनपाइनियैन
मा पालि अलमेलु मंगम्मकू

जय मंगलम नित्य शुभ मंगलम
जय मंगलम नित्य शुभ मंगलम ।। 1

शरणन्न दासुलकु वरमित्तुननि बिरुदु
धरिइंचियुन्न पर दैवमुनकू,
मरुव वल दी बिरुदु निरतमनि पतिनि
एमरनिय्य नलमेलु मंगम्मकू ।। जय मंगलम ।। 2

आनंद निलयमु दनिशंबु वसिइंचि
दीनुलनु रक्षिंचु देवुनकुनू,
कानुकल नोनगूर्चि घनमुगा विभुनि स
न्मानिंचु अलमेलु मंगम्माकू ।। जय मंगलम।। 3

वरमोसग ना वंतु नरुलकनि वैकुंठ
मरचेत चूपु जगदात्मुनकुनू,
सिरुलोसग तन वंतु सिद्धमनि नायकुनि
उरमु पै कोलुवुन्न शरधि सुतकू ।। जय मंगलम ।।4

तेलिवितो मुड्डपु लिट्टु तेम्मु तेम्मनि परुष
नलिकिंचि कैकोनेडि अच्युतनकू
एलमि पाकंबु जेइंचि अंदर कन्न
मलय केपु डोसगे महा मातकू || जय मंगलम || 5

मरियु चित्र विचित्र मंटपावलुलकुनु,
तिरु वीथुलकु, दिव्य तीर्थमुलकू,
परग घन गोपुर, प्राकार ततुलकुनु
चिरमुलै तगु कनक शिखरमुलकू || जय मंगलम || 6

तरचैन धर्म सत्रमुलकुनु, फल पुष्प
भरित श्रृंगार वन पंक्तुलकुनू,
मरुवोप्पु उग्राणमुलकु, बोक्कसमुलकु,
सरसंबुलगु पाकशाललकुनू || जय मंगलम || 7

अहिवैरि मुख्य वाहनमुलकु, गोड्डुगुलकु,
रहि नोप्पु मकल तोरणमुलकुनू,
बहु विध ध्वजमुलकु, पटु वाद्य विततुलकु
विहित सत्कल्याण बेदिकलकू || जय मंगलम || 8

धर चक्र मुख्य साधनमुलकू, मणिमया
भरण दिव्यांबर प्रततुलकुनू,
कर, चरण मुख्यांग गण सहितमैं, शुभा
करमैन दिव्य मंगलमूर्तिकी || जय मंगलम || 9

कलित सुज्ञानादि कल्याण गुणमुलकु,
बलमोप्पु नमित प्रभावमुनकू,
वलगोनिन सकल परिवार देवतलकुनु,
चेलगि पनु लोनरिंचु सेवकुलकू || जय मंगलम || 10

अलरगा ब्रह्मोत्सवादुलै संततमु
लनोप्पु नित्योत्सवंबुलकुनू,
पोलुपोंदु विश्वप्रभुत्व मूलंबुनकु,
नलुवोंदु वर विमानंबुलकुनू ॥ जय मंगलम ॥ 11

अरय तरिगोंड नरहरि यगुचु नंदरिकि
वरमु लोसगे श्रीनिवासुनकुनू,
मुरियुचुनु विश्वतोमुखनिट्लु भरिइंचि
सिरुल वेलयुचुनुंडु शेषाद्रिकी ॥ जय मंगलम ॥ 12

अनुवाद

श्री शेषाद्रिवर शिखराग्र वासी को
पापांधकार से दूर करने वाले घन भास्कर को
उस परमात्मा को नित्य अनुपाइनी
हमारी माई अलुमेल मंगम्मा को
जय मंगल हो नित्य शुभ मंगल हो
जय मंगल हो नित्य शुभ मंगल हो ॥ 1

शरणार्थी को सदा वर देनेवाली उपाधि
रखनेवाले वर देव को
अपनी उपाधि को स्मरण दिलानेवाली
माई अलुमेलु मंगम्मा को ॥ जय मंगल ॥ 2

आनंद निलय में सदा वास करते
दीनों की रक्षा करनेवाले देव को
मनौतियाँ रूपी भेंट अपने विभ को दिलानेवाली
सम्मान करानेवाली अलमेलु मंगम्मा को ॥ जय मंगल ॥ 3

वर देना मेरा काम समझ कर नरों को
हथेली में वैकुंठ दिखानेवाले जगदात्मज को
संपदाएँ देना मेरी बारी समझनेवाली नायक के हृदय
पर सदा स्थिर रहनेवाली सागर पुत्री को ॥ जय मंगल ॥ 4

चालाकी से मनौतियों को मांगनेवाले
कटु शब्दों से लेनेवाले अच्युत को,
मिष्ठान्न पकाकर सबसे पहले
अपने देव को खिलानेवाली महा माई को ॥ जय मंगल ॥ 5

चित्र विचित्र तिरुमल के मंटपों को
तिरुवीथियों को, दिव्य तीर्थों को
सुंदर घन गोपुरों को, प्राकार क्रम को
चिर रहनेवाले सोने के शिखरों को ॥ जय मंगल ॥ 6

बड़ी संख्यावाले धर्म सत्रों को, फल पुष्प
से भरे श्रृंगार वन पंक्तियों को,
मन को आकर्षित करनेवाले भांडार को, तिजोरियों को,
सरस रसोइयों को ॥ जय मंगल ॥ 7

श्री स्वामी के मुख्य वाहनों को, छत्रों को,
सुरम्य मकर तोरणों को,
बहु विध ध्वजों को, सुंदर वाद्य साधनों को,
मनमोहनेवाले कल्याण वेदिकाओं को ॥ जय मंगल ॥ 8

खड्ग,चक्र मुख्य साधनों को, मणिमय
आभरणों को, दिव्यांबरों को,
कर चरण मुख्यांग गण सहित, शुभाकर
दिव्य मंगल मूर्ति को ॥ जय मंगल ॥ 9

कलित सुज्ञानादि कल्याण गुणों को,
अमित बल गुण प्रभाव को,
सदा साथ रहनेवाले परिवार के देवताओं को,
प्रेम से सेवा करनेवाले स्वामी के सेवकों को
॥ जय मंगल ॥ 10

वैभवता से ब्रह्मोत्सवादी बनकर संतोष से
निरत संपन्न होनेवाले नित्योत्सवों को,
प्रकटित विश्वाधिकार के मूलाधार को
ऊँचे वर विमान-शिखरों को ॥ जय मंगल ॥ 11

कुल तरिगोंड नरहरि बनकर सबको
वर देनेवाले श्रीनिवास को,
हँसते हँसते विश्व के मुख को धरनेवाले
संपदाओं से प्रकाशित शेषाद्री को ॥ जय मंगल ॥ 12

3. पद्य सप्तक

(26.12.2010 **तारीख को हैदराबाद दूरदर्शन के सौजन्य से (सप्तगिरि) आयोजित पद्य कवि सम्मेलन में पठित पद्य सप्तक**)

मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा

सी. वेंकटरमणुनि विमल वरंबुन
अवतरिंचिन यट्टि अतिव मिन्न
तरिगोंड नरसिंहा ध्यानयोगमुन
परमयोगिनी यैन भव्य शील

अक्षर शारद अद्वितीयंबुगा
साक्षात्करिंचिन चारुमूर्ति
अष्टादश ग्रंथ सृष्टि चे श्रीपतिन्
अर्चिंचि नुतिगन्न अनघ चरित

ते.गी. वेंकटाचल महात्म्य विभवमुलनु
पद्य फणितिनि रचिइंचि भक्ति मेरयु
आंध्र भारती गैसे से अतुलितमुग
विनुत कविता शिरोमणि वेंगमांबा।

च. करुणये लेक कोंदरु विकल्प कवित्वमटंचु पल्किनन
सरगुन आ विमर्शलकु जंकक, वेंगम आत्मशक्तितो
नरहरि दिव्यमंत्रमु अनारत मायम अंडनुंडगा
वरुवडि काव्यजालमुनु भासुर रीति रचिंचे दीक्षतो।

ते.गी. यक्षगानालु, शतकमुल, आशु कृतुलु
द्विपद काव्यालु, तत्वालु, देशि रचना
लैन सुमधुर कवितल काश्रय अइ
सहज कवयित्री वेंगम महिमा गनिये।

सी. तिरुमल क्षेत्रान दिव्याश्रमम्मुनु
स्थापिंचि तपमुल शक्तिचूपे,
''अरयंग वरलब्धि मन्नमाचार्युलु''
कनि पल्कि तोलुदोल्त आदरमुन
हरिकीर्तनाचार्यु अन्नमाचार्युनि
प्राचीन कवि पंक्ति ब्रस्तुतिंचे,
''अष्ट घंटमुल'नु अरुदुगा नेलकोल्पि
साहिती फलमुल सवदरिंचे।

ते.गी. श्रीनिवासुनि सेवलो चरितरमुग
वेइचंद्रुल दर्शिंचि विपुल यसमु,
उदित साइज्यमंदे सर्वोन्नतमुग
वेंकटेश्वर वरपुत्री वेंगमांबा।

आ.वे. ''ताल्लपाक लालि, तरिगोंड हारती''
अनेडि सूक्ति पुट्टे अब्बुरमुग,
अंदु मोदटि सगमु अन्नमय्यके चेल्लु,
मरि सगम्मु वेंगमांबा सोत्तु

ते.गी. पुष्पगिरि शंकराचार्य पूज्य पाद
श्रृंगगिरि शंकराचार्य श्री चरणुल
मेप्पु लंदिन सुज्ञानि, मेटि महिला
ब्रह्मचारिनि वेंगम्म भव्य चरित

ते.गी. 'सहज पांडित्य' पोतन चतुर रीति,
अन्नमाचार्यु आध्यात्म प्राभवंबु,
भक्तनारि मीरा गान रक्ति सरणि
वेरसि विलसिल्ले तरिगोंड वेंगमांबा

श्लो।। श्रियः कांताय कल्याणनिधये निधयेऽर्थिनाम्।
श्री वेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्।।
हरि ओम तत सत

अनुवाद

वेंकटरमण के विमल वर से
जन्मी परम भक्तिन नारी
तरिगोंड नारसिंह के ध्यान योग से
परमयोगिनी भव्य शील

अक्षर शारद दिया साक्षात्कार
अद्वितीय चारुमूर्ति
अष्टादश ग्रंथ सृजन से श्रीपतिन
को अर्पण करके महा चरितवान बनी

ते.गी. वेंकटाचल के महात्म्य वैभव को
पद्य रीति में रचना करके चमकती भक्ति के
आंध्र भारती को अतुलित दिया बल
कविता शिरोमणी वेंगमांबा

च. बिना करुणा के कुछ विकल्प कवित्व दिया नाम
तुरंत उन विमर्श के लिए बिना डरे आत्म शक्ति से
वेंगमा
नरहरि के दिव्य मंत्र को अनवरत बनी छाया
तेजी से दीक्षा से काव्यों की रचना की भासुर रीति से

ते.गी. यक्षगान, शतक, आशु कृतियाँ
द्विपद काव्य, तत्वकीर्तन, देशी रचना
होते सुमधुर कविता के बनी आश्रय
सहज कवयित्री बनी वेंगमांबा महिमा से

सी. तिरुमल क्षेत्र में दिव्याश्रय की
स्थापना करके अपने तप की शक्ति दिखायी,
''कहते वरलब्धि अन्नमाचार्य की तरह''
आदर से पहले-पहल कहकर
हरिकीर्तनाचार्य अन्नमाचार्य का लेकर नाम
प्रशंसा की प्राचीन कवियों की पंक्ति में

'अष्ट लेखक' की करके स्थापना
बांटा साहिती फल सबको

ते.गी. श्रीनिवास की सेवा में अनवरत
हजारों चंद्र करके दर्शन विपुल यश से
बाद प्राप्त किया साइज्य सर्वोन्नत से
वेंकटेश्वर की वर पुत्री वेंगमांबा

आ.वे. ''ताल्लपाक लालि, तरिगोंड आरती''
बनी कहावत अचरज से
उसमें पहला आधा सिर्फ अन्नमय्या को
दूसरा आधा अधिकार वेंगमांबा को

ते.गी. पुष्पगिरि शंकराचार्य पूज्य पाद
श्रृंग गिरि शंकराचार्य श्री चरणों में
प्रशंसा पायी सुज्ञानी, अग्रणी महिला
ब्रह्मचारिनी भव्य चरित वेंगम्मा

ते.गी. 'सहज पांडित्य' पोतना की चतुर रीति,
अन्नमाचार्य के आध्यात्मिक प्राभव,
भक्तिन नारी मीरा गान रक्ति रीति
मिल कर प्रकाशित तरिगोंड वेंगमांबा

श्लो।। श्रियः कांताय कल्याणनिधये निधयेऽर्थिनाम्।
श्री वेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्।।

* * *